| वीर | सेवा | मन्दिर |
|-------------|--------|---------|
| | दिल्ली | |
| | | |
| | | |
| | * | |
| | 929 | 8 7 |
| क्रम संख्या | 35 | |
| काल न० | 2 | Trusing |
| खण्ड | | |

थेर-गाथा

राहुलसङ्किच्चानेन स्थानन्दकोसङ्कानेन जगदीसकस्सपेन च सम्पादितो

उत्तमभिक्खुना पकासितो २४८१ बुद्धबन्छरे (1937 A. C.) PRINTED BY M. PANDEY AT THE A. 1 J. PRISS, ALIAHABAD AND PUBLISHED BY UTTAM BRIKKSHU, RANGOON

प्राङ्निवेदनम्

पालिबाङमयस्य नागराक्षरे मुद्रण अत्यपेक्षितमिति नाविदितचरं भारती-येतिहामविविदिषुणाम् । सम्कृतपालिभाषयोग्तिमामीप्यादिष यत् परम्महसभ्य जिज्ञासुभ्यः सस्कृतजेभ्य पालिग्रन्थराश्यवगाहत दुष्करमिव प्रतिभाति तत् लिपि-भेदादेव । एतदर्थमयमस्माकमभिनवः प्रयासः । अत्र नृतना अपि पाठभेदाः निषेया इत्यासीदस्माकं मनीषा परं कालात्ययभीत्याऽत्र प्रथमभागे धम्मपदादन्यत्र न तत् कृतमभूत् । अधोटिप्पणीपु सिन्नवेशिताः पाठभेदाः । प्राय Pali Text Society मुद्धितेभ्यो ग्रन्थेभ्य उद्भाः ।

अर्थमाहाय्यं विना अस्मत्ममीहित हृदि निग्हितमेव स्यात् । तत्र भदन्तेन उत्तमस्यविरेण साहाय्य प्रदाय महदुपकृतमिति निवेदयित--

कात्तिकशुक्लैकादश्या | २४८० बुद्धाब्दे | राहुलः सांकृत्यायनः आनन्दः कौसल्यायनः जगदीशः काश्यपश्च

विषय-सूची

| | पृष्ठ | | 58 |
|---------------------------|-------|-----------------------------|--------------|
| १⊸एकनिपातो | २ | गोसाळो थेरो | Ę |
| | _ | सुगन्धो थेरो | Ę |
| १- वग्गी पठमो | 2 | नन्दियो थेरो | Ę |
| पुण्णो मन्तानिपुत्तो थेरो | 2 | अभयो थेरो | G |
| दब्बो थेरो | 7 | ळोमसकङ्गियो थेरो | ૭ |
| सीतवनियो थेरो | २ | जम्बुगामिकपुत्तो थेरो | ૭ |
| भल्लियो थेरो | ₹ | हारितो थेरो | ૭ |
| वीरो थेरो | 3 | जितयो थेरो | ₉ |
| पिलिन्दबच्छो थेरो | ş | ४व्यगो चतुत्थो | 5 |
| २-वग्गो दुतियो | 8 | गह्वरतीरिया भिक्ख | 5 |
| पुण्णमासी थेरो | R | सुप्पियो थेरो | 5 |
| चूलवच्छो थेरो | 8 | सोपाको थेरो | 5 |
| महागवच्छो थेरो | 8 | पोसियो थेरो | 5 |
| वनवच्छत्थेरो | 8 | सामञ्जकानि येरो | 5 |
| वनवच्छस्स थेरस्स सामणेरो | 8 | कुमीपुत्तो थेरो | 5 |
| कुण्डधानो थेरो | R | कुमापुत्तस्सथेरस्स सहायको व | वेरो ६ |
| वेलट्ठसीसो घेरो | ¥ | गवम्पति थेरो | 3 |
| दासको थेरो | ¥ | तिस्सो थेरो | 3 |
| सिगालिपता थेरो | ¥ | वड्ढमानो थेरो | £ |
| कुळो येरो | ¥ | ५-व्यागो पञ्चमी | १० |
| ३-वगो ततीयो | ξ | सिरिवड्ढो थेरो | 80 |
| अजितो येरो | Ę | खदिरवनियो थेरो | 80 |
| निग्रोधत्थेरो | Ę | सुमङ्गळो थेरो | 80 |
| वित्तको थेरो | Ę | साहु थेरो | 80 |
| | | | |

| | वृष्ठ | | पृष्ठ |
|-----------------------------|------------|---------------------|-----------------|
| रमणीयविहारी थेरो | १० | आतुमो थेरो | १६ |
| समिद्धि थेरो | १० | माणवो थेरो | १६ |
| उज्जयो थेरो | 88 | सुयामनो थेरो | १६ |
| सञ्जयो थेरो | ११ | सूसारदो थेरो | १६ |
| रामणेय्यको थेरो | . ११ | विधञ्जहो थेरो | १६ |
| ६-वरगो खट्टो | . १२ | हत्यारोहपुत्तो थेरो | १७ |
| विमलो थेरो | , १२ | मेण्डसिरो थेरो | १७ |
| गोधिको थेरो | १ २ | रिक्खतो येरो | १७ |
| मुबाहु थेरो | १ २ | उग्गो थेरो | १७ |
| वुन्तु नरा विल्लिया थेरो | ? ? ? ? | ୯–वग्गो नवमो | 8= |
| उत्तियो थेरो | १२ | समितिगुत्तो थेरो | ? = |
| अञ्जनावनियो थेरो | 83 | कस्सपो थेरो | १८ |
| कुटिविहारी थेरो | १२ | सीहो थेरो | १८ |
| कुटिविहारी थेरो | 83 | नीतो थेरो | १= |
| रमणीयकुटिको थेरो | १३ | सुनागो थेरो | १८ |
| कोसलविहारी थेरो | 83 | नागितो थेरो | १८ |
| 9-वग्गी सत्तमी | 611 | पविड्ठो थेरो | 38 |
| | 68 | अज्जुनो थेरो | 38 |
| वप्पो थेरो | 88 | देवसभो थेरी | 38 |
| विज्जिपुत्तो थेरो | 88 | सामिदत्तो थेरो | 38 |
| पक्खो थेरो | 88 | १० वंगी दसमी | 20 |
| विमलकोण्डञ्जो थेरो | 88 | परियुज्यको थेरो | २० |
| उक्खेपकतवच्छो येरो | 68 | विजयो थेरो | 20 |
| मेघियो थेरो | 88 | एरको थेरो | २० |
| एकथम्मसवनीयो थेरो | १४ | मेत्तजि थेरो | ÷0 |
| एकुद्दानियो थेरो | १५ | चक्खुपालो थेरो | २० |
| छन्नो थेरो | 8 % | खण्डसूमनो घेरो | २ ० |
| पुण्णो थेरो | १४ | तिस्सो थेरो | ٠ २ १ |
| ८—वग्गो ग्रहमो | १६ | अभयो थेरो | २१ |
| वच्छपालो थेरो | १६ | उत्तियो थेरो | २ १ |
| | • ` | | ** |

| | वृष्ट | | पृष्ठ |
|---|--|---|--|
| देवसभो थेरो | २१ | सुराधो थेरो | २७ |
| ११-वग्गो एकाइसयो | 22 | गोतमो थेरो | २७ |
| | `` २ २ | वसभो थेरो | २७ |
| वेलट्ठकानि थेरो सेतुच्छत्थेरो | २२ २२ | २-वग्गो दुतियो | ₹€ |
| सतुष्कत्यरा बन्धुरो येरो | ** ** | महाचुन्दो थेरो | ₹€ |
| बन्पुरा परा खितको थेरो | 77 77 | जीतिहासी थेरो | 7E |
| मलितवम्बो थेरो | 22 | हेरञ्जकानि थेरो | 38 |
| सुहेमन्तो थेरो | , ` ` 22 | सोभमित्तो थेरो | 30 |
| धम्मसबो थेरो | २३ | सम्बंधितो थेरो | 30 |
| धम्मसविपत्त् थेरो | २३ | महाकालो थेरो | ₹0 |
| सङ्गरिक्खतो थेरो | 23 | तिस्सो थेरो | 30 |
| उसभो थेरो | - · · | किम्बिलो थेरो | ₹0 |
| | | नन्दो थेरो | 3 8 |
| १२-वग्गो द्वादसयो | ₹8 | सिरिमा येरो | 38 |
| जेन्तो थेरो | 28 | | |
| वच्छगोत्तो थेरो | 58 | ३-वग्गो ततियो | ३२ |
| | | | |
| वनवच्छो थेरो | २४ | उत्तरो थेरो | ३२ |
| अधिमुत्तो थेरो | २४ | भद्दजि थेरो | ३ २ |
| अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो | २४ २४ | भद्दजि थेरो सोभितो थेरो | ३२ ३२ |
| अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो | 58 58 58 | भद्दजि येरो सोभितो येरो वस्लियो येरो | ३२ ३२ ३२ |
| अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो | 28 28 28 24 | भद्दजि षेरो सोभितो षेरो विल्लियो षेरो बीतसोको षेरो | 3 ? 3 ? 3 ? 3 ? |
| अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बिलो थेरो | 78 78 78 78 78 | भट्टिज खेरो सोभितो खेरो विल्लियो खेरो बीतसोको खेरो पुण्णमासो खेरो | * * * * * * * * * * * * * * * * * * * |
| अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बिलो थेरो बज्जिपुत्तो थेरो | 28 28 28 28 28 28 28 | भह्जि थेरो सोभितो थेरो विल्लयो थेरो बोतसोको थेरो पुण्णमासो थेरो नन्दको थेरो | * * * * * * * * * |
| अधिमुत्तो थेरो भहानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बिलो थेरो दिज्जपुत्तो थेरो इसिवत्तो थेरो | 78 78 78 78 78 | भइजि बेरो सोभितो बेरो विल्लियो बेरो बीतसोको बेरो पुण्णमासो बेरो नन्वको बेरो भरतो बेरो | *************************************** |
| अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बिलो थेरो बज्जिपुत्तो थेरो | 28 28 28 28 28 28 28 | भद्दिज थेरो सोभितो थेरो बल्लियो थेरो बीतसोको थेरो पुण्णमासो थेरो नन्दको थेरो भरतो थेरो भारद्वाजो थेरो | *************************************** |
| अधिमुत्तो थेरो भहानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बिलो थेरो दिज्जपुत्तो थेरो इसिवत्तो थेरो | ? 8 | भइजि बेरो सोभितो बेरो विल्लियो बेरो बीतसोको बेरो पुण्णमासो बेरो नन्वको बेरो भरतो बेरो | *************************************** |
| अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बलो थेरो बिज्जपुत्तो थेरो इसिवत्तो थेरो र—दुकनिपातो विल्ल्यो थेरो | 28 28 28 28 28 28 28 28 | भद्दिज थेरो सोभितो थेरो बल्लियो थेरो बीतसोको थेरो पुण्णमासो थेरो नन्दको थेरो भरतो थेरो भारद्वाजो थेरो | *************************************** |
| अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बलो थेरो बज्जिपुत्तो थेरो इसिवत्तो थेरो र—दुकनिपातो | | भद्दिज खेरो सोभितो खेरो बिल्लयो खेरो बोतसोको खेरो पुण्णमासो खेरो नन्दको खेरो भरतो खेरो भारद्वाजो खेरो कण्हदिसो खेरो | ********** |
| अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बलो थेरो विज्ञपुत्तो थेरो इसिवत्तो थेरो र—दुकनिपातो विल्ल्यो थेरो | . ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** | भहिज थेरो सोभितो थेरो बिल्लयो थेरो बोतसोको थेरो पुण्णमासो थेरो नन्दको थेरो भरतो थेरो भारद्वाजो थेरो कण्हदिको थेरो | ************************************** |
| अधिमुत्तो थेरो महानामो थेरो पारापरियो थेरो यसो थेरो किम्बलो थेरो बिज्जपुत्तो थेरो इसिवत्तो थेरो र—दुकनिपातो विल्ल्यो थेरो गङ्गातीरियो भिक्ख | . ** * * * * * * * * * * * * * * * * * | भइजि थेरो सोभितो थेरो बिल्लयो थेरो बीतसोको थेरो पुण्णमासो थेरो नन्दको थेरो भरतो थेरो भारद्वाजो थेरो कण्हविको थेरो ४खग्गो खतुरूथो मिगसिरो थेरो | * * * * * * * * * * * * * * * * * * * |

| | वृष्ठ | | বৃদ্ধ |
|--|-------|----------------------|-------|
| इसिदिन्नो थेरो | 35 | उत्तरपालो थेरो | AA |
| सम्बुलकच्यानो येरी | ३६ | अभिभूत त्येरो | 88 |
| खितको घेरो | 35 | गोतमो थेरो | ጸጸ |
| सोणोपोदिरियपुत्तो थेरो | 3 & | हारितो थरो | 88 |
| निसभो थेरो | 3 € | विमलो थेरो | ४४ |
| उसभो येरो | ₹७ | ४−चतुकनिपात <u>ो</u> | ४६ |
| कप्पटकुटो थेरो | ३७ | नागसमाल थेरो | ४६ |
| ५-वरगी पञ्चमी | 25 | भगु थेरो | 88 |
| | ३⊏ | सभियो येरो | ४७ |
| कुमारकस्सपो थेरो | 3= | नन्दको थेरो | 80 |
| धम्मपालो थेरो | ₹⊏ | जम्बको थेरो | 80 |
| ब्रह्मालि येरो | ₹≒ | सेनको थेरो | ४७ |
| मोघराजा थेरो | 38 | सम्भूतो थेरो | ४८ |
| बिसाखोपञ्चालिपुत्तो थेरो चुलको येरो | 35 | राहुलो थेरो | 85 |
| जूलका यरा अनुपमो थेरो | 3€ | चन्दनो थेरो | ४८ |
| जनूषना यरा वज्जितो येरो | 35 | धम्मिको थेरो | . 88 |
| सन्घतो घेरो | 3€ | सप्पको थेरो | 38 |
| | 3€ | मुदितो येरो | 38 |
| ३−तिकनिपातो | ४१ | ५ −पञ्चनिपातो | ५० |
| अङ्गणिक भारद्वाजयेरो | 88 | राजवत्तो थेरो | ५० |
| पञ्चमो थेरो | 88 | सुभूतो थेरो | χo |
| वाकुल येरो | 85 | गिरिमानन्दो थेरो | * \$ |
| धनियो थेरो | ४२ | मुमनो थेरो | * 6 |
| मातङ्गपुत्तो थेरो | 85 | वड्ढो थेरो | * 6 |
| खुज्जसोभितो थेरो | 85 | नविकस्सपो थेरो | ४२ |
| वारणो थेरो | 83 | गयाकस्सपो थेरो | ५२ |
| पस्सिकत्थेरो | 8.3 | वक्कली थेरो | ХŞ |
| यसोजत्थेरी | 83 | विजितसेनो थेरो | ¥۶ |
| साटिमत्तियत्थेरो | 8.3 | यसवत्तो येरो | χş |
| उपालि थेरो | ጸጸ | सोणो कुटिकण्णो थेरो | ÄR |

| | (: | k) | |
|---|----------|-----------------------------------|------------|
| | 78 | | प्रष्ट |
| कोसियो थेरो | XX | काकुदायी थेरी | 55 55 |
| | ષ્ષ | एकविहारियो थेरो | ĘE |
| ६-छनिपातो | • • | महाकम्पिनो थेरो | ७० |
| उरुवेळकस्सपो थेरो | XX | चूलपन्यको थेरो | ७१ |
| तेकिच्छकानि येरो महानागो थेरो | ሂሂ | कप्पो थेरो | ७१ |
| महानागा थरा कुल्लो थेरो | ४६ ४६ | उपसेनो बङ्गन्तपुत्तो थेरो | ७२ |
| मुल्ला परा मालङ्क्यपुत्तो थेरो | ४५ ४७ | गोतमो थेरो | , c |
| मालङ्क्यपुता परा स प्पदासत्थेरो | ४७ | ११-एकाटसनिपातो | - , |
| कातियानो थेरो | ४८ | ४४ ५का०्सानपाता संकिच्च थेरो | 98 |
| मिगजालो थेरो | ४८ | | હય |
| जेन्तो पुरोहितपुत्तो थेरो | 3.5 | १२−द्वादसनिपात <u>ो</u> | ७६ |
| सुमनो थेरो | ય્રદ | सीलवत्यरो | ७७ |
| न्हातकमुनि थेरो | Ęo | सुणीतो थेरो | છછ |
| ब्रह्मदत्तो थेरी | Ę٥ | १३-तेरसनिपातो | 30 |
| सिरिमण्डो थेरो | Ęo | सोणो कोळिविसो थेरो | 30 |
| सब्बकामो थेरो | ६१ | १४-चुद्दसनिपातो | 60 |
| ७-सत्तनिपातो | ६२ | रेवतो थेरो | 50 |
| सुन्दरसमुद्दो थेरो | ६२ | गोदत्तो थेरो | 58 |
| लकुण्टको थेरो | ६३ | १६-सोळसनिपातो | 62 |
| भद्दो थेरो | ६३ | | |
| सोपाको थेरो | ÉR | अञ्जाकोण्डञ्जो थेरो उदायो थेरो | 5 3 |
| सरभङ्गो थेरो | ER | | =8 |
| ८−त्र्राइनिपातो | ६५ | २० -वीसतिनिपातो | CA |
| महाकच्चायनो थेरो | Ę¥ | अधिमुतो थेरो | ≂ ξ |
| सिरिमित्तो थेरो | ६६ | पारापरियो थेरो | 55 |
| महायन्यको थेरो | ६६ | तेलकानि थेरो | ٩٤ |
| ६-नवनिपातो | ६७ | रट्ठपालो थेरो | 83 |
| भूतो थेरो | ĘIJ | मालुक्यपुत्तो थेरो | ६२ |
| • | | सेलो थेरो | ER |
| १०दसनिपातो | ६८ | अङ्गुलिमालो थेरो | € € |

(६)

| | वृष्ट | | प्रष्ठ | |
|--------------------------------|-------|-----------------|--------|--|
| अनिरुद्धो थेरो | €= | महाकस्सपो थेरो | ११० | |
| पारापरियो थेरो | 800 | | 0.00 | |
| ३०-तिंसनिपातो | १०१ | ५०-पञ्ञासनिपातो | १११ | |
| फुस्सत्येरो | १०३ | तालपुटो थेरो | 668 | |
| सारिपुत्तो घेरो | १०४ | s. | 0.011 | |
| आनन्दो थेरो | 800 | ६०-सद्विकनिपातो | ११५ | |
| ४० -चत्तालीसनिपात ो | १०= | महानिपातो | १२० | |
| | | | | |

थेर-गाथा

नमें) तन्स भगवती बरहती सम्मा सम्बद्धाःस

सीहानं व नदन्तान दाठीनं गिरिगङ्भरे । सुणाष भावितत्तान गाथा अत्तुपनायिका ॥१॥ यथा नामा यथा गोता यथा धम्म विहारिनो यथाधिमुत्ता सप्पञ्ञा विहिष्सु अनिन्दता ॥२॥ तत्थ तत्थ विपस्सिन्वा फुसित्वा अच्चुत पदं कतन्तं पच्चवेक्वन्ता इम अत्थं अभासिस् ॥३॥

एकनिपातो

वग्गी परमी

छन्ना में कुटिका सुखा निवाता, वस्स देव यथा सुखं;
चित्त में सुसमाहितं विमुत्तं, आतापी विहरामि, वस्सदेवा 'ति ॥१॥
इत्यं सुद आयस्मा सुभूति थेरो गायमभासित्या'ति ।
उपसन्तो उपरतो मन्तभाणी अनुद्धतो
धुनाति पापके धम्मे दुमयत्त व मालुतो 'ति ॥२॥
इत्यं सुदं आयस्मा महाकोद्विकथेरो गायमभासित्य ।
पञ्ज इमं पस्स तथागतानं, अग्गि यथा पज्जलितो निसीये ।
आलोकदा चक्खुददा भवन्ति ये आगतानं विनयन्ति कङ्खिन ॥३॥
इत्यं सुदं आयस्मा कङ्खारेवतो थेरो गायं अभासित्य ।
सिक्भरेव समासेय पण्डितेहत्थदिसिभिः
अत्यं महन्त गम्भीरं दुद्सं निपुणं अणुं
धीरा समधिगच्छिन्त अप्यमत्ता विचक्खणा 'ति ॥४॥

श्रायस्मा प्रण्णो मन्तानिप्रत्तो थेरो

यो दुद्दमयो दमेन दन्तो दब्बो सन्तुसितो वितिष्णकझलो विजितावि अपेतभेरवो हि दब्बो सो परिनिब्बुतो ठितत्तो 'ति ॥५॥

त्रायस्मा दब्बो थेरो

यो सीतवनं उपागा भिक्खु एको सन्तुसिनो समाहितत्तो विजितावि अपेनलोमहंसो रक्खं कायगतासति थितीमा 'ति ॥६॥

श्रायस्मा सीतवनियो थेरो

यो पानुदि मच्चुराजस्स सेनं नळसेतुं व सुदुब्बलं महोघो विजिनावि अपेतभेरवो हि दन्तो सो परिनिब्बुतो ठितत्तो 'ति ॥७॥

श्रायस्मा भक्तियो थेरो

यो दुइमयो दमेन दन्तो वीरो सन्तुसितो वितिष्णकद्भवो विजितावि अपेतलोमहंसो वीरो सो परिनिब्बतो ठितत्तो 'ति ॥८॥

वीरो थेरो

स्वागतं नापगतं न यिदं दुम्मन्तितं मम । संविभत्तेसु धम्मेसु यं सेट्ठ तदुपागमिन्ति ॥९॥

पिलिन्दवच्छो थरो

विहरि अपेक्न टर्घ वा हुर वा यो वेदग् समितो यनत्तो । सब्बमु धम्मेसु अनुपलित्तो लोकस्स जञ्जा उदयब्बयञ्चा 'ति ॥१०॥

वग्गो पठमो

उद्दानं

सुभुति कोट्टिको थेरो कट्याबेत सुख्ततो मन्तानिपुत्तो दस्बो च सीतश्रतियो च भक्षियो शिरो पिलिन्दरुखे। च पुण्यमासी तमोतृशीर ति ।

वग्गी दुतियो

पुराणमामी थेरो

पामुज्जबहुलो भिक्खु धम्मे बृद्धप्पवेदिने । अधिगच्छे पद सन्त सम्बाह्यसम मुखन्ति ॥११॥

चूलगक्चो यरो

पञ्जाबली सीलवत्पपन्नो समाहितो झानरतो सतीमा । यदित्यय भोजन भुञ्जमानो कद्मयेत काल ३घ बीतरागो 'ति ॥१२॥

महागवच्छो थरो

नीलक्भवण्णा रुचिरा सीनवारी सुचिन्धरा। गोपइन्दकसञ्छना ते सेला रमयन्ति मन्ति ॥१३॥

वनवच्छत्थरो

उपज्झायो म अवचासि इतो गच्छामि सीवव गामे मे वसति कायो अरञ्ज मे गतो मनो से मानको पि गच्छामि, नित्य सगो विजानतन्ति ॥१४॥

वनवच्छस्स थेरस्स सामगोरो

पञ्च छिन्दे पञ्च जहे पञ्च चुत्तरि भावये, पञ्चमघातिगो भिक्खु ओघतिष्णो 'नि ब्च्चती ति ॥१५॥

कुगडधानो थरो

यथापि भहो आजञ्ञो नङ्गला वत्तनी सिखी गच्छति अप्पकसिरेन, एव रित्तन्दिवा मम गच्छन्ति अप्पकसिरेन सुखे लद्घे निरामिसे 'ति ॥१६॥

बेलट्डसीसो थेरो

मिद्धी यदा होति महम्बसी च निद्दायिता सम्परिवत्तसायी महावराहो व निवापपुट्ठो पुनप्पुनं गब्भमुपेति गन्दो 'ति ॥१७॥

दासको थरो

अहू बुद्धस्स दायादो भिक्खु भेसकळावने केवलं अट्टिसञ्जाय अफरि पर्ट्टीव इमं भञ्जे 'हं कामराग मो खिप्पमेव पहीयतीति ॥१८॥

सिगालपिता थरो

उदक हि नयन्ति नेत्तिका उसुकारा नमयन्ति तेजन, दारु नमयन्ति तच्छका, अत्तान दमयन्ति सुख्यताती 'ति ॥१९॥

कुळो थरो

मरणे मे भयं नित्थ, निकन्ती नित्थ जीविते, सन्देहं निक्षिपस्सामि सम्पजानो पितस्सतो 'ति ॥२०॥

वग्गो दुतियो

उद्दानं

चुनवरक्के महावरुक्के वनवरुके च सीवकी कुण्डपानी च बेन्नाहरू हासकी च तती परं सिङ्गानिपितिकी थेगी कुन्नी च मनिती दसा पंत ॥२०॥

वग्गो ततियो

अजितो थेरो

नाह भयस्स भायामि, सत्था नो अमतस्स कोविदो ॥ यत्थ भयं नावतिद्वति तेन मग्गेन वजन्ति भिक्खवो 'ति ॥२१॥

निमोधत्थरो

नीला सुगीवा सिखिनो मोरा कारविय अभिनदन्ति, ते सीतवात कलिता सुत्त झाय निबोधेन्तीति ॥२२॥

चित्तको थरो

अह खो वेद्धगुर्म्बास्म भुत्वान मधुपायास पदिक्लण सम्मसन्तो खन्धान उदयव्बय सानु पटिगमिस्सामि विवेकमनुबृहयन्ति ॥२३॥

गोसाळो थरो

अनुवस्सिको पब्बजितो, पस्स धम्मसुधम्मतं, निस्सो विज्जा अनुप्पत्ता, कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥२४॥

सुगन्धो थरो

ओभासजातं फलग चित्तं यस्स अभिण्हसो, तादिसं भिक्खु आसज्ज कण्ह दुक्खं निगच्छसीति ॥२५॥

नन्दियो थरो

सुत्वा सुन्धासितं वाच बृद्धस्सादिच्चवन्धुनो पच्च व्याघि हि निपुणं वालग्ग उसुना यथा 'ति ॥२६॥

अभया थेरो

दब्ब कुस पोटिकलं उसीरं मुञ्ञापब्बजं उरसा पनुदहिस्सामि विवेकमनुबूहयन्ति ॥२७॥

ळोमसकङ्गियो थेरो

किच्च नो वत्यपसुतो, किच्च नो भूसनारतो, किच्च सीलमयं गन्धं त्व वासि नेतरा पजा 'ति ॥२८॥

जम्बुगामिकपुत्तो थेरो

समुन्नमयमत्तानं उसुकारो व तेजनं चित्तं उजु करित्वान अविज्जं छिन्द हारिता 'नि ॥२९॥

हारितो यरो

आबाधे में समुष्पन्ने सित में उपपज्जथ अबाधों में समुष्पन्नों कालों में न ष्पमज्जितुन्ति ॥३०॥

उत्तियो थरो

वग्गो ततियो

उद्दानं

निम्रोधो चित्तको थेरो घोसालत्थेरो सुगन्धो नन्दियो अभयो थेरो थेरो लोमसकंगियो जम्बुगामिक पुत्तो च हारितो उत्तियो इसीति।

वग्गो चत्त्यो

फुट्ठो डसेहि मकसेहि अरञ्ञास्मि ब्रहावने नागो संगामसीसे व सतो तत्राधिवासये 'ति ॥३१॥

गह्नरतीरिया भिक्खु

अजर जीरमानेन तप्पमानेन निब्धृतिं निम्मिस परमं सन्तिं योगक्खेम अनुत्तरन्ति ॥३२॥

सुप्पियो थेरो

यथापि एकपुत्तस्मि पियस्मिं कुसली सिया एवं सब्बेमु पाणेमु सब्बत्य कुसली सिया 'ति ॥३३॥

सोपाको थरो

अनासन्नवरा एता निच्चमेव विजानता गामा अरङ्कामागम्म ततो गेह उपाविसि ततो उट्टाय पक्कामि अनामन्तेत्वा पोसियो 'ति ॥३४॥

पोसियो थरो

मुख मुखन्थो लभते तदाचर, कित्तिञ्च पष्पीति, यसस्म बङ्ढति यो अन्यिमटुङगिकमञ्जम उजु भावेति मग्गं अमतस्स पत्तिया 'ति ॥३५॥

सामञ्जकानि थेरो

साधु सुत साधु चरितक साध् सदा अनिकेतविहारो अत्यपुरछन पदक्खिणकम्म एत सामञ्ज्ञामिकञ्चनस्सा 'ति ॥३६॥

कुमीपुत्तो थरो

नाना जनपदं यन्ति विचरन्ता असञ्ज्ञता समाधिञ्च विराधेन्ति, कि सु रट्टचरिया करिस्सति तस्मा विनेय्य सारम्भं झापेय्य अपूरक्कतो 'ति ॥३७॥

कुमाप्त्तस्सथरस्स सहायको थरो

यो डद्विया सरभुं अटुपेसि सो गवम्पति असितो अनेजो, त सब्बसङ्गातिगतं महामुनि देवा नमस्सन्ति भवस्सपारगुन्ति ॥३८॥

गवम्पति थरो

सत्तिया विय ओमट्ठो डय्हमाने व मन्थके कामरागपहानाय मतो भिक्ख परिवङ्गे ति' ॥३६॥

तिस्सो थरो

सत्तिया विय ओमट्ठो डय्हमाने व मत्थके भवरागपहानाय सतो भिम्बु परिब्बजे 'ति ॥४०॥

बड्डमानो थरो

वग्गो चतुत्थो

उद्दानं

गह् बरतीरियो सुष्पियो सो पाको च पीसियो च सामञ्ज्ञकानि कुमापुत्तो कुमापुत्त सहायको गबम्पति तिस्सत्येरो वड्ढमानो महायसो 'ति । विवरमनुपतन्ति विज्जुता वेभारस्स च पण्डवस्स च, नगविवरगतो च झायति पुत्तो अप्पटिमस्स तादिनो 'ति ॥४१॥

वग्गो पञ्चमो

सिरिवड्ढो थेरो

चाले उपचाले सीसूपचाले पतिस्सतिका नु खो विहरय, आगतो वो वाल विय वेधीति ॥४२॥

खदिखनियो येरो

मुमुत्तिको सुमेत्तिको साहु सुमुत्तिकोम्हि तीहि खुज्जकीह, असितामु मया नद्भगलासु मया खुद्कुद्दालासु मया । यदि पि इषमेव इधमेव अथवापि अलमेव अलमेव, झाय मुमङ्गगल झाय सुमङ्गगल, अप्पमत्तो विहर सुमङ्गगला 'ति ॥४३॥

सुमङ्गळो थरो

मतं वा अम्म रोदन्ति वो वा जीवं न दिस्सिति । जीवन्तं म अम्म दिस्सन्ती कस्मा मं अम्म रोदसीति ॥४४॥

साहु थरो

यथापि भहो आजञ्ञो बिलित्वा पतितिद्वति एवं दस्सनसम्पन्न सम्मासम्बुद्धसावकन्ति ॥४५॥

रमण्यिविहारी थरो

सद्वायाह पब्बजितो अगारस्मा अनगारिय, सित पञ्ञा च मे बुड्ढा चित्तञ्च सुसमाहितं कामं करस्सु रूपानि, नेवमं व्याधियस्ससोति ॥४६॥

समिद्धि थरो

नमो ते बुद्धवीरत्यु, विष्पमुत्तो सि सब्बधि तुय्हापदाने विहरं विहरामि अनासवो 'ति ॥४७॥

उज्जयो थरो

यथो अहं पब्बजितो, अगारस्मा अनगारियं नाभिजानामि संकप्पं अनिरियं दोससंहितन्ति ॥४८॥

सञ्जयो थरो

विहविहामिनदिते सिप्पिकाभिरुतेहि च न मे तं फन्दति चित्त, एकत्तनिरतं हि मे ॥४९॥

रामगोय्यको थेरो

धरणी च सिच्चिति वाति मालुतो विज्जुता चरित नभे उपसम्मन्ति वितक्का चित्तं सुसमाहित ममा 'ति ॥५०॥

वग्गो पञ्चमो

उद्दानं

सिरिवड्ढो रेवतो थेरो सुमझ्गलो सानुसब्हयो रमणीयविहारी च सिमद्धुज्जय-सञ्जयो रामणेय्यो च सो थेरो विमलो चरणञ्जयो 'ति ।

वग्गो ह्यो

विमली थरो

वस्सित देवो यथा सुगीत छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता, चित्त सुममाहितञ्च मय्ह, अथ चे पत्थयसि पवस्स देवा' नि ॥५१॥

गोधिको थरो

वस्सति देवो यथा सुगीत, छन्ना में कुटिका मुखा निवाना, चित्तं सुसमाहितञ्च काये अथ चे पत्थयसि पवस्म देवा 'ति ॥५२॥

सुबाहु थरो

वस्सति देवो यथा सुगीत, छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता, तस्सं विहरामि अप्पमत्तो, अथ चे पत्थयसि पवस्सदेवा 'ति ॥५३॥

विख्या थेगे

वस्सति देवो यथा सुगीत, छन्ना मे कुटिका सुखा निवाना, तस्सं विहरामि अदुनियो, अथ चे पत्थयमि पवस्म देवा 'नि ॥५४॥

उत्तियो यरो

आसन्दि कुँटिंकं क्खा ओगयह अञ्जनं वनं निस्सो विज्जा अनुष्पत्ता कत बुद्धस्म सासनन्ति ॥५५॥

अञ्जनावनिया थरो

को कुटिकाय, भिक्खु कुटिकाय वीतरागो सुसमाहितचित्तो एव जानाहि आवुसो अमोघा ते कुटिका कता 'ति ॥५६॥

कुटिविहारी थरो

अयमाहु पुराणिया कुटि, अञ्ञा पत्थयसे नवं कुटि आसं कुटिया विराजय दुक्खा भिक्खु पुन नवा कुटीति ॥५७॥

कुटिविहारी थरो

रमणीया में कुटिका सद्घा देय्या मनोरमा न में अत्यो कुमारीहि, येस अत्यो तहि गच्छथ नारियो 'ति ॥५८॥

रमणोयक्रिटको थेरो

सद्धायाह पब्बिजितो, अरङ्को मे कुटिका कता, अप्पमत्तो च आतापी सम्पजानो पतिस्सतो 'ति ॥५९॥

कोसलविहारी थेरो

ते मे ६ज्झिसु मकप्पा यदत्थो पविसि कुटि, विज्जा विमुत्ति पच्चेस्स मानानुसयमुज्जहन्ति ॥६०॥

वग्गो छट्टो

उद्दान

गोधिको च सुबाहु च बल्लियो उत्तियो इसि अञ्जनार्वानयो थेरो दुवे कुटिबिहारिनो रमणीय कुटिको च कोसल्लब्हय-सीवलीति

वग्गी सत्तमी

वप्पो थेरो

पस्सति पस्सो पस्सन्तं अपस्सन्तञ्च पस्सति; अपस्सन्तो अपस्सन्तं पस्सन्तं च न पस्सतीति ॥६१॥

वन्जिप्रत्तो थरो

एकका मयं अरञ्जे विहराम अपविद्ध व वनस्मिदाधकं; तस्स मे बहुका पिहयन्ति नेरियका विय सम्मगामिनन्ति ॥६२॥ चृता पतन्ति पतिता गिद्धा च पुनरागता कर्ते किच्चं रतं रम्मं सुखेन 'अन्वागतं सुखन्ति ॥६३॥

पक्खो थेरो

दुमव्हयाय उप्पन्नो जातो पण्डरकेतुना केतुहा केतुना येव महाकेतुं पर्धसयीति ॥६४॥

विमलकोगडञ्जो थरो

उक्लेपकतवच्छस्स संकलितं बहूहि वस्सेहि। तं भासति गहट्ठानं सुनिसिन्नो उळारपामुज्जो 'ति ॥६५॥

उक्खेपकतक्छो थेरो

अनुसासि महावीरो सब्बधम्मान पारगु; तस्साहं धम्मं सुत्वान विहासि सन्तिके रतो; तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥६६॥

मेधियो थेरो

किलेसा झापिता मय्हं भवा सब्बे समूहता विक्सीणो जातिसंसारो नित्थ दानि पुनव्भवो 'ति ॥६७॥

एकधम्मसवनीयो थेरो

अधिचेतसो अप्पमज्जतो मुनिनो मोनपयेसु सिक्खतो सोका न भवन्ति तादिनो उपसन्तस्स सदा सतीमतो 'ति ॥६८॥

एकुद्दानियो थेरो

सुत्वान धम्मं महतो महारसं सब्बञ्जातञ्जाणवरेन देसितं मग्गं पपज्जि अमतस्स पत्तिया, सो योगक्क्षेमस्स पथस्स कोविदो'ति ॥६९॥

बन्नो थेरो

सीलमेव इध अग्गं, पञ्जावा पन उत्तमो; मनुस्सेसु च देवेमु सीलपञ्जाणतो जयन्ति ॥७०॥

वग्गो सप्तमो

उद्दानं

वणो च विज्जिपुत्तो च पक्को विमलकोण्डञ्ञो उक्क्षेपकतवच्छो च मेधियो एक धिम्मको एकुद्दानिय-छन्नो च पुण्णथेरो महब्बलो 'नि.

पुरासो थेरो

वग्गी ब्रह्मो

सुसुखमनिपुणत्थदस्सिना मित कुसलेन निवानवृत्तिना ससेवितबुद्धसीलिना निब्बानं नहि तेन दुल्लभन्ति ॥७१॥

वच्छपाली थेरो

यथा कलीरो सुमु वड्ढिनग्गो दुन्निक्खमो होति पसाखजातो एव अहं भरियायाजीताय; अनुमञ्जा मं पब्बन्तितो 'म्हि दानीति ॥७२॥

श्रातुमो थरो

जिण्णञ्च दिस्वा दुनिखतञ्च ब्याधित मतञ्चदिस्वा गतमायुसंखयं । ततो अहं निक्खमितून पब्बजि पहाय कामानि मनोरमानीति ॥७३॥

माणवो थरो

कामच्छन्दो च ब्यापादो थीनमिद्धञ्च भिक्खुनो उद्बच्चं विचिकिच्छा च सब्बसो 'व न विज्जतीति ॥७४॥

सुयामनो धरो

साम् सुविहितान दस्सन, कब्स्था छिज्जिति, बुद्धि बड्ढिति, बालम्पि करोन्ति पण्डिनं, तस्मा साधु सत समागमो 'ति ॥७५॥

सुसारदो थेरो

उप्पतन्तेसु निपते, निपतन्तेसु उप्पते, वसे अवसमानेसु रममानेसु नो रमे 'ति ॥७६॥

पियञ्जहो थेरो

इदं पुरे चित्तमचारि चारिकं येनिच्छकं यत्यकामं यथामुखं तदज्जहं निग्गहिस्सामि योनिसो हत्थिप्पभिन्नं विय अब्कुसग्गहो 'ति ॥७७॥

हत्थारोहपुत्तो थरो

अनेकजातिसंसारं सन्धाविस्सं अनिब्बिसं, तस्स मे दुक्खजातस्स दुक्खक्वन्थो अपरदो 'नि ॥७८॥

मंगडिं भरो थरो

सब्बो रागो पहीनो मे, सब्बो दोमो ममूहतो, सब्बो में विगतो मोहो, मीतिभूतो 'स्मि निब्बुनो 'ति ॥७९॥

रिक्सितो थरो

यं मया पकतं कम्म अप्पं वा यदि वा बहु सब्बमेतं परिकलीणं नित्य दानि पुनब्भवो 'ति ॥८०॥

उग्गो थरो

वग्गो अहमो

उद्दानं

वच्छपालो च यो थेरो आनुमो माणवो इसि मुयामनो मुसारदो थेरो यो च पियञ्जहो आरोहपुनो मेण्डमिरो रक्षितो उग्गमब्हयो 'ति।

वग्गी दसमी

न तथामत सतरस सुधन्न य मयज्ज परिभुतं अपरिमितदस्सिना गोतमेन बुद्धेन देसितो धम्मो 'ति ॥९१॥ परिपुराणुको थेरो

यस्सासवा परिक्लीणा आहारे च अनिस्सितो सुञ्जातो अनिमित्तो च विमोक्लो यस्स गोचरो, आकासे व सकुन्तानं पदन्तस्स दुरस्नयन्ति ॥९२॥

विजयो थेरो

दुक्खा कामा एरक, न सुखा कामा एरक, यो कामे कामयति दुक्ख सो कामयति एरक, यो कामेन कामयति दुक्खं सो न कामयति एरका 'ति ॥९३॥

एरको थेरो

नमो हि तस्म भगवतो सक्यपुत्तस्स सिरीमतो तेनाय अग्गपत्तेन अग्गथम्मो सुदेसितो 'ति ॥९४॥

मत्ति थेरो

अन्धो 'ह हतनेत्तो 'स्मि, कन्तारद्धान पक्षक्रो, सयमानो पि गच्छिस्स न सहायेन पापेना 'ति ॥९५॥

चक्ख्यालो थरो

एकपुष्फं चजित्वान असीति वस्सकोटियो सम्मेमु परिचारेत्वा सेसकेनम्हि निब्बुतो 'नि ॥९६॥

खग्रडसुमनो थेरो

हित्वा सतपल कंसं सोवण्णं सतराजिकं अग्गहि मत्तिकापत्तं इदं दुतियाभिसेचनन्ति ॥९७॥

तिस्सो थरो

रूपं दिस्वा सित मुट्ठा पियनिमित्तं मनिसकरोतो, मारत्त चित्तो वेदेति तञ्च अज्झोस निट्ठति, तस्म वड्डन्ति आसवा भवमूलोपगामिनो 'ति ॥९८॥

श्रभयो थरो

सद्दं मुख्य सित मुद्दा पियनिमित्तं मनसिकरोतो, सारत्तविनो वेदेति तञ्च अज्झोम तिद्दृति, तस्स बड्ढिन्ति आसवा संसारमुपगामिनो 'ति ॥९९॥

उत्तियो थरो

सम्मप्पधानसम्पन्नो सतिषट्ठानगोवरो विमृत्तिकुसुमसङ्खन्नो परि निब्बिस्मत्यनासवो 'ति ॥१००॥

देवसभी थेरो

वरगो इसमो

उद्दानं

परिपुष्णको च विजयो एग्को मेत्तजी मुनि चक्खुपालो खण्डसुमनो तिस्मो अभयो च उत्तियो महापञ्जो थेरो देवसभो पि चा 'ति।

वग्गो एकादसयो

हित्वा गिहित्व अनवोसितत्तो मुखनझगली ओदरिको कुसीतो महावराहो व निवापपुट्ठो पुनप्पुनं गब्भमुपेति मन्दो 'ति ॥१०१॥

वेलट्डकानि येरो

मानेन वञ्चितासे संखारेसु मंकिलिस्समानासे लाभालाभेन मिषता समाधि नाधिगच्छन्तीति ॥१०२॥

सेतुच्छत्थेरो

नाहं एतेन अत्यिको सुखितो धम्मरसेन तिपतो, पीत्वान रसग्गमृतमं न च काहामि विसेन सन्धवन्ति ॥१०३॥

बन्धुरो थरो

लहुको वत में कायो फुट्ठो च पीतिसुखेन विपुलेन तूलामिव एरित मालुतेन पिलवित व मे कायो 'ति ॥१०४॥

खितको थरो

उक्किण्टितो पि न वसे रममानो पि पक्कमें न त्वेवानत्थसहितं बसे वासं विचक्खणो 'ति ॥१०५॥

मिलतवम्बो थेरो

सतलिङगस्स अत्यस्स सतलक्खणधारिनो एकङगदस्सी दुम्मेघो सतदस्सी च पण्डितो 'ति ॥१०६॥

सुहेमन्तो थेरो

पब्बजि तुलयित्वान अगारस्मा अनगारियं; तिस्सो विज्जा अनुष्यत्ता कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥१०७॥

धम्मसवो थरो

सवीसंवस्ससीतको पब्बजि अनगारियं; तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता कर्त बुद्धस्स सासनन्ति ॥१०८॥

धम्मसविष्तु थेरो

न नूनाय परमहितानुकस्पिनो रहोगतो अनुविगणेति सासनं; तथा हयं विहरति पाकतिन्द्रियो मिगी यथा नरुणजातिका व नेति ।।१०९।।

सङ्घरक्खितो थरो

नगा नगरमेसु सुमंबिरूळहा उदग्गमेघेन नबेन सित्ता विवेककामस्स अरञ्ञासञ्ज्ञानो जनेति भिय्यो उसभस्स कल्यतन्ति ॥११०॥

उसभो थरो

वरगो एकादसमो

उद्दानं

बेलट्टकानि सेतुबच्छो बन्धुरा खितको इसि मलितवम्भो सुहेमन्तो धम्मसवी धम्मसविपता सघरिखतथेरो च उसभो च महामुनि ।

वग्गो द्वादसयो

दुप्पब्बज्ज वे, दुरधिवासा गेहा, धम्मो गम्भीरो, दुरधिगमा भोगा; किच्छावृत्तिनो इतरीतरेनेव, युत्त चिन्तेत् सततमनिच्चतन्ति ॥१११॥

जेन्तो थरो

तेविज्जो 'ह महाझायी चेतो समथकोविदो, सदत्थो मे अनुप्पत्तो, कत बुद्धस्स सासनन्ति ॥११२॥

क्छगोत्तो थेरो

अच्छोदिका पुथुसिला गोनङगुलमिगायुता अम्बुसेवालसञ्छन्ना ते सेला रमयन्ति मन्ति ॥११३॥

वनवच्छो थेरो

कायदुट्ठुल्लगरुनो हिय्यमानम्हि जीविते सरीरसुखगिद्धस्स कुतो समणसाधृता 'ति ॥११४॥

अधिमुत्तो थेरो

एसावहिय्यसे पब्बतेन बहुकुटजसल्लिककेन नेसादकेन गिरिना यसस्सिना परिच्छदेना 'ति ॥११५॥

महानामो थेरो

छ फस्सायतने हित्वा गुत्तद्वारो सुसंवृतो अघमूलं वमित्वान पत्तो मे असवक्खयो ॥११६॥

पारापरियो थरो

मुविलित्तो सुवसनो सब्बाभरणभूसितो तिस्सो विज्जा अज्झगमि कत बृद्धस्स सासनन्ति ॥११७॥

यसो थेरो

अभिसत्थो व निपतित वयो, रूपमञ्ज्ञामिव तथेव सन्तं; तस्सेव सतो अविष्पवसतो अञ्ज्ञास्तेव सरामि अत्तानन्ति ॥११८॥

किम्बिलो थरो

रुक्खमूलगहनं पसिक्कय निब्बानं हदयस्मि ओसिय झाय गोतम मा च पमादो, किन्ते बिळिबिळिका करिस्सतीति ॥११९॥

वज्जिपुत्तो थेरो

पञ्चम्बन्धा परिञ्ञाता तिट्ठन्ति छिन्नमूलका, दुक्बक्षयो अनुप्पतो, पत्तो मे आसवक्षयो 'ति ॥१२०॥

इसिदत्तो थेरो

वग्गो द्वादसमो, तत्रुद्दानं भवतिः

जेन्तो च वच्छगोतो च वच्छो च वनपब्हयो अधिमुत्तो महानामो पारापरियो यसो पि च किम्बिलो विजिपुत्तो च इमिदत्तो महायसो 'ति ॥ वीमुत्तरसत थेरा कतिकच्चा अनासवा एकके 'व निपातिम्ह सुसंगीता महेसिभीति ।

निद्वितो एकनिपातो

दुकनिपातो

नित्य कोचि भवो निच्चो संखारा वापि सस्सता,
उपपज्जित्त च ते खन्या चवित्त अपरापरं ॥१२१॥
एतं आदीनवं ञात्वा भवे न 'अम्हि अनित्यको,
निस्सटो सञ्बकामेहि, पत्तो मे आसवक्खयो 'ति ॥१२२॥
इत्यं सुदं आयस्मा उत्तरो थेरो गाथायो अभासित्या'ति
न इदं अनयेन जीवितं, नाहारो हदयस्स सन्तिको,
आहारद्वितिको समुस्सयो, इति दिस्वान चरामि एसनं ॥१२३॥
पद्धको'ति हि नं अवेदयुं यायं वन्दनपूजना कुलेसु,
मुखुमं सल्ळं दुख्बहं सक्कारो कापुरिसेन दुज्जहो'ति ॥१२४॥
इत्यं सुदं आयस्मा पिण्डोळमारद्वाजो थेरो गाथायो अभासित्या'ति ।
मक्कटो पञ्चद्वारायं कुटिकायं पसिक्कय
द्वारेन अनुपरियेति घट्टयन्तो मुहुं मुहु ॥१२५॥
तिट्ठ मक्कट मा घावि, न हि ते तं यथा पुरे;
निग्गहीतो 'सि पञ्चाय, नेतो दूरं गमिस्ससीति ॥१२६॥

विख्यो थेरो

तिण्ण में ताळपत्तान गडमातीरे कुटी कता, छविसत्तो व में पत्तो , पंसुकूल्डच चीवरं ॥१२७॥ द्वित्र अन्तरवस्सानं एका बाचा में भासिता, तितये अन्तरवस्सम्हि तमोखन्धो पदालितो'ति ॥१२८॥

गङ्गातीरियो भिक्खु

अपि चे होति तेविज्जो मच्चुहायी अनासवो अप्पञ्ञातो'ति नं वाला अवजानन्ति अजानता ॥१२९॥ यो च स्रो अन्नपानस्स लाभी होति'ष पुग्गलो, पाप धम्मो पि चे होति, सो नेस होति सक्कतो'ति ॥१३०॥

अजिनो थरो

यदाहं धम्ममस्सोीस भासमानस्स सत्युनो, न कद्भसमिजानामि सब्बञ्जा अपराजिने ॥१३१॥ सत्य बाहे महावीरे सारथीनं वहत्तमेः मन्ये पटिप्पदायं वा कद्भसा मय्हें न विज्जतीति ॥१३२॥

मेळिजनो थेरो

यथा अगारं दुच्छन्नं बृद्धि समितिबिज्झिति, एवं अभावित चित्तं रागो समितिबिज्झिति ॥१३३॥ यथा अगारं सुच्छन्नं बृद्धि न समितिबिज्झिति एवं सुभासितं चित्तं रागो न समितिबिज्झिति ॥१३४॥

राधो थरो

खीणा हि मयहं जाति, वृसित जिनसासनं - पहीनो जालसंखातो, भवनेति समूहता ॥१३५॥ यस्सत्थाय पञ्चजितो अगारस्मा अनगारिय, सो मे अत्थो अनुष्पतो सञ्चसंयोजनक्वयो ॥१३६॥

सुराधो थेरो

सुख सुपन्ति मृनयो ये इत्थीसु न बज्झरे सदा वे रिक्खितब्बासु यासु सच्चं सुदुल्लभं ॥१३७॥ वधं चारिम्ह ते काम, अनणा दानि ते मय, गच्छाम दानि निब्बानं यत्थ गन्त्वा न सोचनीति ॥१३८॥

गोतमो थरो

पुब्बे हनति अत्तान पञ्छा हनति सो परे; सुहतं हन्ति अत्तानं बीतं सेनेव पन्तिसमा ॥१३९॥ न बाह्यणो बहिवण्णो, अन्तो वण्णोहि बाह्यणो, यस्मि पापानि कम्मानि सवे कण्हो सुजम्पतीति ॥१४०॥

वसभो थेरो

वरगो पठमो

उद्दानं

उत्तरो चे व पिण्डोलो विल्लयो तीरियो इसि अजिनो च मेळजिनो राधो सुराधो गोतमो वसभेन इमे होन्ति दस थेरा महिद्धिका'नि.

वग्गो दुतियो

सुस्मूसा सुतबड्डनी सुतं पञ्ञाय बड्डनं, अञ्ञाय अत्य जानाति, ज्ञातो अत्यो मुखावहो ॥१४१॥ सेवेथ पन्तानि सेनासनानि, चरेय्य-संयोजनविष्पमोक्खं : मचे रति नाधिगब्छेथ्य तत्थ सधे-वसे रक्खितनो मतीमा'नि ॥१४२॥

महाचुन्दो थरो

ये खो ते वेधिमस्सेन नानत्थेन च कम्मुना मनुस्मे उपरुप्धन्ति फरुमुप्बकमा जना, ते पि तथेव कीरन्ति, न हि कम्मं पनस्सिति ॥१४३॥ य करोति नरो कम्मं कल्याणं यदि पापक, तस्स नस्सेन दायादो यं य कम्मं पकुब्बतीनि ॥१४४॥

जोतिदासो थेरो

अच्चयन्ति अहोरत्ता, जीवितं उपरुज्झति, आयु स्वीयिति मच्चान कुन्नदीन व वोदकं ॥१४५॥ अथ पापानि कम्मानि करं बालो न बुज्झति पच्छास्स कट्कं होति, विपाको हिम्म पापको'नि ॥१४६॥

हेरञ्जकानि थेरो

परित्तं दाक्माइस्य यथा सीदे महण्णवे एव कुसीतमागम्म साधुजीवी पि सीदित; तस्मा त परिवज्जेय्य कुसीतं हीनवीरिय ॥१४७॥ पविवित्तेहि अरियेहि पहितत्तेहि झायिहि निच्च आरद्धविरियेहि पण्डितेहि सहावसेंति ॥१४८॥

सोभिनतो थेरो

जनो जनम्हि सम्बद्धो, जनमेवस्सितो जनो, जनो जनेन हेठियति, हेठेति च जनो जनं ॥१४९॥ कोहि तस्स जनेनत्थो जनेन जनितेन वा जनं ओहाय गच्छन्तं हेटयित्वा बहुं जनन्ति ॥१५०॥

सन्विमत्तो थेरो

काली इत्थि बहती घड्रकरूपा सत्थिञ्च भेत्वा अपरञ्च सत्थिञ् बाहञ्च भेत्वा अपरञ्च बाहुं सीसञ्च भेत्वा दिधयालक व एसा निसिन्ना अभिसद्दिहत्वा ॥१५१॥ यो वे अविद्वा उपिघ करोति पुनप्पुनं दुक्खमुपेति मन्दो तस्मा पजान उपिंघ न कथिरा माहं पुन भिन्नसिरो सथिस्सन्ति ॥१५२॥

महाकालो थेरो

बाहू सपत्ते लर्भात मुण्डो संघाटिपास्तो लाभी अन्नस्स पानस्स वत्थस्स सयनस्स च ॥१५३॥ एतमादीनव ञात्वा सक्कारेमु महब्भय अप्पलाभो अनवस्सुतो सतो भिक्ख् परिब्बजें/ति ॥१५८॥

तिस्सो थेरो

पाचीनवंसदायम्हि सक्यपुत्ता सहायका पहायनप्पके भोगे उञ्छापतागते रता ॥१५५॥ आरद्धविरिया पहिनत्ता निच्च दळ्हपरवकमा रमन्ति धम्मरतिया हित्वान लोकिकं रतिन्ति ॥१५६॥

किम्बिलो थेरो

अयोनिसोमनसीकारा मण्डनं अनुयुञ्जिसं उद्धत्तो चपलो चासि कामरागेन अट्टिनो ॥१५७॥ उपायकुसलेनाहं बुद्धेनादिच्चबन्धुना योनिसो पटिपज्जित्वा भवे चित्तं उदब्बहिन्ति ॥१५८॥

नन्दो थेरो

परे व नं पसंसन्ति अत्ता वे असमाहितो :
. मोघं परे पसंसन्ति, अत्ता हि असमाहितो ॥१५९॥
परे व नं गरहन्ति अत्ता वे सुसमाहितो
मोघं परे गरहन्ति, अना हि सुसमाहितो ॥१६०॥

सिरिमा थेरो

वग्गो दुतियो

उद्दानं

चुन्दो च जातिदासो च थेरो हेरञ्ज्ञकानि यो सोमिमित्तो सञ्बिमित्तो काळो तिस्सो च किम्बिलो नन्दो च सिरिमा चे व दस थेरा महिद्धिकां'नि

वग्गो ततियो

खन्धा मया परिञ्ञाता, तण्हा मे सुसमूहता, भाविता मम बोज्झङ्गा, पत्तो मे आसवक्लयो ॥१६१॥ सो'हं खन्धे परिञ्ञाय अब्बहित्वान जालिनि भावित्वान बोज्झङ्गे निब्बायिस्सं अनासवो'ति ॥१६२॥

उत्तरो थरो

पनादो नाम सो राजा यस्स यूपो सुवण्णयो तिरियं सोळसपब्बेघो जब्भमाहु सहस्सघा ॥१६३॥ सहम्सकण्डु सतभेण्डु घजालु हरितामयो, अनच्चुं तत्य गन्धब्बा छ सहस्मानि सत्तधांनि ॥१६४॥

भद्दजि थरो

सितमा पञ्जावा भिक्ख आरद्धबलवीरियो पञ्चकप्पसतानाहं एकरीत्त अनुस्सरि ॥१६५॥ चत्तारो सितपट्टाने सत्त अट्ट व भावयं पञ्च कप्पसता नाह एकरीत्त अनुस्सरिन्ति ॥१६६॥

सोभितो थरो

यं किच्चं दळ्हिविरियेन यं किच्चं बोधुमिच्छता करिस्सं नावरिज्झिस्स, पस्स विरियपरक्कमं ॥१६७॥ त्वञ्च मे मग्गमक्खाहि अञ्जसं अमतोगधं; अहं मोनेन मोनिस्सं गद्भगासोतो व सागरन्ति ॥१६८॥

वल्लियो थरो

केसे मे ओलिखिस्सन्ति कप्पको उपमर्काम, ततो आदास आदाय सरीर पच्चवेक्खिस ॥१६९॥ तुच्छो कायो अदिसित्य, अन्धकारे तमो ब्यगा; सब्बे चोळा समुच्छिन्ना नित्य दानि पुनब्बभवो'ति ॥१७०॥

वीतसोको थरो

पञ्चनीवरणे हित्वा योगक्षवेमस्स पत्तिया धम्मादासं गहेत्वान ञाणदस्सजमत्तनो ॥१७१॥ पच्चवेत्रियं इम काय सब्बं सन्तरबाहिगं अञ्जनञ्च बहिद्धा च तुच्छो कायो अदिस्सथा नि ॥१७२॥

पुगग्मासो थेरो

यथापि भहो आजञ्ञो खलित्वा पतितिद्वति, भिय्यो लढ़ान सबेगं अदीनो बहते धुरं ॥१७३॥ एवं दस्सनसम्पन्न सम्मासम्बुद्धसावक आजानिय मं धारेथ पुत्तं बुद्धस्स ओरसन्ति ॥१७४॥

नन्दको धरो

एहि नन्दक गच्छाम उपज्झायस्म सन्तिकं, सीहनादं नदिम्साम बुद्धसेट्टस्म सम्मुखा ॥१७५॥ याय नी अनुकम्पाय अम्हे पच्चाजयि मुनि, सो नो अत्थो अनुष्पत्तो सम्बसयोजनक्लयो'नि ॥१७६॥

भरतो थरो

नदन्ति एवं सप्पञ्ञा सीहा व गिरिगब्भरे वीरा विजितसंगामा जेत्वा मार सवाहन ॥१७७॥ सत्या च परिचिष्णो मे, धम्मो संघो च पूजितो, अहञ्च वित्तो सुमनो पुत्त दिस्वा अनासवन्ति ॥१७८॥

भारद्वाजो थरो

उपामिता सप्पुरिसा, मुता धम्मा अभिण्हसो, सुत्वान पटिपज्जिस्सं अञ्जसं अमतोगथ ॥१७९॥ भवरागहतस्स मे सतो भवरागो पुन मे न विञ्जति न चाहु न च मे भविस्सति न च मे एतरहि पि विज्जतीति ॥१८०॥

थेर-गाथा

कगहदिन्नो येरो

वग्गो ततियो

उद्दानं

उत्तरो भट्टिज थेरो सोभितो विल्लियो इसि बीतसोको च सो थेरो पुण्णमासो च नन्दको भरतो भारद्वाजो च कण्हदिन्नो महामुनीति.

वग्गी चतुत्धी

यतो अहं पब्बिजितो सम्मासम्बुद्धसामने, विमुच्चमानो उग्गच्छि, कामधातु उपच्वग ॥१८१॥ बह्मानो पेक्खमानस्स ततो चित्तं विमुच्चि मे, अकुष्मा मे विमुत्तीति सब्बसंयोजनक्खया 'ति ॥१८२॥

मिगसिरो थेरो

अनिच्चानि गहकानि तत्थ तत्थ पुनप्पुनं, गहकारं गवेमन्तो दुक्ष्वा जाति पुनप्पुन ॥१८३॥ गहकारक दिट्ठोंकि पुन गेह न काहिस; सब्बा ते फासुका भग्गा थूणीरा च विदालिता; विपरिग्रादिकतं चित्तं इथेन निघमिस्सतीति ॥१८४॥

सिवको थरो

अरहं सुगतो लोके वातेहाबाधिनो मुनिः सचे उण्होदकं अत्यि मुनिनो देहि ब्राह्मण ॥१८५॥ पूजितो पूजनेय्यानं सक्करेय्यान सक्कतो अपचितो अपचिनेय्यानं तस्स इच्छामि हातवे'ति ॥१८६॥

उपवानो थरो

दिट्ठा मया धम्मधरा उपासका कामा
अनिच्चा इति भासमाना
सारत्तरत्ता मणिकुण्डलेसु पुत्तेसु दारेसु
च ते अपेक्खा ॥१८७॥
अद्धा न जानन्ति यथा व धम्मं, कामा अनिच्चा इति
चापि आहु, रागञ्च तेसं न बलत्थि छेतु तस्मा
सिता पुत्तदारं धनञ्चा'ति ॥१८८॥

इसिदिन्नो थेरो

देवो च वस्सिति देवो च गळगळायिन एकको चाहं भेरवे बिले विहरामिः तस्स मयहं एककस्स भेरवे बिले विहरतो नित्य भय वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा ॥१८९॥ धम्मता ममेसा यस्स मे एककस्स भेरवे बिले विहरतो नित्य भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसोबा'नि ॥१९०॥

सम्बुलकच्चानो थरो

कस्स सेळ्पमं चित्तं ठित नानुपकम्पति
विन्तं रजनीयेसु कुप्पनीये न कुप्पति
यस्सेवं भावितं चितं कुतो तं दुक्खमेस्सति ॥१९१॥
मम सेळ्पम चित्त ठित नानुपकम्पति
विरत्त रजनीयेसु कुप्पनीये न कुप्पति
ममेवं भावित चितं, कुतो मं दुक्ख मेस्सतीति ॥१९२॥

खितको थरो

न ताव मुपिनुं होति रित नक्क्वतमालिनी, पटिजिग्गिनुमेबेसा रित होति विजानता ॥१९३॥ हित्यक्किम्यावपितित कुञ्जरो चे अनुक्कमे सगामे मे मत सेय्यो यञ्चे जीवे पराजितो'नि ॥१९४॥

सोणो पोटिरियपुत्तो

पञ्च कामगुणे हित्वा पियरूपे मनोरमे सद्धाय अभिनिक्खम्म दुक्बस्सन्तकरो भवे ॥१९५॥ नाभि नन्दामि मरणं नाभि नन्दामि जीवितं कालञ्च पटिकझ्खामि सम्पजानो पनिस्सतो'नि ॥१९६॥

निसभो थेरो

अम्बपल्लवसंकामं अंसे कत्वान चीवरं निसिन्नो हत्थिगीवायं गामं पिण्डाय पाविसि ॥१९७॥ हत्थिक्खन्धतो ओरुपृह संवेगं अलभिन्नदा सोहं दित्तो तदा सन्तो, पत्तो मे आसवक्खयो'नि ॥१९८॥

उसमो थेरो

अयं इति कप्पये कप्पटकुरो, अच्छाय अतिभरिताय अमतघटिकाय चम्मकतमत्तो, कतपदं झानानि ओचेतु ॥१९९॥ मा खो त्वं कप्पट पचालेसि मातं उपकण्णकम्हि तालेस्मं; न ह त्वं कप्पट मनमञ्ज्ञामि सधमज्झम्हि पचलायमानो'ति ॥२००॥

कप्पट कुटो येरो

वग्गो चतुत्थो, उद्दानं

मिगसिरो सिवको व उपवानो च पण्डितो इसि दिन्नो च कच्चानो खिनको च महावसी पोटिरियपुलो निसभो उसभो कष्ट कुरो'ति

वग्गो पञ्चमी

अहो बुद्धा अहो धम्मा अहो नो सत्थुसम्पदा यत्थ एतादिस धम्म सावको सच्छिकाहिति ॥२०१॥ असंखेय्येसु कप्पेसु सक्कायाधिगता अहु, तेसं अयं पच्छिमको, चरिमो, य समुस्सयो जातिमरणसंसारो, नत्थि दानि पुनन्भवो'ति ॥२०२॥

कुमारकस्सपो थरो

यो हवे दहदो भिक्ष युञ्जित बृद्धमामने, जागरो पित सुत्तेसु, अमोघन्तस्म जीवितं ॥२०३॥ तस्मा सद्धञ्च सीलञ्च पसादं धम्मदम्सन अनुयुञ्जेथ मेधावी सरं बृद्धान सासनन्ति ॥२०४॥

धम्मपालो थरो

कस्सिन्द्रियानि समय गतानि अस्सा यथा सारथिना सुदन्ता पहीनमानस्स अनासवस्स देवापि तस्स पिहयन्ति तादिनो ॥२०५॥ मिय्हन्द्रियानि समथ गतानि अस्सा यथा सारथिना सुदन्ता पहीतमानस्स अनासवस्स देवापि मय्हं रियहन्ति तादिनो'ति ॥२०६॥

ब्रह्मालि थेरो

छविपापक चित्तभद्दक मोघराज ससतं समाहितो, हेमन्तिकसीतकालरत्तियो, भिक्ख त्वं 'सि कयं करिस्सिस ॥२०७॥ सम्पन्नसस्सा मगधा केवला इति मे सुतं; पढालच्छन्नको सेट्यं यथङ्को सुखजीविनो 'ति ॥२०८॥

मोघराजा थेरो

न उक्खिपे नो च परिक्खिपे परे, न ओक्खिने पारगतं न एरए, न चत्तवण्णं परिसासु व्याहरे अनुद्धतो सम्मितभाणि मुब्बतो ॥२०९॥ मुसुख्मितपुणत्थदेस्सिना मति कुसलेन निवात दृत्तिना संमेवितबुद्धसीलिना निब्बानं निहं तेन दुल्लभन्ति ॥२१०॥

विसाखोपञ्चालिपुत्तो थरो

नदन्ति मोरा मुसित्वा सुपेखुणा मुनीलगीवा सुमूखा मुगज्जिनो, सुसह्ला चापि महा मही अयं सुव्यापितम्बु, सुवलाहक नभं ॥२११॥ सुकल्लेखपो सुमनस्स झाथिनं सुनिक्खमो साधु सुबुद्धसासने; सुसुक्कसुक्कं निपुणं सुदुद्दमं फुसाहितं उत्तममच्चृतं पदन्ति ॥२१२॥

चूलको थेरो

नन्दमानागर्ने चित्तं मूलमारोपमानकः, तेन तेनेव वजिस येन सूलं कलिङ्मारं ॥२१३॥ ताहं चित्तकलि बूमि नं बूमि चित्तदुब्भकः; मत्था ते दुल्लभो लद्धो; मानत्थे म नियोजयीति ॥२१४॥

श्रन्पमो पेरो

संसरं दीषमद्वानं गतीमु परिवत्तिसं अपस्सं अरियमच्चानि अन्धभूतो पुथुज्जनो ॥२१५॥ तस्स मे अप्पमत्तस्स संमारा विनलीकता, सब्बा गती समुच्छिन्ना, तिन्थ दानि पुनब्भवो 'ति ॥२१६॥

वज्जितो थेरो

अस्सत्ये हरितोभासे संविष्ठ्ळह् म्हि पादपे एकं बुद्धगतं सञ्ज्ञां अलभित्यं पतिस्सनो ॥२१७॥ एकतिमे इतो कप्पे यं सञ्ज्ञ अलभिन्नदा, तस्सा सञ्ज्ञाय बाहुसा पत्तो मे आसवक्खयो 'ति ॥२१८॥

सन्धितो थेरो

पश्चमो वग्गो

उद्दानं

कुमारकरसपो थेरो धम्मपालो च ब्रह्मालि -मोघराजा विसालो च च्ळको च अनूपमो विज्ञतो संधितो थेरो किलेसरजवाहनो 'ति गाथा दुकनिपातम्हि नवुति चेव अट्ठ च थेरा एक्नपञ्ञारा भामिता नयकोविदा।

दुकनिपाती

तिकनिपातो

अयोनिर्मुंड अन्वेस अग्गि परिचरि वने,
मुद्धिमग्गमजानन्तो अकासि अमर तप ॥२१९॥
तं मुखेन मुखं लद्धं, पस्स धम्ममुधम्मत;
तिस्सो विज्जा अनुष्पत्ता, कतं वृद्धम्म सामनं ॥२२०॥
श्रद्धावन्धु पुरे आगि, इदानि खोगिन्ह ब्राह्मणो,
तेविज्जो न्हानको चिन्ह मोत्तियो चिन्ह वेदग् 'ति ॥२२१॥

श्रद्धात्ति भारद्वाज थेरो

पञ्चाहाह पञ्चिजितो सेखो अप्पत्तमानमो विहार मे पविट्टम्स चेतसो पणिघी अहु ॥२२२॥ नासिस्सं न पविस्सामि विहारनो न निक्खमे न पि पस्स निपातेस्सं तण्हासन्त्रे अनूहते ॥२२३॥ तस्म गेवं विहरतो पस्स विरियपण्ककम, निस्सो विज्जा अनुष्यत्ता, कनं बृद्धस्स सासनन्ति ॥२२४॥

पच्चमो थेरो

यो पुब्बं करणीयानि पच्छा मो कानुमिच्छति, सुखा सो धमने ठाना पच्छा च मनुतप्पति ॥२२५॥ यिन्ति कियरा तिन्ति बदे, य न कियरा न तं बदे, अकरोन्त भासमानं परिजानन्ति पण्डिता ॥२२६॥ सुसुखं वत निब्बानं सम्मासम्बुद्धदेसित अमोक विराजं खेमं यत्य दुक्खं निरुज्झतीति ॥२२७॥

वाकुल थेरो

सुखञ्चे जीवितृ इच्छे सामञ्जास्म अपेक्सवा, संधिकं नातिमञ्जोय्य चीवरं पानभोजनं ॥२२८॥ सुखञ्चे जीवितुं इच्छे सामञ्जारंम अपेक्सवा, अहिमुसिकसोब्भं व सेवेथ सयनासनं ॥२२९॥ सुखञ्चे जीवितुं इच्छे सामञ्जास्म अपेक्सवा इतरीतरेन तुस्सेय्य एकधम्मञ्च भावये 'ति ॥२३०॥

धनियो थरो

अतिसीतं अत्युष्हं अतिमायं इदं अह, इति विस्सद्वकम्मन्ने खणा अच्चेन्ति माणवे ॥२३१॥ यो च सीतञ्च उण्हञ्च तिणा भ्रिय्यो न मञ्जाति करं पुरिसिकच्चानि, सो सुखा न विहायति ॥२३२॥ दब्बं कुसं पोटिकलं उमीरं मुञ्जपञ्चज उरसा पनुदहिस्सामि विवेकमन्बुह्यन्ति ॥२३३॥

मातङ्गपुत्तो थरा

ये चित्तकथी बहुम्मुता समणा पाटलिपुत्तवासिनो तंसञ्जातरो यमायुवा द्वारे तिद्वृति खुज्जमोलुभिनो ॥२३४॥ ये चित्तकथी बहुस्सुता समणा पाटलिपुत्तवासिनो तंसज्जतरो यमायुवा द्वारे तिद्वृति मालुनेरिनो ॥२३५॥ सुयुद्धेन सुयिट्टेन संगामविजयेन च ब्रह्मचरियानुचिण्णेन एवायं सुखमेधित ॥२३६॥

खुन्जसोभितो येरो

यो 'घ कोचि मनुस्सेमु परपाणानिहिंसति
अस्मा लोका परम्हा च उभया घंसते नरो ॥२३७॥
यो च मेत्तेन वित्तेन सब्बपाणानुकप्पति,
बहुं हि सो पसवित पुरूनं तादिसको नरो ॥२३८॥
मुभासितस्स सिक्लेय समणुपासजस्स च,
एकासनस्स च रहो वित्तबूगसमस्स चा 'ति ॥२३९॥

वारणो यरो

एको पि सद्धो मेघावी अस्सद्धानिष ज्यातिनं धम्मटठो सीलसम्पन्नो होति अत्याय बन्धुनं ॥२४०॥ निग्गयृह अनुकम्पाय चोदिता ज्ञातयो मया ज्ञातिबन्धवपेमेन कारं कत्वान भिक्खुसु ॥२४१॥ ते अब्भतीता कालकता पत्ता ते तिदिवं सुखं, भातरो मयुहं माता च मोदन्ति कामकामिनो 'ति ॥२४२॥

पस्सिक्त्थरो

काला पञ्चक्रमसंकासो किसो धर्मानसंततो मत्तञ्जा अन्नपानिम्ह अदीनसन्सो नरो ॥२४३॥ फुट्ठो इंसीह मकसेहि अरञ्ज्ञास्म बहाबने नागो संगामसीसे व सतो तत्राधिवासये ॥२४४॥ यथा ब्रह्मा तथा एको, यथा देवो तथा दुवे, यथा गामो तथा तथा, कोलाहलं ततुसरिन्ति ॥२४५॥

यसोजत्येरो

अहु तुप्ह पुरे सद्धा, सा ते अज्ञ न विज्जिति ।
यं तुप्हं तुप्हं एवेतं; नित्य दुच्चिरत मम ॥२४६॥
अभिच्चा हि चला सद्धा एवं दिट्ठा हि सा मया;
रज्जित्त पि विरज्जित्त तत्य कि जिय्यते मुनि ॥२४७॥
पच्चिति मुनिनो भत्तं थोकं थोकं कुले कुले;
पिण्डिकाय चरिस्सामि, अस्यि जङ्गधबलं ममा'ति ॥२४८॥

साटिमत्तियत्थेरो

सद्धाय अभिनिक्खम्म नव पञ्चिजतो नवो मित्ते भजेय्य कल्याणे सुद्धाजीवे अतन्दिते ॥२४९॥ सद्धाय अभिनिक्षम्म नवपञ्चिजतो नवो संघर्षम विहरं भिक्खु सिक्खेय विनयं बृधो ॥२५०॥ सद्धाय अभिनिक्खम्म नवपञ्चिजतो नवो कप्पा कप्पेसु कुसलो चरेय्य अपुरक्खतो ॥२५१॥

उपालि थेरो

पण्डितं वत मं सन्तं अलमत्य विचिन्तकं पञ्चकामगुणा लोके सम्मोहा पार्तायसु मं ॥२५२॥ पवस्त्रो मारविसयं दळह् सल्लसमप्पितो अर्सावस्त मच्चुराजस्स अहं पासा पमृच्चितु ॥२५३॥ सब्बे कामा पहीना मे, भवा सब्बे पदालिना विकस्तीणो जाति ससारो नित्य दानि पुनब्भवो 'ति ॥२५४॥

उत्तरपालो थेरो

सुणाथ ज्ञातयो सब्बे यावन्तेत्य समागना,
धम्मं वो देसियस्सामि; दुक्का जाति पृनप्पुनं ॥२५५॥
आरभथ निक्कमथ युञ्जाथ बुद्धमासने
धुनाथ मच्चुनो सेनं नळागारं व कुञ्जरो ॥२५६॥
यो इमस्मि धम्मविनये अव्यमत्तो विहेस्सित,
पहाय जातिमसार दुक्वस्मन्तं करिस्सनीति ॥२५७॥

अभिभूतत्थेरो

संगर हि निरयं अगिच्छिमं, पेतलोकमगमं पुनप्युनं, दुक्खममिह पि तिरच्छानयोनिया नेकधा हि बुसितं चिरं मया ॥२५८॥ मानुसो पि च भवो 'भिराधितो, सग्गकायमगमं सिंक सिक, रूपधातुसु अरूपधातुसु नेवसिञ्जसु असिञ्जसु दुतं ॥२५९॥ सम्भवा सुविदिता असारका संवता पचिलता सदेरिना, त विदित्वा महमन्तसम्भवं सिन्तमेव, स्तिमा समज्ज्ञगन्ति ॥२६०॥

गोतमो थेरो

यो पुब्बे करणीयानि . . (२६१-२६३=२२५-२२७) ॥२६१-२६३॥

हारितो थेरो

पार्पामते विवज्जेत्वा भजेय्युत्तमपुग्गले ओवादे चस्स तिट्ठेय्य पत्थेन्तो अचलं सुखं ॥२६४॥ परित्तं दारुम (२६५,२६६=१४७,१४८) ॥२६५-२६६॥

विमलो थेरो

उद्दानं

अद्धर्गणको भारद्वाजो पच्चयो बाकुलो इसि धनियो मानद्भगपुत्तो मोभितो वारणो इसि पस्सिको च यसोजो च साटिमतियुपालि च उत्तरपालो अभिभूतो गोतमो हारितो पि च धरो निकपार्ताम्ह निब्बाने विमलो कतो; अटुतालीस गाथायो थेरा सोळस कितिता 'नि ॥

तिकनिपातो निद्उतो

चतुकनिपातो

अलंकता सुवसना मालिनी चन्दनुस्सवा
मज्झे महापये नारी तुरिये नच्चित नहुकी ॥२६७॥
पिण्डिकाय पिवट्ठो 'ह गच्छन्तो नं उदिक्खिसं
अलंकतं सुवसनं मच्चुपासं व ओङ्डितं ॥२६८॥
ततो मे मनसीकारो योनिसो उदपज्जया
आदीनवो पातुरहू, निब्बिदा समितिहुत, ॥२६९॥
सतो चित्तं विमुच्चि मे, पस्स धम्मसुषम्मतं ।
तिस्सो विज्जा अनुष्पता, कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥२७०॥

नागसमाल थेरो

अहं मिद्धेन पकतो विहारा उत्तिकक्षिम; चक्कमं अभिरूहन्तो तथेव पर्पात छमा ॥२७१॥ गत्तानि परिमज्जित्वा पुन पारुय्ह चक्कमं चक्कममं चक्कममं तो 'हं अज्ज्ञत्तं सुसमाहितो ॥२७२॥ ततो मे (२७३,२७४ = २६९,२७०) ॥२७३-२७४॥

भगुथरो

परे च न विजानिन्त मयमेल्य यमामसे;
ये च तत्थ विजानिन्त ततो सम्मन्ति मेधगा ॥२७५॥
यदा च अविजानन्ता इरियन्त्यमरा विया,
विजानिन्त च ये धम्मं आतुरेसु अनातुरा ॥२७६॥
य' किञ्चि सिथिलं कम्मं संकिलिटुञ्च यं वतं संकस्सरं ब्रह्मचरियं, न तं होति मह्ष्फलं ॥२७७॥
यस्स सब्बह्मचरियं, गारवो नूपळ्कमित,
आरका होति सद्धम्मा नमं पुषविया यथा 'ति ॥२७८॥

सभियो थेरो

षिरत्यु पूरे दुग्गन्ये मारपक्षे अवस्सुते;
नव सीतानि ते काये यानि सन्दन्ति सक्बदा ॥२७९॥
मा पुराणममञ्ज्ञित्यो मासादेसि तथागते;
सग्गे पि ते न रज्जन्ति किमझ्ग पन मानुसे ॥२८०॥
ये च स्रो बाला दुम्मेधा दुम्मत्ती मोहपास्ता
तादिसा तत्य रज्जन्ति मारसित्तस्मि बन्धने ॥२८१॥
येसं रागो च दोस्रो च अविज्जा च विराजिता
तादी तत्य न रज्जन्ति छिन्नसूत्ता अवन्धना 'ति ॥२८२॥

नन्दको थेरो

पञ्चपञ्ञास वस्सानि रजोजल्लमधारिय,
भूञ्जन्तो मासिकं मतं केसगस्सु अलोविय ॥२८३॥
एकपादेन अट्टासि आसनं परिवज्जिय,
सुक्खगूथानि च खादि उद्देसञ्च न सादियि ॥२८४॥
एतादिसं करित्वान बहुं दुग्गतिगामिनं
वुय्हमानो महोघेन बुद्धं सरणमागमं ॥२८५॥
सरण गमनं पस्स, पस्स धम्मसुधम्मतं
तिस्सो विज्जा अनुष्यत्ता कत बुद्धस्स सासनन्ति ॥२८६॥

जम्बुको थेरो

स्वागतं वन मे आसि गयायं गयफगुया
यं अहसासि सम्बुद्धं देसेन्तं धम्ममुत्तमं ॥२८७॥
महप्पभ गणाचिरयं अग्गपत्तं विनायकं
सदेवकस्स लोकस्स जिनं अतुलदस्सनं ॥२८८॥
महानागं महावीरं महाजुतिमनासवं
सब्वासवपरिक्कीणं सत्थारमकुतोभयं ॥२८९॥
चिरसङ्गिलिट्टं वत दिद्विसन्दानसन्दितं
विमोचयी सो भगवा सब्बगन्थेहि सेनकन्ति ॥२९०॥

सेनको धरो

यो दन्धकाले तरित तरणीये च दन्धये, अयोनिसो संविधानेन बालो दुक्खं निगच्छति ॥२९१॥ तस्सत्था परिहायित कालपक्खे व वन्दिमा, आयसक्यञ्च पप्पोति मित्ते हि च विरुद्धतीति ॥२९२॥ यो दन्धकाले दन्धेति तरणीये च तारये, योनिसो संविधानेन मुखं पप्पोति पण्डितो ॥२९३॥ तस्सत्था परिपूरित सुककपक्खे व चन्दिमा, यसो कितिञ्च पप्पोति, मित्तेहि न विरुज्झतीनि ॥२९४॥

सम्भूतो थरो

उभयेनेव सम्पन्नो राहुलभहो 'ति मं विदु, यञ्चिम्ह पुत्तो बृद्धस्स, यञ्च धम्मेसु चक्खुमा ॥२९५॥ यञ्च मे आसवा खीणा, यञ्च नित्य पुनक्भवो । अरहा दिक्खणेय्यो 'म्हि तैविज्जो अमतह्सो ॥२९६॥ कामन्धा जालसञ्चन्ना नण्हाख्यनच्छादिता पमत्तबन्धुना बद्धा मच्छा व कुमिना मुखे ॥२९७॥ तं काममहमुज्झित्वा छेत्वा मारस्स बन्धनं समून्नं तण्हमब्बूयृह सीतिसूनो 'सिम निब्सुनो 'ति ॥२९८॥

राहुलो थेरो

जातरूपेन पच्छन्ना दासी गणपुरक्तता अङकेन पुत्तमादाय भरिया मं उपागीम ॥२९९॥ तञ्च दिस्वान आर्यान्त सकपुत्तस्य मातरं, अलङकर्त सबुसर्न मच्चुपासं व ओड्डिन ॥३००॥ ततो मे- . . . (३०१,३०२≈२६९,२७०) ॥३०१-३०२॥

चन्दनो धरो

धम्मो हवे रक्खित धम्मचारि, धम्मो सुविण्णो सुखमावहाति एसा निसंसी धम्मे सुविण्णे, न दुग्गति गच्छिति धम्मचारी ॥३०३॥ न हि धम्मो अधम्मो च उभो समिवपाकिनी; अधम्मो निरयं नेति, धम्मो पापेति सुग्गति ॥३०४॥ तस्मा हि धम्मेसु करेय्य छन्दं इति मोदमानो सुगतेन तादिना; धम्मे ठिता सुगतवरस्स साथका निय्यन्ति धीरा सरणवरगगगमिनो ॥३०५॥ विष्फोटितो गण्डमूलो, तण्हाजालो समृहतो; सो खीणसंसारो न चत्थि किञ्चनं चन्दो यथा दोसिना पुण्णमासिया 'ति ॥३०६॥

धम्मिको थरो

यदा बलाका सूचिपण्डरच्छदा काळस्स मेघस्स भयेन तज्जिता पलेहिति आलयमालयेसिनी, तदा नदी अजकरणी रमेति मं ॥३०७॥ यदा वलाका स्विमुद्धपण्डरा काळस्स मेघस्स भयेन तिज्जिता परियेसतिलेन मलेन, दस्सिनी, तदा नदी अजकरणी रमेति मं ॥३०८॥ कन्नु तत्य न रमेन्ति जम्बुयो उभतो तहि, सोभेन्ति आपगा क्लं महालेनस्स पच्छतो ॥३०९॥ तामतमदसं घमुप्पहीना भेका मन्दवती पनादयन्ति, नाज्ज गिरि नदीहि विप्यवाससमयो, खेमा अजकरणी सिवा सुरम्मा 'ति ॥३१०॥

मप्पको थरो

पब्बॉज जीविकत्थो 'हं, लद्धान उपसम्पदं ततो सद्धं पटिलिभ, दळहविरियो परक्किम ॥३११॥ कामं भिज्जत् 'यं कायो मंसपेसी त्रिसीयरं, उभोजन्नकसंधीहि जद्भघायो पपतन्त् मे ॥३१२॥ नासिस्तं न पविस्सामि विहारा च न निक्लमे न पि पस्स निपातेस्सं तण्हासल्ले अनहते ॥३१३॥ तस्स मेवं ... (= २२४) ॥३१४॥

मुदितो थेरो

उद्दानं

नागसमालो भगु च सभियो नन्दको पि च जम्बुको सेनको थेरो सम्भुतो राहुलो पि च भवति चन्दनो थेरो दसेते बद्ध सावका। धन्मिको सप्पको थेरो मुदितो चापि ते तयो गायायो दे च पञ्जास थेरा सब्बे पि तेरसा 'ति।

बतुक्कनिपाली निद्विती

पश्चनिपातो

भिक्कु सीविषकं गल्वा अहमं इत्थिमुज्झित अपविद्धं सुसानस्मि खज्जितं किमिही फुट ॥३१५॥ यं हि एके जिगुच्छिन्ति मतं दिस्वान पापकं, कामरागो पानुरहू अन्धो व सबती अहु ॥३१६॥ ओरं ओदनपाकम्हा तम्हा ठाना अपकर्षम, सितमा सम्पजानो 'ह एकमन्तं उपाविमि ॥३१७॥ ततो मे(३१८,३१९=२६९,२७०) ॥३१८-३१९॥

राजदत्तो थेरो

अयोगे युञ्जमत्तान पुग्मि किच्चमिच्छतो चरं चे नाधिगच्छेय्य, तं में दुब्भगलक्षणं ॥३२०॥ अब्बूळहं अगत विजितं एकञ्चे ओस्सजेय्य कली व सिया; सब्बानि पि चे ओस्सज्जेय्य अन्धो व सिया समिवसमस्स अदस्सनतो ॥३२१॥

यिष्ट्रि कियरा... (==२२६) ॥३२२॥ यथापि रुचिरं पुष्फं वण्यवन्तं अगन्त्रकः, एवं सुभासिता वाचा अपूला होति अकुब्बतो ॥३२३॥ यथापि रुचिरं पुष्फं वण्यवन्त मगन्धकं एवं सुभासिता वाचा स-फला होति सकुब्बतो 'ति ॥३२४॥

सुभूतो थरो

वस्सति देवो यथा सुगीतं, छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता तस्सं विहरामि वूपसन्तो, अथ चे पत्थयसि पवस्स देव ॥३२५॥ वस्सति देवो यथा सुगीतं छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता, तस्सं विहरामि सन्तवित्तो—प—तस्सं विहरामि वीतरागो ...वीत दोसो ...वीत मोही अय चे पत्ययंसि पवस्स देवा 'ति ॥३२६-३२९॥

गिरिमानन्दो थरो

यं पत्थयानो घम्मेसु उपज्ञायो अनुगाहि
अमतं अभिकञ्जलतं कतं कत्तव्वकं मया ॥३३०॥
अनुप्पत्तो सच्छिकतो सयं घम्मो अनीतिहो;
विसुद्धन्नाणो निक्कञ्जलो व्याकरोमि तवन्तिके ॥३३१॥
पुत्र्वेनिवासं जानामि दिव्यचकवं विमोधितं,
सदत्यो मे अनुप्पनो कत बुद्धस्स सामनं ॥३३२॥
अप्पमत्तस्स मे मिक्खा मुमुता तव सासने,
सब्बे मे आसवा खीणा नत्यि वानि पुत्रव्भवो ॥३३३॥
अनुसासि मं अरियवता अनुकम्पी अनुगाह;
अमोघो नुष्हं ओवादो, अन्ते वासि 'म्ह सिक्खतो 'ति ॥३३४॥

सुमनी थेरो

साधु हि किर में माता पतोद उपदंसिय

यस्साहं वचनं मुत्वा अनुसिट्ठो जनेत्तिया

आरद्धविरियो पहितत्तो पत्तो सम्बोधिमृत्तम ॥३३५॥

अरहा दिक्खणेय्यो 'म्हि तेविज्जो अमतहसो

जित्वा नमुचिनो सेन विहरामि अनासवी ॥३३६॥

अज्झत्तञ्च वहिद्धा च ये में विज्जिसु आसवा
सब्बे असेसा उच्छिन्ना न च उपप्ज्जरे पुन ॥३३७॥

विसारदा खो भगिनी एतं अत्थ अभासियः

अपि हा नून मिय पि वनथो ते न विज्जित ॥३३८॥

परियन्तकतं दुक्खं, अन्तिमो यं समुस्सयो

जातिमरणसंसारो नित्य दानि पुनव्भवो 'ति ॥३३९॥

बढ्ढा थेरो

अत्थाय वत मे बुद्धो नर्दि नेरञ्जनं अगा, यस्साहं धम्मं सूत्वान मिच्छादिद्धि विवज्जीय ॥३४०॥ पिंज उच्चावचे पञ्चो, अगिष्ठुनं जुहि अहं
एसा सुद्धीति मञ्जानो अन्धमूती पुषुज्जनो ॥३४१॥
विद्वि गहणपवलाो परामागेन मोहितो
अमुद्धि मञ्जिम सुद्धि अन्धमूतो अविद्मु ॥३४२॥
भिच्छादिद्वि पहोना मे, भवा सब्बे विदालिता
जुहामि दन्तिलणेय्यामां नमस्सामि तथागतं ॥३४३॥
मोहा सब्बे पहीना मे भयतण्हा पदालिता
विक्खीणो जातिससारो नत्थि दाणि पुनव्भवो 'ति ॥३४४॥

नदिकस्सपो थरो

पातो मज्झन्तिक सायं तिकलत् दिवसस्सह बोतिर उदकं सोतं गयाय गयफगुया ॥३४५॥ यं मया पकत पापं पुब्बे अञ्जासु जातिमु तन्दानीय पवाहेमि एवंदिष्टि पुरे अहुं ॥३४६॥ सुत्वा सुभासितं वाचं धम्मत्थसहित पद तथं यथावकं अत्थ योनिसो पञ्चवेभित्वम ॥३४७॥ निन्हातसब्बपापो 'म्हि निम्मलो पयतो सुवि सुद्धो मुद्धस्स दायादो पुतो बुद्धस्स ओरसो ॥३४८॥ ओगयहहुद्धांगकं सोत सब्बपाप पवाहाय, तिस्सो विज्ञा अञ्झर्याम, कतं बुद्धस्म सासनिन ॥३४९॥

गयाकस्सपो थरो

वानरोगाभिनीतो त्वं विहरं कानने वने पिबद्धगोचरे लूखे कथं भिक्खु करिस्सिसि ॥३५०॥ पीतिसुखेन विपुलेन फरमानी समुस्सपं लूखिम्म अभिसम्मोन्तो विहरिस्सामि कानने ॥३५१॥ भावेन्तो सतिपट्ठाने इन्दियानि बलानि च बोज्झङ्गगानि च भावेन्तो विहरिस्सामि कानने ॥३५२॥ आरद्धविरिये पहितत्ते निच्चं रळहपरक्कमे समग्गे सहिते दिस्वा विहरिस्सामि कानने ॥३५३॥ अनुस्सरन्तो सम्बुद्धं अग्गदन्तं समाहितं अतन्दितो रित्तिविवं विहरिस्सामि कानने "ति ॥३५४॥

वक्कली थेरो

बोलगंसामि ते चित्त आणिहारे व हिस्थिनं,
न तं पापे नियोजिस्सं कामजाल सरीरज ॥३५५॥
त्वं ओलग्गो न गच्छिसि द्वार्राववरं गजो व अलमन्तो,
न च चित्तकलि पुनप्पुनं पसहम्पापरनो चिरस्सिस ॥३५६॥
यथा कुञ्जरं अदन्त नवग्गहमङ्गुसम्गहो
बलवा आवन्तेति अकामं, एवं आवत्तियस्सन्तं ॥३५७॥
यथा वरहयदमकुसलो सारिध पवरो दमेति आजञ्जां,
एवं दमियम्सन्तं पिनिट्वितो पञ्चमु बलेमु ॥३५८॥
सतिया त निवन्धिस्मं, पयतनो वो दमेस्सामि;
विरियधुरनिग्गहीतो न यितो हूर गिमस्ससे चित्ता 'नि ॥३५९॥

विजितसेनो थेरो

उपारम्भिक्तो दुम्मेधो सुणाति जिनसासनं; आरका होति सद्धम्मा नभसो पथवी यथा ॥३६०॥ उपारम्ग कित्तो दुम्मेधो सुणाति जिनसासनं। पिन्हायति सद्धमा काठपक्के व कित्सामनं उपारम्भ कितो दुम्मेधो सुणाति जिनसामनं परिसुम्मति सद्धमे मच्छो अप्पोदके यथा ॥३६२॥ उपारम्भिक्तो दुम्मेधो सुणाति जिनसासनं न विक्हृति सद्धा मे खेतौ बीजं व पूर्तिकं ॥३६३॥ यो च तुर्ठेन किनेन सुणाति जिनसासनं खेपेत्वा आसवे सब्धे सच्छिकत्वा अकुप्पतं, पपुष्य पदमं सन्ति परिनिब्बाति अनासवो 'ति ॥३६४॥

यसदत्तो थेरो

उपसम्पदा च में लढ़ा, विमुत्तो चिम्ह अनासवो सो च में भगवा दिट्ठो, विहारे च सहाविस ॥३६५॥ बहुदेव रित्त भगवा अब्भोकासे 'तिनामिय विहारकुसलो सत्या विहारं पाविसी तदा ॥३६६॥ सन्यरित्वान संघाटि सेय्यं कप्येसि गीतमो मीहो सेलगृहायं च पहीनभयभेरवो ॥३६७॥ ततो कत्याणवाक्करणो सम्मासम्बुद्धसावको सोणो अभामि सद्धम्मं बुद्धसेट्घस्स सम्मुखा ॥३६८॥ पञ्चक्तन्धे परिज्ञाय भावियत्वान अञ्जसं पप्पुय्य परम सन्ति परिनिब्बस्सत्यनासवो 'ति ॥३६९॥

सोणो कुटिक्रमणो थरो

यो वे गरूनं वचनञ्जा धीरो बसे च तम्हि जनयंथ पेम,
मो भित्तमा नाम च होति पण्डितो
'ञत्वा च घम्मेमु विसेसि अस्स ॥३७०॥
यं आपदा अप्यतिता उळारा नक्खम्भयन्ते पटिसखयन्त
सो शामवा नाम च होति पण्डितो ञत्वा च घम्मेमु विसेसि अस्स ॥३७१॥
यो वे समुद्दो व ठितो अनेजो गम्भीरपञ्जो निपुणत्थदस्सी,
बसंहारियो नाम च होति॥३७२॥
बहुस्मुतो घम्मधरो च होति, धम्मस्स होति अनुधम्मचारी,
सो तादिसो नाम च होति ...॥३७३॥
अत्थन्न यो जानाति भासितस्स अत्थञ्च ञात्वा न तथा करोति,
अत्थन्तरो नाम स होति पण्डितो ञत्वा च धम्मेसु
विसेसि अस्सा 'ति ॥३७४॥

कोसियो थरो

उद्दानं

राजदत्तो सुभूतो च गिरिमानन्द-सुभगो बड्ढो च कस्मपो थेरो गयाकस्सप बक्किल विजितो यसदत्तो च सोणो कोसि यस व्हथोः सिंदु च पञ्च गाथायो थेरा च एत्थ द्वादसा 'ति

पश्चनिपातो

छनिपाती

दिस्वान पाटिहीरानि गोतमस्स यसिस्सनो न तावाहं पणिपति इस्सामानेन विञ्चतो ॥३७५॥ मम संकप्पमञ्जाय चोदेसि नरसारिथ, ततो मे आसि मंबेगो अब्भुतो लोमहसनो ॥३७६॥ पुब्बे जिटल भूतस्स या मे इद्वि परित्तिका, नाहं तदा निरंकत्वा पब्बीज जिनसासने ॥३७७॥ पुब्बे यञ्जोन सन्तुट्टो कामधातु पुग्क्यतो, पच्छा रागञ्च दोसञ्च मोहञ्चाप समूह्ति ॥३७८॥ पुब्बे निवासं जानाि दिब्बवक्खं विसोधिनं, इद्विमा परिचित्तञ्जू दिब्बसोतज्ज्व पापुणि ॥३७९॥ स यस्स चत्याय पब्बिजितो अगारस्मा अनगारिय, सो मे अत्थो अनुपत्तो सब्बसयोजनक्खयो 'ति ॥३८०॥

उरुवेळकस्मपो थरो

अतिहिता वीहि, खलगता सालि, न च लभे पिण्डं, कथमहं कस्सं ॥३८१॥ व् वृद्धमप्पमेय्यं अनुस्सर, पस्तो पीतिया फुटसरीरो होहिसि सतनभुदग्गो ॥३८२॥ धम्ममप्पमेयं—प—सघमप्पमेय्यं—प—॥३८३-३८४॥ अब्भोकासे विहरिस, सीता हेमन्तिका इमा रत्तियो । मा सीतेन परेतो विहिञ्जात्यो, पबिस त्वं विहार फुसितग्गळ ॥३८५॥ फुसिस्सं चतस्सो अप्पमञ्जायो ताहि च मुखितो विहरिस्सं; नाहं सीतेन विहिञ्जास्स अनिञ्जितो विहरन्तो 'ति ॥३८६॥

तेकिच्छकानि थरो

यस्स सब्रह्मचारीमु गारवो नूपलब्भित परिहायति सद्धम्मा मच्छो अप्पोदके यथा ॥३८७॥

महानागो थरा

कुल्लो सीविषक गन्त्वा अइसं इत्थिमुञ्जित
अपिविद्धं मुसानिस्म खज्जिन्तं किमिही फुटं ॥३९३॥
आतुरं अनुन्ति पूर्ति पस्म कुल्ल समुस्सयं
उग्वरन्तं पग्वरन्नं बालानं अभिनिन्दतं ॥३९४॥
धम्मादासं गहेत्वान ञाणदस्सनपत्तिया
पच्चवेक्ति इमं कायं तुच्छं सन्तरबाहिरं ॥३९५॥
यथा इदं तथा एतं यथा एत तथा इदं
यथा अघो तथा उद्ध, यथा उद्धं तथा अघो ॥३९६॥
यथा दिवा तथा रित्तं यथा रात्तं तथा दिवा
यथा पुरे तथा पच्छा यथा पच्छा तथा पुरे ॥३९७॥
पञ्चक्रिकेन तुरियेन न रित होति तादिसी
यथा एकग्वित्तस्स सम्मा धम्मं विपस्स तोति ॥३९८॥

कुल्लो थरो

मनुजस्म पमत्तचारिनो तण्हा बङ्बति माळुवा विया, सो पलवती हुराहुरं फलमिच्छं व वनस्मि वानरो ॥३९९॥ यं एसा सहती जम्मी तण्हा लोके विसत्तिका, सोका तस्स पबङ्बन्ति अभिवङ्बं व भीरण ॥४००॥ यो वे तं सहती जिम्म तण्हं लोके दुरच्चपं, सोका तम्हा पपतिन्त उदिबन्दु व पोक्खरा ॥४०१॥ तं वो वदामि भद्दं वो यावन्तेत्य समागता तण्हाय मूलं खण्य उसीरत्यो व बीरणं, मा वो नळ व सोतो व मारो भिञ्ज पुनप्पुनं ॥४०२॥ करोय बुद्धवचन खणो वे मा उपच्चगा, खणातीता हि सोचन्ति निरयम्हि समप्पिता ॥४०३॥ पमादो रजो, पमादानुपतितो रजो, अप्पमादेन विज्जाय अञ्बहे सल्लमत्तनो'ति ॥४०४॥

मालङ्क्यपुत्तो थरो

पण्णवीसितवस्सानि यतो पब्बजितो अहं
अच्छरासंघातमत्तिम् चेतो सन्ति मनज्झगं ॥४०५॥
अलद्धा चित्तस्सेकग्ग कामरागेन अहितो
बाहा पग्गयह कन्दन्तो विहारानुपितक्विम ॥४०६॥
सथं वा आहरिस्सामि को अत्था जीवितेन मे,
कथ हि सिक्तवं पच्चक्खं कालं कुब्बेथ मादिसो ॥४०७॥
तदाह खुरमादाय मञ्चकम्ह उपाविसि,
परिनीतो खुरो आमि धर्मान छेनुमत्तनो ॥४०८॥
सतो मे . . . (४०९,४१०==२६९,२७०)

मण्पदासत्थेरो

उट्टाहि निर्साद कातियान मा निहाबहुलो अहु जागरस्सु,
मा तं अलस पमत्तबन्धु कूटेनेव जिनातु मञ्चुराजा ॥४११॥
सयथापि महासम्ह्वेगो एव जातिजरातिवत्तते तं,
सो करोहि सुदीपमत्तनो त्वं, न हि ताणं तव विज्जतेव अञ्ञा ॥४१२॥
सत्था हि विजेसि मग्गमेतं सङ्गा जातिजराभमा अतीतं,
पुज्जापररत्तमप्पमत्तो अनुयुञ्जसु
दळहं करोहि योगं ॥४१३॥
पुरिमानि पमुञ्च बन्धनानि सधाटीखुर, मुण्डभिक्खभोजी
मा खिडु ।रतिञ्च मा निहं अनुयुञ्जित्य क्षियाय कातियान ॥४१४॥

भाषाहि जिनाहि कातियान, योगक्खेमपदे मुकोविदो'सि; पप्पुय्य अनुत्तर विसुद्धि परिनिब्बाहिसि वारिनाव जोति ॥४१५॥ पज्जोतकरो परित्तरंसो वातेन विनम्यते लता व; एवम्पि तुव आनादियानो मारं इन्दसगोत्त निद्धनाहि सो वेदयितासु वीतरागो कालं कक्ष्य इत्रेव सीनिभूतो'ति ॥४१६॥

कातियानो थरो

मुदेसितो चक्खुमता बृद्धेनादिच्चबन्धुना सब्बसंयोजनातीतो सब्बवहृषिनासनो ॥४१७॥
निय्यानिको उत्तरणो तण्हामूलिबमोमनो
विसमूलं आधानन छेत्वा पापेति निब्बृति ॥४१८॥
अञ्जाणमूलभेदाय कम्मयन्तिघाटनो
विञ्जाणानं परिग्गहे ञाणविजर्गनिपातनो ॥४१९॥
वेदनानं विञ्जापनो उपादानप्यमोचनो
भवं अद्भगरकासु व ञाणेन अनुपस्सको ॥४२०॥
महारसो सुगम्भीरो जरामच्चुनिवारणो
अयोद्भिकोगअरिद्ध ॥४२१॥
कम्मं कम्मन्ति ञत्वान विपाकञ्च विपाकतो
पटिच्चुप्पन्नधम्मानं यथावालोकदस्सनो
महास्सेमंगमो सन्तो परियोसानभह्कोति ॥४२॥

मिगनालो थेरो

जातिमदेन मत्तो'हं भोगैस्सिरिपेन च सण्ठान वण्णरूपेन मदमनो अचारि'हं ॥४२३॥ नात्तनो समकं कञ्चि अतिरेकञ्च मञ्जिस अनिमानहतो बालो पत्यद्धो उस्सितद्धजो ॥४२४॥ मानरं पितरञ्चापि अञ्जो पि गरुसम्मते न कञ्चि अभिवारेमिं मानत्यद्धो अनादरो ॥४२५॥ दिस्वा विनायकं अग्ग सारयीनं वरुत्तमं तपन्तमिव आदिच्चं म्भिक्सुसंघपुरक्खतं ॥४२६॥ मानं मदञ्च छहुत्वा विष्यसन्नेन चेतसा सिरसा अभिवानेसिं स्सन्त मानं ॥४२०॥ अतिमानो च ओमानो पहीना सुसमूहता अस्मिमानो समुच्छिन्नो, सब्बे मानविधा हता'ति ॥४२८॥

जेन्तो पुरोहितपुत्तो थेरो

यदा न वो पब्बजितो जानिया सत्तवस्सिको, इद्धिया अभिभोत्वान पन्नगिन्दं महिद्धिक ॥४२९॥ उपज्झायस्स उदकं अनोतत्ता महासरा आहरामि ततो दिस्वा मं सत्या एतदब्रवी ॥४३०॥ सारिपुत्त इमं पस्स आगच्छन्तं कुमारक उदकुम्भकमादाय अज्झत्तं सुसमाहित ॥४३१॥ पासादिकेन वत्तेन कन्याणडरियापथो सामणेरो नुरुद्धस इद्धिया च विसारदो ॥४३२॥ आजानियेन आजञ्जो साधुना साधु कारितो विनीतो अनुरुद्धेन कतिकच्चेन सिक्खितो ॥४३३॥ सो पत्वा परमं सन्ति सच्छिकत्वा अकुप्यत सामणेरो स सुमनो मा मं जञ्जांति इच्छतीति ॥४३४॥

सुमनो थेरो

वातरोगाभिनीतो त्वं विहरं कानने वने
पिबद्धगोचरे लूखे कथं भिक्खु करिस्सिसि ॥४३५॥
पीति सुखेन विपुलेन फरित्वान समुस्सयं
लूखिम्प अभिसम्भोन्तो विहरिस्सामि कानने ॥४३६॥
भावेन्तो सत्त बोज्झक्ये इन्द्रियानि बलानि च
झानसोखुम्मसम्पन्नो विहरिस्सं अनासवो ॥४३७॥
विष्पमुत्तं किलेसेहि सुद्धचित्तं अनाविलं
अभिण्हं पञ्चवेक्सन्तो विहरिस्सं अनासवो ॥४३८॥
अजझतीञ्च बहिद्धा च ये मे विज्जिसु आसवा
सब्बे असेसा उच्छिन्ना न च उप्पज्जरे पुन ॥४३९॥
पञ्चक्सन्या परिञ्ञाता तिद्वन्ति छिन्नमूलका,
दुक्खक्स्या अनुष्पतो, नित्य दानि पुनक्मवोंति ॥४४०॥

न्हातकमुनि थेरो

अक्कोघस्स कुतो कोथो दन्तस्स समजीविनो सम्मदञ्जाविमुत्तस्य उपसन्तस्स तादिनो ॥४४१॥ तस्सेव तेन पापियो यो कुद्धं पटिकुञ्झति; कुद्धं अप्यटिकुञ्झन्तो संगाम जेति दुञ्जयं ॥४४२॥ उभिन्नमत्यं चरित अत्तनो च परस्स च, परं संकुपितं ज्ञात्वा यो सतो उपसम्मित ॥४४३॥ उभिन्नं तिकिच्छन्तंत अत्तनो च परस्स च जना मञ्जान्ति वालो ति ये धम्मस्स अकोविदा ॥४४४॥ उप्यज्जेने स चे कोधो, आवज्ज ककचूपमं; उप्यज्जे चे रमे तण्हा, पुत्तमंसुपमं सर ॥४४५॥ सचे धावित ते चित्तं कामेमुच भवेसु च, लिप्पं निगण्ह सतिया किट्ठाद विय दुप्यमुन्ति ॥४४६॥

ब्रह्मदत्तो थरो

छन्नमतिवस्सति, विवटं नानिवस्सति.
तस्मा छन्नं विवरेष, एवन्तं नातिवस्सति ॥४४७॥
मञ्चुनव्माहतां लोको, जराय परिवारितो,
तण्हासल्लेन ओनिण्णो, इच्छाघूपायितो सदा ॥४४८॥
मञ्चुनव्माहतो लोको परिक्षित्तो जराय च
हञ्ञाति निञ्चमत्ताणो पत्तदण्डो व तककरो ॥४४९॥
आगच्छन्नागिखन्धा व मञ्चुव्याधि जराय तयो
पच्चुग्गन्तु बलं नित्य, जवो नित्य पलायितुं ॥४५०॥
अमोषं दिवमं कियरा अप्पेन बहुकेन वा;
यं यं विजहते रात्त तदूनन्तस्स जीवितं ॥४५१॥
चरतो निहुतो वापि आसीनं सयनस्म वा
जपैति चरिमा रनि, न ते कालो पमण्जितु नित ॥४५२॥

सिरिमयडो थेरो

दिपादको यमसुचि दुग्गन्धो परिहीरति नानाकुणपपरिपूरो विस्सवन्तो ततो ततो ॥४५३॥ मिगं निलीनं कूटेन बिलसेनेन अम्बुजं वानरं विय लेपेन बाघयित्त पुणुज्जनं ॥४५४॥ रूपा सद्दा रसा गन्धा फोटुब्बा च मनोरमा पञ्चकामगुणा एते इत्यि रूपिस्म दिस्सरे ॥४५५॥ ये एता उपसेवित्त रत्तिचित्ता पुणुज्जना, बड्ढेन्ति कटिस घोरं आचिनित्त पुनब्भवं ॥४५६॥ यो वेता परिवज्जेति सप्पस्सेव पदा सिरो सो मं विसत्तिकं लोके सतो समतिवत्तति ॥४५७॥ कामेस्वादीनव दिस्वा नेक्खम्मं दट्टु खेमतो निस्सटो सब्बकामेर्ह, पत्तो मे आसवक्खयो'ति ॥४५८॥

सन्बकामो धरो

उद्दानं

उरुवेळकस्सपो च थेरो तेकिच्छकानि च महानागो च कुल्लो च मालुतो सप्पदासको। कातियानो च मिगजालो जेन्तो सुमनसब्हयो न्हातमुनि ब्रह्मदतो सिरिमण्डो सब्बकामको गाथायो चनुरासीति, थेरा चेत्य चनुद्दसांति

छनिपातो निट्उतो

सत्तनिपातो

अलंकता सुबसना मालधारी विभूसिता
अल्तककतापादा पादुकारयह वेसिका ॥४५९॥
पादुका ओहहित्वान पुरतो पञ्जलिकता
सा मं सण्हेन मुदुना म्हितपुड्यं अभासप ॥४६०॥
युवासि त्वं पञ्चिजतो तिद्वाहि मम सासने,
भुज्ज मानुसके कामे, अहं वित्तं ददामि ते.
सञ्चन्ते पटिजानामि, अग्गिं वा ते हरामहं ॥४६१॥
यदा जिण्णा भविस्साम उभो दण्डपरायना,
उभो पि पञ्चिजस्साम, उभयत्थ कटग्गहो ॥४६२॥
तञ्च दिस्वान याचित्तं वेसिकं पञ्जलीकतं
अलंकतं सुबसनं मञ्जूपासं व ओहितं ॥४६३॥
ततो में. . . (=>६६, २७०) ॥४६४-४६५॥

मुन्दरसमुद्दो यरो

परे अस्वाटकारामे वनसण्डम्हि भहियो समूलं तण्हमब्बूय्ह तत्य महो क्षियायति ॥४६६॥ रमन्तेके मृतिङ्गोहि वीणाहि पणवेहि च अहञ्च रुक्छमूलास्म रतो बुद्धस्स सासने ॥४६७॥ बुद्धो च मे वरं दण्जा सो च लब्भेष मे वरो गण्हेहिं सब्बलोकस्स निच्चं कायगतासति ॥४६८॥ ये मं रूपेन पार्मिसु ये च घोसेन अन्वगृ । छन्दरागवसूपेता न मं जानन्ति ते जना ॥४६९॥ अजझतञ्च न जानाति बहिद्धा च न पस्सति समन्ता वरणो बालो, स वे घोसेन बुय्हति ॥४७०॥ अज्झत्तञ्च न जानाति बहिद्धा च विपस्सिति बहिद्धा फलदस्सावी सो पि घोसेन वुपहति ॥४७१॥ अज्झत्तञ्च पजानाति वहिद्धा च विपस्सिति अनावरणदस्सावी, न सो घोसेन वुपहतीति ॥४७२॥

लकुएटको थेरो

एकपुत्तो अहं आर्स पियो मातृ पियो पितृ बहृहि वतचरियाहि लद्धो आयाचनाहि च ॥४७३॥ ते च मं अनुकम्पाय अत्यकामा हितेसिनो उभो पिता च माता च बुद्धस्स उपनामम् ॥४७४॥ किच्छा लद्धो अय पुत्तो सुखुमालो सुखेधितो इम ददाम ते नाथ जिनस्स परिचारक ॥४७५॥ सत्था च मं पटिग्गय्ह आनन्द एतदब्रवि पब्बाजेहि इमं खिप्पं, हेस्सत्याजानियो अय ॥४७६॥ पब्बाजेत्वान म सत्था विहार पाविसी जिनो; अनोग्गतिंस्म सुरिर्यास्म ततो चित्तं विमुच्चि मे ॥४७॥ ततो सत्या निरंकत्वा पटिसल्लानवृद्धितो एहि मद्दा 'ति मं आह; सा मे आसूपसम्पदा ॥४७८॥ जातिया सत्तवस्सेन लद्धा मे उपसम्पदा; तिस्सो विज्ञा अनुप्यत्ता अहो धम्मसुधम्मता'ति ॥४७९॥

भद्दो थरो

दिस्वा पासावछायामं चक्रकमन्तं नरुत्तम तत्थ न उपसकम्म वित्दस्स पुरिसुत्तम् ॥४८०॥ एक्सं चीवरं कत्या सहरित्यान पाणियो अनुचक्रकमिस्सं विरजं सब्बसत्तानमुत्तमं ॥४८१॥ ततो पञ्हे अपुच्छि मं पञ्हानं कोविदो विदू, अच्छम्मी च अभीतो च ब्याकासि सत्युनो अहं ॥४८२॥ विस्सज्जितेसु पञ्हेसु अनुमोदि तथागतो, भिक्सुसमं विलोकेत्या इम मत्यं अभासथः ॥४८३॥ लामा अक्रगान मगमानं येसायं परिभुञ्जिति चीवरं पिण्डपातञ्च पच्चयं स्थनासनं पच्चुद्वानं च सामीचिं, तेसं लाभांति च बवी ॥४८४॥ अञ्जदग्गे मं सोपाक दस्सनायोपसंकम, एसा चेव ते सोपाक भवतु उपसम्पदा ॥४८५॥ जातिया सत्त वस्सोंह लद्धान उपसम्पदं धारेमि अन्तिमं देहं अहो बम्मसुधम्मता'ति ॥४८६॥

सोपाको थेरो

सरे हत्थेहि भञ्जित्वा कत्वान कृटिमच्छिस, तेन मे सरभङ्गो'ति नामं सम्मृतिया अहु ॥४८७॥ न मयहं कप्पते अज्ज सरे हत्थेहि भिञ्जतुं सिक्खापदा नो पञ्जाता गोतमेन यसस्मिना ॥४८८॥ सकलं समतां रोगं सरभङगो नाइसं पुच्चे, सो'यं रोगो दिद्रो वचनकरेनाति देवस्म ॥४८९॥ येनेव मग्गेन गतो विपस्सी येनेव मग्गेन सिम्बी च वेस्सभू कक्सन्धकोणागमनो च कस्सपो तेनञ्जसेन अगमासि गोतमो ॥४९०॥ बीततण्हा अनाघाना सत्त बुद्धा खयोगघा, ये ह्यं देसितो धम्मो धम्मभूतेहि तादिहि ॥४९१॥ चतारि अरियसच्चानि अनुकम्पाय पाणिनं दुक्ख समुदयो मग्गो निरोधो दुक्ख सखयो ॥४९२॥ यस्मि निब्बत्तते दुक्ख संसारस्मि अनन्तक भेदा इमस्स कायस्स जीवितस्स च सख्या अञ्जो पुनब्भवो नित्य सुविमुत्तो मिह सब्बधीति ॥४९३॥

सरभङ्गो थेरो

उद्दानं

सुन्दर समुद्दो थेरो थेरो रुकुण्टमिट्ट्यो भट्टो थेरो च सोपाको सरमद्रगो महाद्दसिः सत्तके पञ्चका थेरा, गाथायो पञ्चतिसतीतिः

निट्ठितो च सत्तनिपातो

अद्दिनपाती

कम्मं बहुकं न कारये, परिवज्जेय्य जनं न उय्यमे; सो उस्मुको रसानुगिद्धो अत्थं रिञ्चिति यो सुखाधिवाहो ॥४९४॥ पड़कोति हि न अवेदयुं याय वन्दनपूजना कुलेसु, सुखुम सल्ल दुरुब्बह सक्कारो कापुरिसेन दुज्जहो ॥४९५॥ न परस्यु पनिद्धाय कम्मं मञ्चस्स पापकं अत्तना तं न सेवेय्य, कम्मबन्धू हि मातिया ॥४९६॥ न परे वचना चोरो, न परे वचना मुनि; अनानञ्च यथा वेति देवापि नं तथा विदु ॥४९७॥ परे च न विजानन्ति मयमेत्थ यमाममे : ये च तत्थ विजानन्ति ततो सम्मन्ति मेधगा ॥४९८॥ जीवतेवापि सप्पञ्जो अपि वित्तपरिक्लया पञ्जाय च अलाभेन वित्तवापि न जीवति ॥४९९॥ सब्बं सुणाति सोतेन सब्बं पस्सति चक्खुना न च दिट्टं सुतं धीरो सब्बमुज्झितुमरहति ॥५००॥ चक्खमस्स यथा अन्धो, सोतवा बधिरो यथा, पञ्जावऽस्स यथा मूगो, बलवा दुब्बलोरिव, अथ अत्थे समुप्पन्ने सयेथ मतसायिकन्ति ॥५०१॥

महाकचायनो थेरो

सिरिमित्तीथेरो

यदा पटममहिक्त सत्थारमकुतोभय ततो मे अह सवेगो पिस्मत्वा पुरिमूत्तम ॥५१०॥ सिरि हत्थेहि पादेहि यो पणामेय्य आगत, एतादिसं सो मत्थारं आराधेत्वा विराधये ॥५११॥ तदाहं प्रतदारञ्च धनधञ्जञ्च छड्डीय, केसमस्सूनि छेदेत्वा पञ्जीज अनगारियं ॥५१२॥ मिक्कासाजीवसम्पन्नो इन्द्रियेम् मूसंवृतो नमस्समानो सम्बद्ध विहासि अपराजितो ॥५१३॥ ततो में पणिधी आसि चेतमो अभिपन्थितो न निसीदे मुहत्तम्पि तण्हासल्ले अनूहते ॥५१४॥ तस्स मेवं विहरतो पस्स विरियपरकाम तिस्सो विज्जा अनुष्पत्ता कर्त बुद्धस्य सामन ॥५१५॥ पुब्बेनिवामं जानामि, दिब्बचक्त् विमोधित, अरहा दक्किणय्यो 'म्हि विष्पम्तो निरूपधि ॥५१६॥ ततो रत्या विवसने सूरियस्सूग्गमन पति सब्बं तण्हं विसोसेत्वा पल्लब्बनेन उपाविसिन्ति ॥५१७॥

महापन्थको धेरो

उद्दानं

महाकच्चायनो थेरो मिरिमिलो महापन्थको एते अट्टानिपार्ताम्ह, गाथायो चतुवीसतीति अट्टानिपासो निट्टिसो

नवनिपातो

यदा दुक्खं जरामरणन्ति पण्डितो अत्रिह्सु यत्थ मिता पुथुज्जना दुक्खं परिञ्ञाय सतो 'व झार्यात, ततो र्रात परमतरं न विन्दति ॥५१८॥ यदा दुक्लस्सावहान विसत्तिकं पपञ्चसंघाटदुखाधिवाहन तण्ह पहत्वान सतो 'व झायति, ततो रित परमतरं न विन्दित ॥५१९॥ यदा सिव द्वे चतुरङगामिन मग्गुत्तम सब्बिकिलेसमोधनं पञ्जाय परिसत्वा सतो 'व झायति ततो . . ।।५२०।। यदा असोकं विरज असलतं सन्त पद सब्बक्लिससोधन भावेति सङ्गोजनबन्धनिच्छद, ततो . . . ।।५२१॥ यदा नभे गज्जित भेघदुन्दुभि धाराकृला विहद्भगपथे समन्ततो भिक्ख् च पब्भारगतो 'व झायति, ततो . .।।५२२॥ यदा नदीनं कुमुमाकुलानं विचित्तवानेय्यवटसकानं तीरे निसिन्ने सुमनो 'व झार्यात, ततो . . . ।।५२३॥ यदा निसीथे रहिनम्हि कानने देवे गळन्नम्हि नदन्ति दाठिनो भिक्लु च पब्भारगतो 'व झायति, ततो . . . ।।५२४।। पदा वितक्के उपरन्धियत्तनो नगन्तरं नगविवरं समस्मितो बीतहरो विगनिवलो 'व झायति, ततो ...॥५२५॥ यदा सुखी मलिवलसोकनामनो निरमालो निब्बनथो विसल्लो सम्बासवे व्यन्तिकतो 'व झार्यात, ततो रात परमतर न बिन्दतीति ॥५२६॥

भूतो थरो

उद्दानं

भूतो तथहसो थेरो एको खग्गविमाणवा नवकम्हि निपातम्हि गाथायो पि इमानवा 'ति।

नवनिपातो निट्ठितो

दसनिपातो

अङगारिना दानि दमा भदन्ते फलेमिनो छदनं विष्पहाय, ते अच्चिमन्तो व पभासयन्ति, समयो महावीर भगीरसान ॥५२७॥ दुमानि फुल्लानि मनोरमानि समन्तनो सब्बदिमा पवन्ति पत्त पहाय फलमाससाना, कालो इतो पक्कमनाय वीर ॥५२८॥ नेवातिसीत न पनातिउण्ह सुखा उतु अहिनया भदन्ते, पस्सन्त् त साकिया कोळिया च पच्छामूख रोहिणिय नरन्त ॥५२९॥ आसाय कस्सते खेत्तं, बीज आसाय वुप्पति आसाय वाणिया यन्ति समुद्द धनहारका याय आसाय तिद्वामि, सा मे आमा समिज्झत् ॥५३०॥ पुनप्पुनं चेव वपन्ति बीज, पुनप्पुनं वस्सति देवराजा पुनप्पुनं खेतं कसन्ति कस्सका, पुनप्पुन धञ्ञामुपेति रट्ट ॥५३१॥ पुनप्पुन याचनका चरन्ति, पुनप्पुनं दानपती ददन्ति, पुनप्पुनं दानपती ददित्वा पुनप्पुनं सग्गमुपेन्ति ठान ॥५३२॥ बीरो हवे सत्तयुगं पुनेति यम्मि कुले जायति भूरिपञ्जो, मञ्ञामहं सक्कतिदेवदेवो, तथा हि जातो मुनि सच्चनामो ॥५३३॥ सुद्धोदनो नाम पिता महेसिनो, बुहस्स माता पन सायनामा या बोधिसत्तं परिहरिय कुच्छिना कायस्स भेदा ति दिवस्मि मोदित ॥५३४॥ सा गोतमी कालकता इयो चुता दिब्बेहि कामेहि समझगिभूता सा मोदित कामगुणेहि पञ्चिह परिवारिता देवगणेहि तेहि ॥५३५॥ बुद्धस्स पुत्तो 'म्हि असय्हमाहिना अझगीरसस्सप्पटिमस्स तादिना पितु पिता मय्हं तुवं 'सि सक्क, धम्मेन मे गोतम अय्यको 'सीति ॥५३६॥

काकुदायांथरो

पुरतो पच्छतो वापि अपरो चे न विज्जति, अतीव फासु भवति एकस्म वसतो वने ॥५३७॥

हन्द एको गमिस्सामि अरङ्जं बुद्धविणातं फास् एकविहारिस्स पहितत्तस्स भिक्वनो ॥५३८॥ योगिपीतिकरं रम्मं मत्तकुञ्जरमेवितं एको अत्यवसी खिप्पं पविसिस्सामि काननं ॥५३९॥ सुपूष्फितें सीतवने सीतले गिरिकन्दरे गत्तानि परिसिञ्चित्वा चङकमिस्सामि एकको ॥५४०॥ एकाकियो अदितयो रमणीये महावने कदाहं विहरिस्सामि कतिकच्चो अनासवो ॥५४१॥ एवं मे कत्त्कामस्स अधिप्पायो समिज्झतु, साधियस्सामहं येव, नाञ्ञो अञ्ज्ञस्स कारको ॥५४२॥ एम बन्धामि सन्नाहं, पविसिस्मामि काननं, ने ततो नेक्विमस्मामि अपानो आसवक्वयं ॥५४३॥ मालते अपवायन्ते मीते सुर्राभगन्धके अविज्जं दारुयिस्मामि निमिन्नो नगमुद्धनि ॥५४४॥ विने कुमुमसञ्छन्ने पब्भारे नृन मीतले विमृत्तिसूखेन मूखितो रिमस्मामि गिरिब्बजे ॥५४५॥ सो 'ह परिपुण्णमकप्यां चन्दो पन्नरमो यथा मब्बासवपरिक्लीणो नित्य दानि पुनब्भवो 'नि ॥५४६॥

एकविहारियो येरो

अनागन यो पटिगच्च पस्सिनि हिनच्च अत्य अहिनच्च त इय विदेमिनो तस्स हिनेमिनो वा रन्ध न पस्सिन्त समेक्खमाना ॥५४॥। आजापानगती यस्स परिपुण्णा सुभाविना अनुपुब्ब परिचिता यथा बुढेन देमिता, सो 'म लोकं पभासेति अब्भा मुनो व चित्दमा ॥५४८॥ ओदातं वत मे चिनं अप्पमाणं सुभावित निब्बढं पग्महीतच्च सब्बा ओभासते दिमा ॥५४९॥ जीवतेवापि सप्पञ्जो अपि वित्तपरिक्खया, पञ्जाय च अलाभेन वित्तवापि न जीवित ॥५५०॥ पञ्जा सुत्तविनिच्छिनी, पञ्जा किनिसि लोकबढनी पञ्जामहितो नरो इथ अपि दुक्क्षेमु सुकानि विन्दन्ति ॥५५१॥ नाय अज्जतनो धम्मो न च्छेरो न पि अब्भुतो यत्थ जायेष, मायेथ तत्थ कि विय अब्भुतो ॥५५२॥ अनन्तरं हि जातस्स जीविता मरणं धुव, जाता जाता मरन्तीध, एवंधम्मा हि पाणिनो ॥५५३॥ न हेतदत्थाय मतस्स होति यं जीवितत्थ परपोरिसान मतम्हि रुण्णं, न यसो न लोक्य, न विष्णतं समणब्राह्मणंहि ॥५५४॥ चक्क सरीरं उपहन्ति रुण्णं, निहीयती वण्णबल मती च, आनन्दिनो तस्स दिसा भवन्ति, हितेसिनो नास्स सुखी भवन्ति ॥५५५॥ तस्मा हि रुच्छेय्य कुले वसन्ते मधाविनो चेव वहस्मुने च, यस हि एञ्छा विभवेन किच्च तरन्ति नावाय नदि व पुष्णित्त ॥५५६॥

महाकम्पिनो थरो

दन्धा मय्हं गती आसि, परिभूतो पुरे अह भाता च मं पणामेसि, गच्छ दानि तुवं घरं ॥५५७॥ सोहं पणामितो सन्तो मंघारामस्स कोट्टके दुम्मनो तत्थ अट्टासि सासनिस्म अपेक्खवा ॥५५८॥ भगवा तत्थ आगच्छि, सीस मय्ह परामिस, बाहाय म गहेत्वान, सघाराम पवेसिय ॥५५९॥ अनुकम्पाय मे मन्था पादासि पादप्रञ्छनि एतं सुद्ध अधिट्ठेहि एकमन्त स्वधिद्वित ॥५६०॥ तस्माह वचनं मुत्वा विहामि सामने रतो समाधि पटिपादीम उत्तमत्यम्स पत्तिया ॥५६१॥ पुब्वेनिवास जानामि, दिब्बचन्त्व विसोधित तिस्मो विज्ञा अनुष्पता, कत बुद्धस्स मासन ॥५६२॥ सहस्मक्षनमुमत्तानं निम्मिनित्वान पन्थको निसीदि अम्बवने रम्मे याव कालप्पवेदन ॥५६३॥ ततो में सत्था पाहेसि, दूत कालप्पवेदक पवेदितम्हि कालम्हि वेहासानुपर्सकमि ॥५६४॥ वन्दित्वा सत्युनो पादे एकमन्तं निमीदह निसिन्न म विदित्वान अथ सत्था पटिग्गहि ॥५६५॥ आयागो सब्बलोकस्स आहुतीन पटिग्गहो पुञ्जाखेतः मनुस्सानं पटिगण्हित्य दक्षिणन्ति ॥५६६॥

चूलपन्यको यरो

नानाकुलमलसम्पुण्णो महाउक्कारसम्भवो चन्दनिक्कं व परिपक्कं महागण्डो महावणो ॥५६७॥ पुब्बरुहिरसम्पुण्णो गृथकुपे निगाल्हिको आपोपग्घरणी कायो सदा सन्दति पुतिघं ॥५६८॥ सद्भि कण्डरसम्बन्धो मसलेपनलेपितो चम्मकञ्चुकसन्नद्धो पूर्तिकायो निरन्थको ॥५६९॥ अद्रि संघाटघटितो न्हारुसुननिबन्धनो नेकेस सगतिभावा कप्पेति इग्यापय ॥५७०॥ ध्वप्यातो भरणस्स मच्च्राजस्म सन्तिके, इधेत्र छट्टयित्वान येनकामगमो नरो ॥५७१॥ अविज्जाय निवृतो कायो. चत्रान्थेन गन्थितो । ओघससीदनो कायो, अन्सयजालमोत्थतो ॥५७२॥ पञ्च नीवरणे युन्तां, वितर्कतेन समप्पितां, तण्हामूले नान्गता, मोहन्छदनछादितो ॥५७३॥ एवायं वलती कायो कम्मयन्तेन यन्तितो, सम्पत्ति च विपत्यन्ता, नानाभयो विपज्जित ॥५७४॥ ये' मं कायं ममायन्ति अन्धवाला पूष्जना बर्ढेन्तिं कटीस घोर आदियन्ति पूनब्भव ॥५७५॥ ये म काय विवज्जेन्ति गथितिन व पन्नगं, भवमुल विमत्वान पर्गिनिब्बिस्मन्यनासवा ति ॥५७६॥

कप्पो येग

विवित्त अप्पनिग्धोम वाळिमिगनिमेवित सेवे सेनामनं भिवल पटिसल्लानकारणा ॥५७७॥ मकारपुञ्जा आहत्वा सुमाना रिषयाहि च ततो सप्राटिक करवा लूख धारेय्य वीवर ॥५७८॥ नीच मनं करित्वान सपदान कुला कुल पिण्डिकाय चरे भिक्लु गुतदारो सुसवुतो ॥५७९॥ लूखेन पि च सन्तुस्से, नाञ्जा पत्थे रस बहु, रसेसु अनुगिद्धस्स झानेन रमनी मनो ॥५८०॥

विष्क्छो चेव सन्तुट्ठो पविवित्तो वसे मुनि, असंसट्ठो गहट्ठोह अनागारेहि चूभयं ॥५८१॥ यथा जळो च मूगो च अत्तानं दस्सये तथा, नातिवेलं पभासेय्य संघमज्झिहि एण्डितो ॥५८२॥ न सो उपवदे कञ्चि उपघातं विवज्जये : संबुतो पानिमोक्खिम मनञ्जू चस्स भोजने ॥५८३॥ सुग्गटीतिनिमित्तस्स चित्तस्मुपादकोविदो, समय अनुयुञ्जेय्य कालेन च विषस्सनं ॥५८४॥ विरियसातच्चसम्पन्नो युत्तयोगो सदा सिया, न च अप्पत्वा दुक्खस्सन्तं विस्सासमेय्य पण्डितो ॥५८५॥ एवं विहरमानस्स सुद्धिकामस्स भिक्खुनो खीयन्ति आसवा सब्बे निब्बुतिञ्चाधिगच्छतीनि ॥५८६॥

उपसेनो क्झन्तपुत्तो थरी

विजानेय्य सकं अत्यं, अवलोकेय्याय पावचनं, यञ्चेत्य अस्सपटिरूपं सामञ्जां अज्ञपगतस्य ॥५८७॥ मित्त इध कल्याणं सिक्खाविपूलं समादानं सुस्सूसा च गरूनं एतं समणस्स पटिरूपं ॥५८८॥ बद्धेम् सगारवता धम्मे अपचिति यथाभृतं संधे च चित्तिकारेः एतं समणस्स पटिरूपं ॥५८९॥ आचारगोचरे युत्तो आजीवो सोधितो अगारयहो चिनस्स सण्ठपनं एतं समणस्स पटिरूपं ।।५९०।। चारिनं अय वारित्त इरियापथियं पसादनिय अधिचित्तं च अयोगो एतं ॥५९१॥ आरञ्जाकानि सेनासनानि पन्नानि अप्पसद्दानि भजनब्बानि मुनिना एतं.....।।५९२॥ मीलञ्च बाहुसच्वञ्च धम्मानं पविचयो यथाभय सच्चानं अभिसमयो एतं ।।५९३।। भावेय्य अनिच्चन्ति अनत्तसञ्जां असुभसञ्जाञ्च लोकम्हि च अनभिरति एतं . . . ॥५९४॥ भावेय्य च बोज्झक्रगे इद्विपादानि इन्द्रियवलानि अद्रुक्तमग्गमरियं : एतं ।।५९५॥

तण्हं पजहेय्य मुनी, समूलके आसवे पदालेय्य, विहरेय्य विमुत्तो एतं समणस्स पटिरूपन्ति ॥५९६॥

गोतमो थेरो

उद्दानं

काळुदायी न सो थेरो एकबिहारी च कप्पिनी चूळपन्यको कप्पी च उपमेनी च गीतमी सत्तिमे दसके थेरा, गायायो चेत्य सन्ततीत दसनिपातो निद्वितो

एकाद्सनिपाती

किन्तवत्थो वने तात उज्जुहानो व पावुसे वेरम्बा रमणीया ते, पविवेको हि झायिनं ॥५९७॥ यथा अब्भानि वेरम्बो वातो नुदति पाबुसे सआ मे अभिकीरन्ति विवेकपटिसञ्जुता ॥५९८॥ अपण्डरो अण्डसम्भवो सीवधिकाय निकेतचारिको उप्पादयतेव मे सति सन्देहिंस्म विरागनिस्सितं ॥५९९॥ यञ्च अञ्जोन रक्खन्ति यो च अञ्जोन रक्खति, स वे भिक्ख सुन्वं सेति कामेसु अनपेक्खवा ॥६००॥ अच्छोदिका पृथुसिला गोनङगुलमिगायुता अम्बुसेवालसञ्खन्ना ते सेला रमयन्ति मं ॥६०१॥ विसितम्मे अरञ्जोसु कन्दरासु गुहासु च सेनासनेसु पन्तेसु वाळिमगनिसेविते ॥६०२॥ इमे हञ्ञान्तु वञ्झन्तु दुक्खं पप्पोन्तु पाणिनो सकप्य नाभिजानामि अनिरयं दोस संहितं ॥६०३॥ परिचिण्णो मया सत्या, कतं बुद्धस्स सासनं, ओहितो गहको भारो, भवनेत्ति समहता ॥६०४॥ यस्स चत्थाय पञ्जिजितो अगारस्मा अनगारियं. सो मे अत्यो अनुष्पत्तो सब्बसंयोजनक्खयो ॥६०५॥ नाभिनन्दामि मर्णं नाभिनन्दामि जीवितं कालञ्च पटिकड्सलामि निब्बिसं भतको यथा ॥६०६॥ नाभिनन्दामि मरणं नाभिनन्दामि जीवितं कालञ्च पटिकञ्जलामि सम्पजानो पतिस्सतो 'ति ॥६०७॥

संकिच्च धेरो

उद्दानं

संकिच्च घेरो एको व कतकिच्चो अनासवो एकादस निपातम्हि, गाथा एकादसेव ता'ति एकादसनिपातो निट्उतो

द्वादसनिपातो

सीलमेविध सिक्खेथ अस्मि लोके सुसिक्खितं सीलं हि सब्बसम्पत्ति उपनामेति सेवितं ॥६०८॥ सीलं रक्खेय्य मेधावी पत्थयानी तयो सुखे पसंसं वित्तिलाभञ्च पेच्च सग्गे च मोदनं ॥६०९॥ सीलवा हि बहू मिल्ले सञ्ज्ञामेनाधिगच्छति, दुस्सीलो पन मित्तेहि धंसते पापमाचरं ॥६१०॥ अवण्णञ्च अकित्तिञ्च दुस्सीलो लभते नरो वण्णं कित्ति पसंसञ्च सदा लभित सीलवा ।।६११।। आदिसीलं पतिट्ठा च कल्याणानञ्च मातुक पमुखं सञ्बधम्मानं तस्मा सीलं विसोधये ॥६१२॥ वेला च संवरं सीलं चित्तस्स अभिभामनं, तित्यञ्च सब्बबुद्धानं, तस्मा सीलं विसोधये ॥६१३॥ सीलं बलं अप्पटिमं सीलं आयुषमुत्तमं, सीलमाभरणं सेट्टं, सीलं कवचमब्भुतं ॥६१४॥ सीलं सेतु महेसक्खो, सीलं गन्धो अनुत्तरो सीलं विलेपनं सेट्टं येन वाति दिसो दसं ॥६१५॥ सीलं सम्बलमेवग्गं, सीलं पाथेय्यमुत्तमं, सीलं सेट्ठो अतिवाही येन याति दिसो दिनं ॥६१६॥ इधेव निन्दं लभति पेच्चापाये च दुम्मनो सम्बत्य दुम्मनो बालो सीलेसु असमाहितो ॥६१७॥ इधेव कित्ति लभति पेच्च सग्गे च सुम्मनो, सब्बत्य सुमनो धीरो सीलेसु सुसमाहितो ॥५१८॥ सीलमेव इध अग्गं, पञ्जावा पन उत्तमो, मनुस्सेसु च देवेसु सीलपञ्जाणतो जयन्ति ॥६१९॥

सीलक्ल्येरी

नीचे कुलम्हि जातो'हं दिळहो अप्पभोजनो; हीनं कम्मं ममं आसि अहोसि पुष्फछडू को ॥६२०॥ जिगुच्छितो मनुस्सानं परिभृतो च वस्भितो नीवं मन करित्वान वन्दिस्सं बहुकं जनं -।।६२१।। अथ अहसासि सम्बुद्धं भिक्खुसंघपुरक्खत पविसन्तं महावीरं मगधानं पुरुत्तम ॥६२२॥ निक्खिपत्वान ब्याभिक्षग वन्दित् अपसंकींमः; ममेव अनुकम्पाय अट्ठासि पुरिसुत्तमो ॥६२३॥ वन्दित्वा सत्युनो पादे एकमन्तं ठितो तदा पब्बज अहमायाचि सब्बसत्तानमृत्तमं ॥६२४॥ ततो कारुणिको सत्था सब्बलोकानुकम्पको एहि भिक्खु'ति मं आह, सा मे आसुपसम्पदा ॥६२५॥ सो'हं एको अरञ्जास्म विहरन्तो अतन्दितो अकासि सत्युवचनं यथा मं ओवदी जिनो ॥६२६॥ रत्तिया पठमं यामं पुब्बजातिमनुस्सरि, रतिया मज्झिमं यामं दिब्बचक्ख् विसोधित, रित्तया पश्छिमे यामे तमोखन्धं पदार्लीय ॥६२७॥ ततो रत्याविवसने सुरियस्सुग्गमनं पति इन्द्रो ब्रह्मा च आगत्त्वा मं नमस्सिंसु पञ्जलि ॥६२८॥ नमो ते पुरिसाजञ्जा, नमो ते पुरिसूत्तम, यस्स ते आसवा खीणा, दिक्खणेय्यो'सि मारिस ॥६२९॥ ततो दिस्वान मं सत्था देवसंघपुरक्षतं सितं पातुकरित्वान इमं अत्यं अभासय ॥६३०॥ तपेन ब्रह्मचरियेन संयमेन दमेन च एतेन ब्राह्मणो होति, एतं ब्राह्मणमुत्तमन्ति ॥६३१॥

मुणीतो थेरो

उद्दानं

सीलवा च सुणीतो च येरा द्वेते महिद्धिका द्वादसम्हि निपातम्हि, गाथायो चतुवीसतीति द्वादसनिपातो निट्उितो

तेरसनिपावो

याहु रहु समुक्कट्टो रञ्जो अद्भगस्स पद्धगु स्वाज्ज धम्मेसु उब्बंद्वो सोणो दुक्खस्स पारगु ॥६३२॥ पञ्च छिन्दे पञ्च जहे पञ्च चुत्तरि भावये; पञ्च संब्रुगातिगो भिक्ख ओघतिण्णो 'ति वुच्चति ॥६३३॥ उन्नळस्स पमत्तस्स बाहिरासस्स भिक्खुनो सीलं समाधि पञ्जा च पारिपूरि न गच्छति ॥६३४॥ यं हि किच्च तदपविद्धं, अकिच्चं पन कथिरति; उन्नळानं पमत्तानं तेसं वड्ढन्ति आसवा ॥६३५॥ येसञ्च सुसमारदा निच्चं कायगता सति, अकिच्चन्ते न सेवन्ति किच्चे सातच्चकारिनो सतान सम्पजानानं अत्यं गच्छन्ति आसवा ॥६३६॥ उजुमग्गम्हि अन्खाते गच्छथ मा निवत्तय अत्तना चोदयत्तानं, निब्बानं अभिहारये ॥६३७॥ अच्चारद्धम्हि विरियम्हि सत्या लोके अनुतरो वीणोपमं करित्वा मे धम्मं देसेसि चक्लुमा ॥६३८॥ तस्साहं वचनं सुत्वा विहासि सासने रतो समतं पटिपादेसि उत्तमत्यस्स पत्तिया, तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता, कतं बुद्धस्स सासनं ॥६३९॥ नेक्खम्मे अधिमृत्तस्स पविवेकञ्च चेतसो अभ्यापज्ञाधिमुत्तस्स उपादानक्खयस्स च ॥६४०॥ तण्हक्खयाधिमुत्तस्स असम्मोहञ्च चेतसो दिस्वा आयतनुष्पावं सम्मा चित्तं विमुच्चति ॥६४१॥ तस्सा सम्मा विमुत्तस्स सन्तवितस्स भिक्खुनो कतस्स पटिचयो नित्य, करणीयं च विज्ञाति ॥६४२॥

सेलो यथा एक धनो वातेन न समीरति,
एवं रूपा रसा सद्दा गन्धा फस्सा च केवला ॥६४३॥ व इट्ठा धम्मा अनिट्ठा च न प्यवेषेन्ति तादिनो; ठितं चित्तं विसञ्जुनं वयञ्चस्सानुपस्सतीति ॥६४४॥

सोगाो कोळिक्सो थरो

उद्दानं

मोणो कोळिविसोथेरो एको एव महिद्धिको तेरसम्हि निपातम्हि गाथायो चेत्थ तेरसा'ति तेरसनिपातो निद्वितो

चुइसनिपातो

यदा अहं पञ्चिजितो अगारस्मा अनगारियं नाभिजानामि संकष्पं अनिरयं दोससंहितं ॥६४५॥ इमे हञ्ञान्तु वज्झन्तु दुक्खं पप्पोन्तु पाणिनो संकप्पं नाभिजानामि इमस्मि दीघमन्तरे ॥६४६॥ मेत्तञ्च अभिजानामि अप्यमाणं सुभावित अनुपुब्बं परिचित यथा बुद्धेन देसितं ॥६४॥। सब्बमित्तो सब्बसखो सब्बभुतानुकम्पको मेत्तं चिञ्च भावेमि अब्यापज्झरतो सदा ॥६४८॥ असंहीरससंकुष्पं चित्तं आमोदयामहं ब्रह्मविहारं भावेमि अकापुरिससेवितं ॥६४९॥ अवितक्क समापन्नो सम्मासम्बुद्धसावको यरियेन तुण्हिमावेन उपेतो होति तावदे ॥६५०॥ यथापि पब्बतो सेलो अचलो सुप्पतिद्वितो, एवं मोहक्खया भिक्खु पञ्जतीय न वेधति ॥६५१॥ अनङगणस्स पोसस्स निच्चं मुचिगदेसिनो वालग्गमत्तं पापस्स अन्भामत्तं व खायति ॥६५२॥ नगरं यथा पच्चन्तं गुत्तं सन्तरबाहिरं एवं गोपेथ असानं खणे वे मा उपन्चगा ॥६५३॥ नाभिनन्दामि. ।=६०६,६०७) ॥६५४-६५५॥ ' परिचिष्णो. . . (=६०४,६०५) ॥६५६-६५७॥ सम्पादेत्य पमादेन, एसा मे अनुसासनी; हन्दाहं परिनिब्बस्सं, विष्यमुत्तो'म्हि सब्बधीति ॥६५८॥

रवतो थेरो

यथापि भद्दो आजञ्ञो घुरे युत्तो घुरस्सहो मिषतो अतिभारेन संयुगं नातिबत्तति ॥६५९॥

एव पञ्ञाय ये तिता समुद्दो बारिना यथा न परे अतिमञ्ज्ञान्ति, यरियधम्मो'व पाणिन ॥६६०॥ काले कालवसम्पत्ता भवाभववस गता नरा दुक्ख निगच्छन्ति ते'ध सोचन्ति माणवा ॥६६१॥ उन्नता सुखधम्मेन दुक्खधम्मेन ओनता इयेन बाला हय्यन्ति यथाभूत अदिसमनो ॥६६२॥ ये च दुक्खे मुखस्मिञ्च मज्झे सिब्बनिमज्झगू ठिता ते इन्द्रखीलो व, न ते उन्नतओनता ॥६६३॥ न हेव लाभे नालाभे न यसे न च कितिया न निन्दाय पससाय न ते दुक्ख सुखिम्ह च ॥६६४॥ सम्बत्य ते न लिप्पन्ति उदविन्दु व पोक्सरे, सब्बत्य सुखिता बीरा सब्बत्य अपराजिता ॥६६५॥ धम्मेन व अलाभो यो यो च लाभो अधम्मिको अलाभो धम्मिको सेय्यो यञ्चे लाभो अधम्मिको ॥६६६॥ यसो च अप्पबुद्धीन विञ्ञान अयसो च यो अयसो च सेय्यो विज्ञान न यसो अप्पबृद्धिन ॥६६७॥ दुम्मेधेहि पससा च विञ्जाहि गरहा च या गरहा'व सेय्यो विञ्ञाहि यञ्चे बालप्पससना ॥६६८॥ मुखञ्च काममयिक दुक्खञ्च पविवेकिय पविवेकिय दुक्ख सेय्यो यञ्चे काममय सुख ॥६६९॥ जीवितञ्च अधम्मेन धम्मेन मरणञ्च य मरण धम्मिक सेय्यो यञ्च जीवे अधम्मिक ॥६७०॥ कामकोपपहीना ये सन्तचित्ता भवाभवे चरन्ति लोके असिता, नित्य तेस पियापिय ॥६७१॥ भावियत्वान बोज्झक्रगे इन्द्रियानि बलानि च पप्पुय्य परम सन्ति परिनिब्बन्ति अनासवा ति ६७२॥

गोदत्तो थरो

उद्दान

रेक्तो चेव गोदत्तो थेरा ते महिद्धिका चुद्दसम्हि निपातम्हि, गाथायो अटुवीसतीति चुद्दसनिपातो निद्वितो

सोळसनिपातो

एस भिय्यो पसीदामि सुत्वा धम्मं महारसं; विरागो देसितो धम्मो अनुपादाय सब्बसो ॥६७३॥ बहुनि लोके चित्रानि अस्मि पुशु विमण्डले मथेन्ति सङ्को सङ्ककप्यं सुभ रागूपसंहितं ॥६७४॥ रजमुपातं वातेन यथा मेघो पसामये। एवं सम्मन्ति संकप्पा यदा पञ्जाय पस्सति ॥६७५॥ सब्बे संखारा अनिच्चा'ति यदा पञ्जाय पस्सति । अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विमुद्धिया ॥६७६॥ सब्बे संखारा दुक्खांति-सब्बे धम्मा अनत्ता'ति यदा पञ्जाय पस्सति । अथ निब्बिन्दती दुनखे, एस मग्गो विमुद्धिया ॥६७७-६७८॥ बुद्धानुबुद्धी यो थेरी कोण्डञ्ञी तिब्बनिक्लमी। पहीनजातिमरणो ब्रह्मचरियस्स केवली ॥६७९॥ ओघपासी दळ्हो खीलो पञ्चतो दुष्पदालियो; । छेत्वा खीलञ्च पासञ्च मेलं छेत्वान दक्षियं तिण्णो पारंगतो झायी मुत्तो सो मारबन्धना ॥६८०॥ उद्धतो चपलो भिक्खु मित्ते आगम्म पापके । संसीदित महोर्घास्म उम्मिया पटिकृज्जितो ॥६८१॥ अनुद्धतो अचपलो निपको संवृतिन्द्रियो । कल्याणिमत्तो मेघावी दुक्खस्सन्तकरो सिया ॥६८२॥ कालापब्बद्धन मंकासो . . . (=२४३,२४४) ॥६८३-६८४॥ नाभिनन्दामि . . . (=६०६, ६०७) ॥६८५-६८६॥ परिचिण्णो. (==६०४) ॥६८७॥ यस्स चत्थाय पञ्चिजतो अगारस्मा अनगारियं, -सो मे अत्यो अनुष्पत्तो, कि मे सन्दिवहारेना'ति ॥६८८॥

भञ्जाकोग्रहञ्जो थेरो

मनुस्सभूतं सम्बुद्ध अत्तदन्तं समाहितं इरियमानं ब्रह्मपथे चित्तस्युपसमे रतं ॥६८९॥ य मनुस्सा नमस्सन्ति सब्बधम्मान पारगुं देवापि तं नमस्सन्ति, इति मे अरहतो सूतं ॥६९०॥ सञ्जसयोजनातीतं वना निञ्जनमागतं कामेहि निक्खम्मरतं मृतसेला व कञ्चनं ॥६९१॥ स वे अञ्चल रूको नागो हिमवावञ्जो सिल्च्बये, सब्बेसं नागनामान सञ्चनामो अनुत्तरोः ॥६९२॥ नागं वो कित्तयिस्सामि, नहि आगु करोति सो, सोरच्चं अविहिंसा च पादा नागस्स ते द्वे ॥६९३॥ सित च सम्पजञ्ञाञ्च चरणा नागस्स ते परे सद्धाहत्यो महानागो, उपेक्खा सेतदन्तवा ॥६९४॥ सति गीवा, सिरो पञ्जा, वीमसा धम्मचिन्तना, धम्मकुन्छि समावासो, विवेको तस्म वालिध ॥६९५॥ सो झायी अस्सासरतो अज्झत्त सुसमाहितो, गच्छं समाहितो नागो, ठिनो नागो समाहितो ॥६९६॥ सयं समाहितो नागो, निसिन्नो पि समाहितो सब्बत्थ संबुतो नागो, एसा नागस्य सम्पदा ॥६९७॥ भुञ्जति अनवज्जानि, सावज्जानि न भुञ्जति. घासं अच्छादनं लढा सिर्माध परिवज्जय, ॥६९८॥ संयोजन अणु थुल सब्ब छेत्वान बन्धन, येन येनेव गच्छति अनपेक्खोव गच्छति ॥६९९॥ यथापि उदके जातं पुण्डरीक पवड्ढति, नोपलिप्पति तोयेन सूचिगन्धं मनोरम ॥७००॥ तथेव च लोके जातो बुद्धो लोके विहरति, नोपलिप्पति लोकेन तोयेन पदुमं यथा ॥७०१॥ महागिनि पज्जिलतो अनाहारो पसम्मति अङगारेसु च सन्तेसु निब्बुतो'ति पवुच्चति ॥७०२॥ अत्यस्सायं विञ्ञापनी उपमा विञ्जूहि देसिता, विञ्जिसन्ति महानागा नागं नागेन देसितं ॥७०३॥

वीतरागो बीतदोसो वीतमोहो अनासवो स रीरं त्रिजंह नागो परिनिब्बस्सत्यनासवो'ति ॥७०४॥

उदायी थेरो

तत्रुहानं भवति

कोण्डञ्ञो च उदायी च थेरा हेते महिद्धिका सोळसम्हि निपातिम्ह, गांचायो हे च तिस चा'ति

सोळसनियातो निद्वितो

वीसतिनिपातो

यञ्जात्थं वा धनत्थं वा ये हनाम मयं पुरे अवसेमं भयं होति, वेधन्ति विलपन्ति च ॥७०५॥ तस्स ते नित्य भीत्ततं, भिय्यो वण्णो पसीदितः; कस्मा न परिदेवेसि एवरूपे महब्भये ॥७०६॥ नित्थ चेतिसकं दुक्खं अनपेक्खस्स गामणि, अतिक्कन्ता भया सब्बे खीणं सयोजनस्म वे ॥७०७॥ खीणाय भवनेतिया दिट्ठे धम्मे यथातथे न भय मरणे होति भारनिक्खेपने यथा ॥७०८॥ मुचिण्ण ब्रह्मचरियं मे, मग्गो चापि सुभावितो, मरणे मे भयं नत्थि रोगानमिव सखये ।।७०९।। मुचिण्णं बह्मचरियं मे मग्गो चापि सुभावितो, निरस्सादा भवा दिट्ठा, विसं पित्वान छड्डितं ॥७१०॥ पारगू अनुपादानो कतकिच्चो अनासवो तुट्ठो आयुक्खया होति मृतो आघातना यथा ॥७११॥ उत्तमं धम्मतो पत्तो सब्बलोके अनित्यको आदित्ता व घरा मुत्तो मरणस्मि न मोचित ॥७१२॥ यदित्थ संगतं कञ्चि भवो च यत्थ लब्भित, सब्बं अनिस्सरं एतं, इति उत्तं महेसिना ॥७१३॥ यो तं तथा पजानाति यथा बुद्धेन देसितं, न गण्हति भवं किञ्चि मुतत्तं व अयोगुळं ॥७१४॥ न मे होति अहोसिन्ति, भविस्सन्ति न होति मे, संखारा विभविस्सन्ति : तत्य का परिदेवना ॥७१५॥ मुद्धं धम्मसमुप्पादं सुद्धं संखारसन्तर्ति पस्सन्तस्स यथाभूतं न भयं होति गामणि ॥७१६॥

तिणकदूसमं लोकं यदा पञ्जाय पस्सति ममत्तं सो असंविन्दं नित्य मेति न सोचित ॥७१७॥ उक्कण्ठामि सरीरेन, भवेनिम्ह अत्यिको, सो'यं भिष्जिस्सति कायो अञ्जो च न भविस्सति ॥७१८॥ य वो किच्चं सरीरेन त करोध यदिच्छथ. न मे तप्पच्चया तत्थ दोमो पेमं च हेहिति ॥७१९॥ तस्स त वचन सूत्वा अब्भूत लोमहसनं सत्थानि बिक्खिपित्वान माणवा एतदब्रव् ।।७२०।। कि भट्टन्ते करित्वान, को वा आचारियो तव, किस्स सासनमागम्म लभते त असोकता ॥७२१॥ सब्बञ्जा सब्बदस्सावी जिनो आचरियो मम महाकारुणिको सत्था सञ्बलोकतिकिच्छको ॥ ७२२॥ तेनायं देसितो धम्मो खयगामी अनुत्तरो तस्स सासनमागम्म लभते तं असोकता ॥७२३॥ मुत्वान चोरा इसिनो सुभामितं निक्खिप्प, सत्यानि च आवुधानि च तम्हा च कम्मा विरमम् एके, एके च पब्बज्जमरोचियस् ॥७२४॥ ते पब्बजित्वा सूगतस्म सामने भावेत्वा बोज्झङगवलानि पण्डिता उदग्गचित्ता सुमना कतिन्द्रिया फ्सिम्, निब्बानपद असम्बतन्ति ॥७२५॥

अधिमुत्तो थेरो

समणस्स अह विना पारापरियस्स भिक्कुनो एककस्स निसिन्नस्य पविवित्तस्य झायिनो ॥७२६॥ किमानुपुब्ब पुरिसो कि वतं कि समाचारं अत्तनो किच्चकारि 'स्स न च किञ्चि बिहेठये ॥७२७॥ इन्द्रियानि मनुस्सानं हिताय अहिताय च अरिक्खितानि अहिताय रिक्खितानि हिताय च ॥७२८॥ इन्द्रियानेव सारक्षं इन्द्रियानि च गोपयं अत्तनो किच्चकारि'स्स न च किञ्चि बिहेठये ॥७२९॥

चक्खुन्द्रियञ्चे रूपेसु गच्छन्तं अनिवारयं अनादीनवदस्सावी, सो दुक्ला न हि मुच्चित ॥७३०॥ सोतिन्द्रियञ्च सद्देसु गच्छन्त अनिवारय अनादीनवदस्सावी, सो दुक्खा न हि मुच्चति ॥७३१॥ अनिस्सरणदस्सावी गन्धे चे पटिसेवति, न सो मुच्चित दुक्खम्हा गन्धेसु अधिमुच्छितो ॥७३२॥ अम्बलमधुरम्गञ्च तित्तकमामनुस्तर रसतण्हाय गधितो हदय नाव बुज्झति ॥७३३॥ सुभान्यप्पटिकुलानि फोट्टब्बानि अनुस्सरं रत्तो रागाधिकरणं विविध विन्दते दुखं ॥७३४॥ मनञ्चेतेहि धम्मेहि यो न सक्कोति रक्खितु ततो नं दुक्वमन्वेति मब्बेहेतेहि पञ्चहि ॥७३५॥ पुब्बलोहिनसम्पुण्ण बहुस्स कुणपस्स च नरवीर कतं वरगुं ममुगामिव चित्तिनं ॥७३६॥ कट्कं मधुरस्माद पिय निबन्धन दुखं खुर व मधुना लित्त उल्लित नात्र बुज्झित ॥७३७॥ इत्थिरूपे इत्थिरमे फोटुब्बे पि च इत्थिया इत्थिगन्धेसु सारत्तो विविध विन्दते दुल ॥७३८॥ इत्थिसोतानि सब्बानि सन्दन्ति पञ्च पञ्चसु, तेस आवरण कातु यो सक्कोति विरियवा, ॥७३९॥ सो अत्थवा'सो धम्मद्रो, सो दक्खो, सो विचक्खणो करेय्य रममानो हि किच्च धम्मत्थसहित ॥७४०॥ अथो मीदति मञ्जून वज्जे किच्चं निरत्यकं, न त किञ्चन्ति मञ्जित्वा अप्पमत्तो विचक्खणो ॥७४१॥ यञ्च अत्थेन मञ्जूनं या च धम्मगता रति तं समादाय वत्तेथ, स हि वे उत्तमा रित ॥७४२॥ उच्चावचे हुपाये हि परेसमभिजिगीसाति हत्वा वधित्वा अथ सोचियत्वा आलोपति साहसा यो परेसं ॥७४३॥ तच्छन्तो आणिया आणि निहन्ति बलवा यथा इन्द्रियानि, न्द्रियेहेव निहन्ति कुसला तथा ॥७४४॥

सद्धं विरियं समाधिञ्च सितपञ्जाञ्च भावयं पञ्च पञ्चिह हरःवान अनीको याति बाह्यणो ॥७४५॥ सो अत्यवा सो धम्मट्टो कत्वा वाक्यानुसासनिं सब्देन सब्दं बुद्धस्स, सो नरो सुखमेधतीति ॥७४६॥

पारापरियो थेरो

चिररतं वतातापो धम्मं अन्विचिन्तयं सम चित्तस्स नालत्थं पुच्छ समणकाह्मणे ॥७४७॥ को सो परगतो लोके, को पत्तो अमतोगधं, कस्स धम्म पटिच्छामि परमत्थविजाननं ॥७४८॥ अन्तोवज्ञकगतो आसि मच्छो व घसमामिस, बद्धो महिन्दपासेन वेपचित्यासुरो यथा ॥ ७४९॥ अञ्चामि न न म्ञ्चामि अस्मा सोकपरिद्वा को मे बन्ध मुञ्चं लोके सम्बोधि वेदयिस्सिति ॥७५०॥ समणं ब्राह्मण वा कं आदिसन्त पभद्भगुन, करस धम्मं पटिच्छामि जरामच्च्पवाहनं ॥७५१॥ विचिकिच्छाकद्रखागिथत सारमभ्बलसञ्जानं कोधप्पत्तमनत्थद्धं अभिजप्पपदारणं ॥ ७५२॥ तण्हाधनुसमुद्रानं द्वे च पन्नरसायुतं पस्स ओरसिकं बालं भेत्वान यदि ठित ॥ ७५३॥ अनुदिद्विन अप्पहानं सकप्प सरतेजित तेन विद्वो पवेधामि पत्त व मालुतेरितं ॥ ७५४॥ अज्झतं मे ममुद्राय खिष्प पच्चित मामक, छ रुस्सायतनी कायो यत्य सर्ति मञ्जदा ॥७५५॥ त न पस्सामि तेकिच्छं यो मे त सल्लमुद्धरे नाना रज्जेन सत्येन नाञ्जोन विचिकिच्छितं ॥७५६॥ को मे असत्यो अवणो सल्लमब्भन्तरा परसय अहिसं सब्बगत्तानि सल्ल मे उद्धरिस्सति ॥७५७॥ धम्मप्पति हि सो सेट्रो विसदोसपवाहको गम्भीरे पतितस्स मे यलं पाणिव दस्सये ॥७५८॥ रहदे'हं अस्मि ओगाळ्हो अहारियरजमन्तिके माया उस्सुय्यसारम्भ योनमिद्धमपत्यटे ॥७५९॥

उद्धक्तमेघथनितं संयोजनवलाहकं वाहा बहन्ति कुद्दिट्टं संकप्पा रागनिस्सिता ॥७६०॥ सबन्ति सब्बधी सोता, लता उब्भिज्ज तिट्रति; ते सोते को निवारेय्य'तं ळतं को हि छेच्छति ॥७६१॥ बेलं करोथ भइन्ते सोतानं सन्निवारणं, मा ते मनोमयो सोतो स्कलं व सहसा लुवे ॥७६२॥ एवं मे भयजातस्स अपारापारमेसतो ताणो पञ्ञाबुघो सत्था इसिसघनिसेवितो ॥७६३॥ सोपानं सुकतं सुद्धं धम्मसारमयं दळ्ह पादासि बुय्हमानस्म माभायीति च मन्नवि ॥७६४॥ सतिपट्टानपासादं आरुय्ह पञ्चवेक्लिस यन्तं पुब्बे अमाञ्ज्ञिस्सं सक्कायाभिरत पजं ॥७६५॥ यदा च मग्गमद्दक्तिं नावाय अभिक्हन अनिधद्वाय अतानं नित्थमद्दिलमुत्तमं ॥७६६॥ सल्ल अत्तसमुद्रानं भवनेति पभावित एतेसं अप्पवत्ताय देसेसि मग्गमुत्तम ।।७६७।। दीघरत्तानुसयितं चिररत्तपतिद्वितं बुद्धो मे पानुदी गन्धं विसदोसपवाहनो'ति ॥७६८॥

तेलकानि थेरो

पस्स चित्तकतं बिम्बं अरुकायं समुस्सितं आतुरं बहुसंकप्यं, यस्स नित्य घृवं ठिति ॥७६९॥ पस्स चित्तकतं रूप मणिना कुण्डलेन च अद्वितचेन ओनद्धं सह वत्थेहि सोभित ॥७७०॥ अलत्तककता पापा मुखं चुण्णकमिक्वतं अल बालस्स मोहाय नो च पारगवेसिनो ॥७७१॥ अट्ठापदकता केसा, नेता अञ्जन मिक्विता अलं बालस्स मोहाय नो च पारगवेसिनो ॥७७२॥ अञ्जनी'व नवा चित्ता पूर्तिकायो अलंकतो अलं बालस्स मोहाय नो च पारगवेसिनो ॥७७३॥ ओदहि मिगवो पासं, नासादा वाकुरं मिगो; भुत्वा निवापं गच्छाम कत्दन्ते मिगवन्षके ॥७७४॥

छिन्ना पासा मिगवस्स, नासादा वाक्रं मिगो, भत्वा निवापं गच्छाम सोचन्ते मिगलुद्धके ॥७७५॥ पस्सामि लोके सधने मनुस्से, लढ़ान विन्तं न ददन्ति मोहा; लुढा धनं सम्निचयं करोन्ति भिय्यो च कामे अभिपत्थयन्ति ॥७७६॥ राजा पसयह प्यथिव विजेत्वा ससागरन्त महिमावसन्तो ओरं समृहस्स अतितरूपो पारं समुद्दस्स पि पत्थयेथ ॥७७७॥ राजा च अञ्जो च बहु मनुस्सा अवीततण्हा मरणं उपेन्ति; ऊना व हत्वान जहन्ति देह, कामेहि लोकम्हि न हत्यि तिति ॥७७८॥ कन्दन्ति नं ञानि पिकरिय केसे अहो बता नो अमरा'ति चाह, वत्येन न पारुनं नीहरित्वा चित समोधाय ततो दहन्ति ॥ ५७९॥ सो डयुहति मुलेहि तुज्जमानो एकेन वत्थेन पहाय भोगे; न मिय्यमानस्स भवन्ति ताणा जाती च मित्ता अथवा सहाया ॥७८०॥ दायादका तस्स धन हरन्ति. सत्तो पन गच्छति येन कम्म. न मिय्यमानं धनमन्वेति किञ्च पूत्ता च दारा च धनञ्च रद्र ॥७८१॥ न दीघमायु लभने धनेन न चापि वित्तेन जर विद्वन्ति' अप्पञ्हि न जीवितमाह धीरा असम्मत विष्परिणामधम्म ॥७८२॥ अद्धा दलिद्दा च फुसन्ति फस्स, बालो च धीरो च तथेव फट्टो; बालो हि बाल्या विधतो व मेति, घीरो च न वेधति फस्सफुट्रो ॥७८३॥ तस्मा हि पञ्जांब धनेन सेय्यो याय वोसान इधाधि गच्छति.

अन्योसितत्था हि भवाभवेसु पापानि कम्मानि करोन्ति मोहा ॥७८४॥ उपेति गब्भञ्च पदञ्च लोक संसारमापज्ज परम्पराय, तस्सप्पपञ्जो अभिसद्दहन्तो उपेति गढभञ्च परञ्च लोकः ॥७८५॥ चोरो यथा सन्धिमुखं गहीतो सकम्मुना हञ्ञाति पापधम्मो, एवं पजा पेच्च परम्हि लोके सकम्मुना हञ्जाति पापधम्मी ॥७८६॥ कामा हि चित्रा मधुरा मनोरमा विरूपरूपेन मथेन्ति चित्तं: आदीनवं कामगुणेसु दिस्वा तस्मा अहं पब्बजितो'म्हि राजा ॥७८७॥ द्मप्फलानीव पतन्ति माणवा दहरा च वृड्ढा च सरीरभेदा; एतम्पि दिस्वा पब्वजिनो'म्हि राजा अप्पण्णकं सामञ्जामेव सेय्यो ॥७८८॥ मद्धायाहं पब्बजितो उपेतो जिनसासने, अवज्जा मय्ह पन्वजा, अनणो भ्ञ्जामि भोजनं ॥७८९॥ कामे आदित्ततो दिस्वा जातरूपानि सत्थतो गब्भे ओक्कन्तितो दुक्वं निर्पेम् महब्भय. ॥७९०॥ एतमाहीनव दिस्वा मवेग अर्लाभ तदा, मो'हं विद्धो तदा सन्तो सम्पत्तो आवसक्खयं ॥७९१॥ परिचिष्णो. . . . (=६०४) ॥७९२॥ यम्मत्थाय पञ्जाजतो. . . (यस्म ६०५) सब्बम योजनक्खयो'ति ॥७९३॥

रट्डपालो थेरो

ह्मपं दिस्वा सित मुट्ठा पियनिमित्त मनसि करोतो; सीरत्वित्तो वेदेति तञ्च अज्झोम तिट्ठति ॥७९८॥ तस्स बङ्बन्ति वेदना अनेका रूपसम्भवा, अभिज्झा च विहेसा च चित्तमस्मूपहञ्जाति, एवमाचितो दुक्व आरा निब्बान वुच्चति ॥७९५॥ सह सुत्वा सित मुट्ठा . . . (७९४,७९५;) ॥७९६–७९७॥ गन्ध घत्वा. . . . (गन्ध सम्भवा ॥७९८-७९९॥

रसं भोत्वा. (रससम्भवा) 11600-60811 फस्सं फुरस. . . . (फस्ससम्भवा) ॥८०२–८०३॥ धम्मं ञत्वा. . . (धम्मसम्भवा) ॥८०४-८०५॥ न सो रज्जाति रूपेसू; रूपं दिस्वा पतिस्सतो विरत्तचित्तो वेदेति तञ्च नज्झोस तिट्ठति ॥८०६॥ यथास्स पस्सतो रूपं सेवतो वापि वेदनं खिय्यति नोपचिय्यति एवं सो चरती सतो; एवं अपचिनतो दुक्खं सन्तिके निब्बान वृज्यति ॥८०७॥ न सो रज्जिति सहेस्, सह मुत्वा पितस्सतो (.... गन्धे.) स्गन्धं घत्वा. . . . रसेस् रस भोत्वा. . . . फस्सेस् फस्सं फुस्स. . . धम्मेस् धम्म ञात्वा पतिस्सतो) विरत्त चित्तो वेदेति तञ्च नञ्झोस तिद्वृति ॥८०८-८१०॥ 11 395-887-882 यथास्स सुणतो सद्दं (घायतो गन्धं, सायतो रसं, । फुस्सतो फस्सं, विजानतो धम्मं)-सेवतो वापि वेदनं बिय्यति नोपनिय्यति एवं सो चरती सतो; एवं अपचिनतो दुक्खं सन्तिके निब्बान वच्चति ॥८०९,८११,८१३,८१५,८१७॥

मालुक्यपुत्तो थरो

परिपुष्णकायो सुरूचि सुजातो चारुदस्सनो सुवष्णवष्णो'मि भगवा, सुसुक्कदाटो'सि विरियवा ॥८१८॥

नरस्स हि सुजातस्स ये भवन्ति वियञ्जना
सब्बे ते तव कार्यास्म महापुरिसलक्षणा ॥८१९॥
पसन्ननेतो सुमुखो ब्रहा उजु पतापवा
मज्झे समणसंघस्स आदिच्चो व विरोचिस ॥८२०॥
कत्याणदस्सनो भिक्खु कञ्चनसिन्नभत्तचो
किन्ते समणभावेन एवं उत्तमविण्णनो ॥८२१॥
राजा अरहिस भिवतुं चक्कवित रथेसभो
चातुरन्तो विजिताको जम्बुसण्डस्स इस्सरो ॥८२२॥

सत्तिया भोजराजानो अनुयन्ता भवन्ति ते, राजाभिराजा मनुजिन्दो रज्जं कारेहि गोतम ॥८२३॥ राजाहमस्मि सेला'ति भगवा धम्मराजा अनुत्तरी, धम्मेन चक्कं वत्तेमि चक्कं अप्पटिवत्तियं ॥८२४॥ सम्बुद्धो पटिजानासि इति सेलो ब्रह्मणो धम्मराजा अनुत्तरो धम्मेन चक्क वलीम इति भाससि गोतम ॥८२५॥ कोन् सेनापति भोतो सावको सत्युरन्वयो, को इमं अनुवत्तेति धम्भचक्कं पवतितं ॥८२६॥ मया पवतितां चक्कां सेला 'ति भगवा धम्मचक्कमनृत्तरं सारिपुत्ती नुवत्तेति अनुजाती तथागत ॥८२७॥ अभिज्ञोयं अभिज्ञातं भावेतब्बञ्च भावितं, पहातब्बं पहीन मे, तस्मा बुद्धो'स्मि ब्राह्मणं ॥८२८॥ विनयस्मु मयी कड्स्ब, अधिमुच्चस्सु ब्राह्मण दुल्लभं दस्सनं होति सम्बुद्धानं अभिण्हसो ॥८२९॥ येसं वे दल्लभो लोके पातुभावो अभिण्हसो, सो'हं ब्राह्मण बुद्धो'स्मि सल्लकत्तो अनुत्तरो ॥८३०॥ ब्रह्मभूतो अतितुलो मारसेनप्पमहनो सब्बामित्तं वसीकत्वा मोदामि अकुतोभयो ।।८३१॥ इदं भोन्तो निसामेथ यथा भासति चक्खुमा सल्लकत्तो महावीरो, सीहो व नदती वने ॥८३२॥ ब्रह्मभूतं अतितुलं मारसेनप्यमद्दनं को दिस्वा न प्यसीदेय्य अपि कण्हाभिजातिको ॥८३३॥ ये मं इच्छति अन्बेतु, यो वा निच्छति गच्छतुः इघाहं पञ्जिजस्सामि वरपञ्जस्स सन्तिके ॥८३४॥ एतञ्चे रुच्चति भोतो सम्मासम्बद्धसासन मयम्पि पञ्जिजस्साम वरपञ्जास्स सन्तिके ।।८३५।। बाह्मणा तिसता इमे याचन्ति पञ्जलीकता ब्रह्मचरियं चरिस्साम भगवा तव सन्तिके ॥८३६॥ स्वालात ब्रह्मचरियं सेला'ति भगवा सन्दिद्विकमकालिकं यथा अमोघा पञ्चज्जा अप्पमत्तस्स सिक्खतो ॥८३७॥

यन्तं सरणमागम्म इतो अट्टीम चक्खुमा, सत्तरत्तेन भगवा दन्तम्हा तब सासने ॥८३८॥ तुवं बुढो, तुवं सत्या, तुवं माराभिभू मृनि, तुवं अनुसये छेत्वा तिण्णो तारेसि मं पजं ॥८३९॥ उपधी ते समितक्कन्ता, आसवा ते पदालिता, सीहो व अनुपदानो पहीनभयभेरवो ॥८४०॥ भिक्खवो तिसता इमे तिट्टीन्त पञ्जलीकता । पादे वीर पसारेहि, नागा वन्धन्तु सत्थुनो'ति ॥८४१॥

सेलो थरो

या तं मे हित्थगीवाय मुखुमा वन्था पधारिता, सीलीनं ओदनो भुत्तो सुचिमसूपसेचनो ॥८४२॥ सो'ज्ज भद्दो सातितको उञ्छापत्ता गतेरतो झायति अनुपादानो पुलो गोघाय भिद्यो ॥८४३॥ पंसुकूली सातिनको उञ्छापत्तागने रतो झीयति अनुपादानो पुत्तो गोधाय भहियो ॥८४४॥ पिण्डपाती सातिनको-प-तेचीवरी मातिनको-प सपदानचारी-प-एकासनी-प-पत्तपिण्डी ---प ---खलुपच्छाभत्ती---प--आरञ्जिको —प—स्क्लम्लिको—प—अब्भोकासी -प-सोसानिको-प-यथासन्यतिको ---प---नेसज्जिको---प---अप्पिच्छो---प---सन्तुट्टो-प-पविवित्तो-प-असंसट्टो —प—आरद्धविरियो मातितको—प—।।८४५-८६१॥ हित्वा सतपलं कंसं सोवण्ण सनराजिकं अग्गहि मत्तिकापत्तं, इदं दुतियाभिसेचन ॥८६२॥ उच्चे मण्डलिपाकारे दळ्हमट्टालकोट्ट के रिक्सितो लग्गहत्थेहि उत्तसं विहरि पुरे ॥८६३॥ सो'ज्ज भद्दो अनुत्रासी पहीनभयभेरवो झायति वनमोगय्ह पुत्तो गोधाय भिद्दयो ॥८६४॥ सीलक्खन्धे पतिद्वाय सति पञ्जाञ्च भावय पापुणि अनुपुब्बेन सब्बसंयोजनक्खयन्ति ॥८६५॥ महियो काळिगोषाय पुत्तो

गच्छं वदेसि समण ठितो 'म्हि ममञ्च बसि ठितमद्वितो'नि पुच्छामि तं समण एतमत्थंः कस्मा ठितौ त्वं अहमद्भितो'म्हि ॥८६६॥ ठितो अहं अङगुलिमाल सब्बदा सब्बेमु भूतेसु निधाय दण्डं त्वञ्च पाणेसु असञ्जनो'सि तस्मा ठितो'ह त्वमद्वितो'सि ॥८६॥। चिरस्स वत मे महिलो महेसि महावन समणो पच्चपादि; सो'मं चजिस्सामि सहस्सपापं सुत्वान गाथं तव धम्मयुत्तं ॥८६८॥ इत्वेत चोरी असिमावधञ्च मोध्भे पपाते नरके अन्वकासि, अवन्दि चोरो मुगतस्य पादे तत्थेव पब्वज्जिमयाचि बद्ध ॥८६९॥ वड़ो च खो कारुणिको महेमिओ सत्या लोकस्म सदेवकस्स तमेहि भिक्खं ति तदा अवोच, एसेव तस्स अहु भिक्खुभावो ॥८७०॥ यो पूब्बे पमज्जित्वान पच्छा सो न प्पमज्जित, सो'ह लोक पभामेति अब्धा मुत्तो व चन्दिमा ॥८७१॥ यस्म पाप कत कम्म कुमलेन पिथीयति, मो'हं लोकं पभामेति अब्भा मुत्तो व चन्दिमा ॥८७२॥ यो हवे दहरो भिक्ख यञ्जती बद्धमासने, सो'हं लोक पभामेनि अब्भा मत्तो व चन्दिमा ॥८७३॥ दिसा हि मे धम्मकथ मूणन्त्, दिसा हि मे युञ्जन्त बुद्धसासने दिसा हि मे ते मनुस्मे भजन्तु ये धम्ममेवादपयन्ति सन्तो ॥८७४॥ दिसा हि मे खन्तिवादान अविरोधप्पसंसन स्णन्तु धम्म कालेन तञ्च अनुविधीयन्तु ॥८७५॥ न हि जातू सो मम हिमे अञ्जं वा पन कञ्चिन, पप्प्य परमं सन्ति रक्खंय्य तसथावरे ॥८७६॥ उदके हि नयन्ति नेत्तिका, उसुकारा नमयन्ति तेजनं, दारुं नमयन्ति तच्छका, अत्तान दमयन्ति पण्डिता ॥८७॥। दण्डेनेके दमयन्ति अझक्सेहि कसाहि च; अदण्डेन असत्येन अहं दन्तों मिह तादिना ॥८७८॥ अहिंसको ति मे नामं हिंसकस्स पूरे सतो अञ्जाहं सच्चनामो'म्हि न नं हिसामि कञ्चिन ॥८७९॥

चोरो अहं पुरे आसि अझगुलिमालो 'ति विस्सुतो; उयहमानो महोघेन बुद्धं सरणमागम ॥८८०॥ लोहितपाणि पुरे आसि अझगुलिमालो'ति विस्सुतो; सरणागमनं पस्सः; भवनेत्ति समूहता ॥८८१॥ तादिसं कम्मं कत्वान बहुं दुग्गतिगामिनं फुट्टो कम्मविपाकेन अनणो भुञ्जामि भोजनं ॥८८२॥ पमादमनुषुञ्जन्ति बाला दुम्मेधिनो जना, अप्पमादञ्च मेघावी धन सेट्टं व रक्खित ॥८८३॥ मा पमादमनुयुञ्जेष मा कामरतिसन्यवं, अप्पमतो हि झायन्तो पप्पोति परम सुखं ॥८८४॥ स्वागतं नापगतं नेतं दुम्मन्तितं मम; सम्बभत्तेसु धम्मेसु यं सेट्टं तदुपागमं ॥८८५॥ स्वागतं नापगतं नेतं दुम्मन्तितं मम; तिस्सो विज्जा अनुष्पत्ता कतं बुद्धस्स सासनं ॥८८६॥ अरञ्जो रुक्समूले वा पब्बतेमु गुहासु वा तत्थ तत्थेव अट्टासि उब्बिग्गमनसो तदा ॥८८७॥ सुखं सयामि ठायामि सुख कप्पेमि जीवित अहत्थपासो मारस्स; अहो सत्थानुकम्पितो ॥८८८॥ ब्रह्मजञ्चो पुरे आसि, उदिच्चो उभतो अहुं, सो'ज्ज पुत्तो सुगतस्स धम्मराजस्स सत्युनो ॥८८९॥ वीततण्हो अनादानो गुत्तद्वारो सुसंबुतो; अघमूलं विमत्वान पत्तो मे आसवक्खयो ॥८९०॥ परिचिण्णो मया सत्था, कतं बुद्धस्स सासनं, ओहितो गरुको भारो, भवनेनि समृहता'ति ॥८९१॥

अङ्गुलिमालो थेरो

पहाय माता पितरो भिगनीञ्गातिभातरो
पञ्च कामगुणे हित्वा अनुरुद्धी'व झायति ॥८९२॥
समेतो नच्चगीतेहि सम्मताळप्पबोधनो
न तेन सुद्धिमञ्झगमा मारस्स विसये रतो ॥८९३॥
एतञ्च समतिकम्म रतो बुद्धस सासने
सम्बोधं समतिकम्म अनुरुद्धी'व झायति ॥८६४॥

रूपा सद्दा रसा गन्धा फोटूब्बा च मनोरमा एते च समतिक्कम्म अनुरुद्धो'व झायति ॥८९५॥ पिण्डपातपटिककन्तो एको अद्रुतियो मुनि एसति पंसुक्लानि अनुरुद्धी अनामवी ॥८९६॥ विचिनि अग्गही घोवि रजयी धारयी म्नि पसुकूलानि मतिमा अनुरुद्धी अनासवी ॥८९ ॥। महिच्छो च असन्तुद्रो संसद्दो यो च उद्धतो. तस्स धम्मा इमे होन्ति पायका संकिलेसिका ॥८९८॥ सतो च होति अप्पिच्छो मनाद्रो अविधानवा पविवेकरतो विनो निच्चमारद्वयीरियो ॥८९९॥ तस्म धम्मा इमे होन्ति कुमला बोधियपक्किका अनामवी च सो होति, इति वलं महेशिना ॥९००॥ मम सकष्पमञ्जाय सत्था लोकं अनलरे मनोमयेन कायेन इद्धिया उपसक्ति ॥९०१॥ यदा मे अह सकप्गो तना उत्तरि देसिय, निष्पषञ्चरतो बुद्धो निष्पषञ्चमदेसयि ॥१०२॥ तस्साहं धम्ममञ्जाय विहासि मासने रती, तिस्सो विज्जा अनुष्पत्ता कत बुद्धस्स सामन ॥९०३॥ पञ्चपञ्जासबस्सानि यतो नैसज्जिको अहं, पञ्च बीसति वस्सानि यतो मिद्धं समूहतं ॥९०४॥ नाहु अस्सासपस्मासो ठितचित्तस्म तादिने।; अनेजो सन्तिमारक्भ चक्तुमा परिनिक्तुनो ॥९०५॥ असल्लीनेन चित्तेन वेदन अज्झवासिय: पज्जोतस्सेव निब्बान विमोक्खो चेनसो अह ॥९०६॥ एते पच्छिमका दानि मुनिनो फस्सपञ्चमा नाञ्जो धम्मा भविस्सन्ति सम्बुद्धे परिनिब्बुते ॥९०७॥ नित्य दानि पुनावासो देवकायस्मि जालिनि; विक्लीणो जातिसंसारो, नित्य दानि पुनब्भवो ॥९०८॥ यस्स मुहुत्ते सहस्सदा लोको सविदितो, स ब्रह्मकप्भो विस इद्भिगुणे चुतुपपाते काले पस्सति देवता स भिक्खु ॥९०९॥ अन्नमारो पूरे आसि दळिहो धासहारको, समणं पटिपादेसि उपरिट्टं यसस्सिनं ॥९१०॥

सो'म्हि सक्यकुले जातो अनुरुद्धो'ति मं विद्, अपेतो नच्चगीतेहि सम्मताळप्पबोधनो ॥९११॥ अथद्सासि सम्बद्धं सत्थारं अकुतोभयं, तिसम चित्तं पसादेत्वा पञ्जीज अनगारियं ॥९१२॥ पुरुवेनिवासं जानामि यत्य मे उसितं पुरे, तावतिसेसु देवेसु अट्ठासि सक्कजातिया ॥९१३॥ सत्तवखत् मनुस्सिन्दो अहं रज्जमकारीय चातुरन्तो विजितावी जम्बुसण्डस्स ६स्सरो, अदण्डेन असत्येन धम्मेन अनुसासीय ॥५१४॥ इतो सत्त इतो सत्त संयारानि चतुइस निवासमभिजानिस्सं देवलोके ठितो तदा ॥९१५॥ पञ्चिद्धगके समाधिम्ह सन्ते एकोदिभाविते पटिप्पस्मद्भिलद्धम्हि, दिब्बचवर्ष् विमुज्झि मे ॥९१६॥ चुत्तूपपातं जानामि सत्तानं आगति गति इत्थभावञ्जाया भाव झाने पञ्चक्किंगके ठितो ॥९१७॥ परिचिष्णो मया सत्था-प-समृहता ॥९१८॥ वज्जीनं वेळुवगामे अहं जीवितसखया हेट्टतो वेळगुम्बस्मि निब्बायिस्सं अनासवो'ति ॥९२०॥

श्रनिरुद्धो थेरो

समणस्स अहु चिन्ता पुष्कितिम्ह महावने
एकगास्स निसिन्नस्स पविवित्तस्स आियनोः
अञ्ज्ञाथा लोकनाथिम्ह तिट्ठत्ते पुरिमृत्तमे
इरियं आसि भिक्षृतं, अञ्ज्ञाथा दानि दिस्सते ॥९२१॥
सीतवातपरित्तानं हिरिकोपीनछादनं,
मत्तिद्विय अभुञ्जिंसु सन्तुद्वा इतरीतरे ॥९२२॥
पणीतं यदि वा लूखं अप्यं वा यदि वा बहुं
यापनत्यं अभुञ्जिंसु अगिद्धा नाधिमुच्छिता ॥९२३॥
जीवितानं परिक्खारे मेसज्जे अथ पच्चये
न बाळ्हं उस्सुका आसुं यथा ते आसवक्खये ॥९२४॥
अरञ्जे कक्षमूलेसु कन्दरासु गृहासु च
विवेकमनुबृह्न्ता विहिस्सु तप्परायना ॥९२५॥

नीचनिविद्वा सुभरा मुद्र अस्यद्रमानसा अव्यासेका अमुखरा अत्यचिन्तावसानुगा ॥९२६॥ ततो पासादिकं आसि गतं भुत्तं निसेवितं सिनिद्धा तेलधारा व अहोसि डरियापथो ॥९२७॥ सब्बासवपरिक्लीणा महाझायी महाहिता निब्बुता दानि ते थेरा, परित्ता दानि तादिसा ॥९२८॥ कुसलानञ्च धम्मानं पञ्जाय च परिक्लया सब्बाकारबरूपेत लुज्जते जिनसासनं ॥९२९॥ पापकानञ्च धम्मानं किलेसानञ्चयो उत् उपद्विताविवेकाय ये च सद्धम्मसेसका ॥९३०॥ ते किलेसा पवड्ढन्ता आविसन्ति बहुं जन, कीळिन्त मञ्ञो बालेहि उम्मत्तेहि व रक्खसा ॥९३१॥ किलेसेहाभिभुता ते तेन तेन विधाविता नरा किलेसवत्युसु सथगाहे व घोसिते ॥९३२॥ परिच्वजित्वा सद्धम्मं अञ्जामञ्जोहि भण्डरे, दिद्वि गतानि अन्वेन्ता इदं सेय्यो'ति मञ्जारे ॥९३३॥ घनञ्च पुत्तं भरियञ्च छडु यित्वान निमाता कटच्छ्रभिक्सहेतु पि अकिच्चानि निसेवरे ॥९३४॥ उदरावदेहकं भूत्वा सयन्तत्रतानसेय्यका, कथा वदेन्ति पटिबुद्धा या कथा सत्थु गरहिता ॥९३५॥ सञ्बकारक सिप्पानि चित्ति कत्वान सिक्खरे, अवूपसन्ता अज्ञत्तं सामञ्जत्यो'ति अच्छति ॥९३६॥ मित्तकं तेलं चुण्णञ्च उदकासनभोजन गिहीन उपनामेन्ति आकडसन्ता बहुत्तरं ॥९३७॥ दन्तपोणं कपिट्र ञ्च पुष्फखादनियानि च पिण्डपाते च सम्पन्ने अम्बे आमलकानि च ॥९३८॥ वेसज्जेसु यथा वेज्जा, किच्चाकिच्चे यथा गिही, गणिका व विभूसायं, इस्सरे खत्तिया यथा ॥९३९॥ नैकतिका बञ्चितका कृटसक्खी अवादका बहुहि परिकप्पेहि आमिसं परिभुञ्जरे ॥९४०॥ लेस कप्पे परियाये परिकप्पे'नुधाविता जीविकत्या उपायेन संकड्डन्ति बहुं धनं ॥९४१॥

उपहुपेन्ति परिसं कम्मतो नो च धम्मतो, धम्मं परेसं देसेन्ति लामतो नो च अत्थतो ।१९४२॥ संघलामस्स भण्डन्ति सघतो परिवाहिरा, परलाभोपजीवन्ता अहिरिका'व न लञ्जरे ॥९४३॥ नानुयुत्ता तथा एके मुण्डा संघाटिपास्ता सम्भावनं ये विच्छन्ति लाभसक्कारमुच्छिता ॥९४४॥ एवं नानप्यानिम्ह नि दानि सुकर तथा अफुसितं वा फुसितु पुसितं वानुरविखतु ॥९४५॥ यथा कण्डकट्ठानिम्ह चरेय्य अनुपाहनो सितं उपट्रपेत्वान, एवं गामे मुनी चरे ॥९४६॥ सरित्वा पुब्बके योगी तेसं वत्तमनुस्सरं किञ्चापि पच्छिमो कालो फुसेय्य अमतं पर ॥९४७॥ इदं बत्वा सालवने समणो भावितिन्दियो ॥९४८॥ बाह्मणो परिनिब्बायि इसि खीणपुनव्भवो'ति

पारापरियो थरो

उद्दानं

अधिमुत्तो पारापरियो तेलकानि रट्टपालो मालुड्बक्य सेलो भहियो अङगुलि दिब्बचक्खुको पारापरियो दसेते विसम्हि सुपरिकित्तिता, गाथायो देसता होन्ति पञ्चतालीस उत्तरिन्ति

वीसतिनिपातो निद्उतो

तिंसनिपातो

पासादिके वहू दिस्वा भावितत्ते सुसंयुते इसि पण्डरसोगोत्रो अपुच्छि फुस्समव्हयं. ॥९४९॥ किछन्दा किमधिप्पाय किमाकप्पा भविस्मरे अनागतिम्ह कालिम्ह तं मे अक्लाहि पुच्छितो ॥९५०॥ मुणोहि वचनं मय्हं इसि पण्डरसञ्हय, सक्कच्चं उपधारेहि, आचिक्खिस्साम्यनागतं ॥९५१॥ कोधना उपनाही च भक्षी थम्भी सठा बहु इस्सुकी नानाबादा च भविस्मन्ति अनागते ॥९५२॥ अञ्जातमानिनो धम्मे गम्भीरे तीरगोचरा लहुका अगरु धम्मे अञ्जामञ्जामगारवा ॥९५३॥ बाहु आदीनवा लोके उप्पज्जिसन्ति' नागते; सुदेसित इमं धम्मंकिलिसिस्सन्ति दुम्मती ॥९५४॥ गुणहीनापि सघम्हि वोहरन्ति विसारदा वलक्तो भविस्सन्ति मुखरा असमुताविनो ॥९५५॥ गुणवन्तो पि संघम्हि ओरहरन्ता ययत्थतो दुब्बला ते भविस्सन्ति हिरिमना अनित्यका ॥९५६॥ रजतं जातरूपञ्च खेत्तं वथुं अजेळकं दासीदासञ्च दुम्मेघा सादिधिस्मन्ति'नागते ॥९५७॥ उज्झानस्बञ्जनो बाला सीलेसु असमाहिता उन्नळा विचरिस्सन्ति कलहाभिरता मगा ॥९५८॥ उद्धता च भविस्सन्ति नीलचीवरपास्ता; कुहा बद्धा लपा सिद्धगी चरिस्सन्त्यरिया विय ॥९५९॥ तेलसंहेहि केसेहि चपला अञ्ञानिस्वका रिधयाय गम्भिस्सन्ति दन्तवण्यकपारुता ॥९६०॥

अजेगुच्छ विमुत्तेहि सुरतं अरहद्धजं जिगुन्छिस्सन्ति कासावं ओदातेमु समुन्छिता ॥९६१॥ लाभकामा भविस्सन्ति क्सीला हीनवीरिया, किच्छन्ता वनपतानि गामन्तेस वसिस्सरे ॥९६२॥ ये ये लाभं लभिस्सन्ति मिन्छाजीवरता सदा. ते ते च अनसिक्खन्ता भंजिस्सन्ति असंयता ॥९६३॥ ये ये अलाभिनो लाभं, न ते पुज्जा भविस्सरे, सुपेसले पि ते धीरे सेविस्सन्ति न ते तदा ॥९६४॥ मिलक्खरजनं रत्तं गरहन्ता सकं धजं तित्यियानं धज केचि घारेसन्त्यवदातकः ॥१६५॥ अगारवो च कासावे तदा तेस भविस्सति पटिसंखा च कासावे भिक्खूनं न भविस्सति ॥९६६॥ अभिभृतस्स दुक्लेन सल्लविद्धस्स रूप्पतो पटिसंखा महाघोरा नागस्सासि अचिन्तिया ॥९६७॥ छह्न्तो हि तदा दिस्वा सुरतं अरहद्वजं तावदेव भणी गाथा गजो अत्थोपसंहिता ॥९६८॥ अनिक्कसावो कासावं यो वत्थं परिदहिस्सित अपेतो दमसञ्चेन, न सो कासावमरहति ॥९६९॥ यो च वन्तकसावस्स सीलेस् सूसमाहितो उपेतो दमसञ्चेन, स वे कासावमरहति ॥९७०॥ विपन्नसीलो दुम्मेघो पाकटो कामकारियो विब्भन्तिचत्तो निस्सुव्को, न सो कासावमरहति ॥९७१॥ यो च सीलेन सम्पन्नो वीतरागो समाहितो ओदातमनसंकप्यो स वे कासावगरहति ॥९७२॥ उद्भतो उन्नळो वालो सीलं यस्म न विज्जति. ओदातकं अरहति, कासावं कि करिस्सति ॥९७३॥ भिक्ख च भिक्खुनियो च दुर्हचत्ता अनादरा तादीनं मेलिचित्तानं निग्गणिहस्सन्ति'नागते ॥९७४॥ सिक्खापेन्तापि थेरेहि वाला चीवरधारणं न सृणिस्सन्ति दुम्मेघा पाकटा कामकारिया ॥९७५॥ ते तथा सिक्सिता बाला अञ्जामञ्जां अगारवा नादियिस्सन्तुपज्झाये खलुङको विय सारथि ॥९७६॥

एवं अनागतद्वानं पटिपत्ति भविस्सति
भिक्कृतं भिक्कृतीनञ्च पत्ते कालम्हि पिन्छमे ॥९७७॥
पुरा आगच्छते एतं अनागतं महन्भयं
सुम्बना होष सिलला अञ्जानञ्जां सगारवा ॥९७८॥
मेत्त्रांवित्ता कार्रणिका होष सीले सुसंवृता
आरद्धविरिया पहितत्ता निच्चं दाळ्हपरककमा ॥९७९॥
पमादं भयतो दिस्वा अप्पमादञ्च लेमतो
भावेषट्ट क्षिगकं मग्गं फुस्सन्ति अमतं पदं न्ति ॥९८०॥

फुस्सत्थेरो

यथाचारी यथासतो सतिमा यथा संकष्प चरियाय अष्पमत्तो अज्झत्तरतो सुसमाहितत्तो एको सन्तुमितो, तमाह भिक्यं ॥९८१॥ अल्लं सुक्खंञ्च भुञ्जन्तो न वाळह सुहितो सिया, उनुदरो मिताहारो सतो भिक्ख परिब्बजे ॥९८२॥ चतारो पञ्च आलोपे अभुत्वा उदक पिवे, अलं फासुविहाराय पहितत्तस्स भिक्कुनो ॥९८३॥ कप्पियतञ्च आदेति चीवर इदमत्थिकः, अलं फासुविहाराय पहितत्तस्य भिक्खुनो ॥९८४॥ पल्लझकेन निसिन्नस्स जण्णुके नाभिवस्सति, अलं. । १८५॥ यो सुखं दुक्खतो अह, दुक्खं अहक्खि सल्लतो. उभयन्तरेन नाहोसि, केन लोकस्मि कि सिया ॥९८६॥ मा मे कदाचि पापिच्छो कुसीतो हीनवीरियो अप्पस्सुतो अनादरो, केन लोकस्मि कि सिया ।।९८७।। बहुस्सुती च मेघावी सीलेसु मुसमाहितो चेतो समथमनुयुत्तो अपि मुद्धनि तिट्ठतु ॥९८८॥ यो पपञ्चमनुयुत्तो पपञ्चाभिरतो मगो, विराधयी च सो निब्बानं योगक्लेमं अनुत्तर ॥९८९॥ यो च पपञ्च हित्वान निप्पपञ्चपथे रतो, आराधयी सो निब्बान योगक्लेमं अन्तरं ॥९९०॥

गामे वा यदि था'रङको निश्ने वा यदि वा थले. यत्थ अरहन्तो विहरन्ति तं भूमि रामणेय्यक ॥९९१॥ रमणीया अरङ्जानि, यत्थ न रमती जनो, बीतरागा रिमस्सन्ति न ते कामगवेसिनो ॥९९२॥ निधीनं व पवत्तारं यं पस्से वज्जदस्सिनं निग्गयहवादिं मेधावि, तादिसं पण्डितं भजे; तादिसं भजमानस्स सेय्यो होति न पापियो ॥९९३॥ ओवदेय्यानुसासेय्य असब्भा च निवारये, सतं हि सो पियो होति असतं होति अप्पयो ॥९९४॥ अञ्जास्स भगवा बद्धो धम्मं देसेसि चक्ल्मा, धम्मे देसियमानम्हि सोतमोधेलिमत्थिको ॥९९५॥ तम्मे अमोधं सवनं, विमुत्तो'िन्ह अनासवो नेव पुब्बेनिवासाय न पि दिब्बस्स चक्खनो ॥ १९६॥ चेतोपरियायइद्विया चृतिया उपपत्तिया सोतघातुविसुद्धिया पणिधि मे न विज्जति ॥९९७॥ रुक्खमूल व निस्साय मुण्डो सघाटिपारुतो पञ्जाय उत्तमो थेरो उपतिस्सो'व झायति ॥९९८॥ अवितक्कं समापन्नो सम्मासम्बद्धसावको अरियेन तुण्हिभावेन उपेतो होति तावदे ॥९९९॥ यथापि पञ्चतो सेलो अचलो सूपतिद्वितो, एवं मोहक्खया भिक्ख पब्बतीव न वेधति ॥१०००॥ अनद्भगणस्य पोसस्स निच्चं मूचिगवेसिनो वालग्गमत्तं पापस्स अब्भामत्तं व खायति ॥१००१॥ नाभिनन्दामि मरणं नाभिनन्दामि जीवित, निक्खिपस्मं इमं कायं सम्पजानो पतिस्मतो ॥१००२॥ —प—निब्बिसं भतको यथा ॥१००३॥ उभयेन मिदं मरणं एव नामरण पच्छा वा पूरे वा; पटिपज्जय मा विनस्सय, खणो वे मा उपच्चगा ॥१००४॥ नगरं यथा पच्चन्तं गुत्तं सन्तरबहिरं एव गोपेथ अत्तानं, खणो वे मा उपच्चगा, खणातीता हि सोचन्ति नरयम्हि समप्पिता ॥१००५॥

उपसन्तो उपरतो मन्तभाणी अनुद्वतो धुनाति पापके धम्मे दुमपत्तं व मालुतो ॥१००६॥ उपसन्तो—-प— अन्बहि पापके धम्मे दुमएनं व मालुतो ॥१००७॥ उपसन्तो अनायासो विष्पसन्नमनाविलो कल्याणसीलो मेघावी दुक्वस्सन्तकरो सिया ॥१००८॥ न विस्ससे एकतियेमु एवं अगारिसु पब्बजितेमु चापि; साधु पि हुत्वान असाधु होन्ति, असाधु हुत्वा पुन साधु होन्ति ॥१००९॥ कामच्छन्दो च व्यापादो यीनमिद्रञ्च भिक्लुतो उद्रच्यं विचिकिच्छा च पञ्च ते चिनकेलिसा ॥१०१०॥ यस्म सक्करियमानस्म असक्कारेन समाधि न विकम्पति अप्पमादविहारिनो ॥१०११॥ तं भायिनं सानतिकं सुखुमदिद्विविपस्सक उपादानक्खयारामं आहू सप्पुरिसो इति ॥१०१२॥ महासमुद्दो पथवी पब्बतो अनिलो पि च उपमाय न युज्जन्ति सत्यु वरिवमुत्तिया ॥१०१३॥ चक्कानुवत्तको थेरो महाञाणी समाहितो पथवापिंग समानो न रज्जित न दुस्यति ॥१०१४॥ पञ्जापारिमतं पत्तो महाबुद्धि महामुनि अजळो जळसमानो सदा चरति निब्बुतो ॥१०१५॥ परिचिण्णो मया सत्था --प- ॥१०१६॥ सम्पादेथप्पमादेन, एसा मे अनुसासनी; हन्दाह परिनिब्बिस्म, विष्पमुत्तो'म्हि सब्बधीति ॥१०१७॥

सारिप्रतो थरो

पिसुनेन च कोधनेन मच्छरिना च विभूतिनन्दिना सिखतं न करेय्य पण्डितो; पापो कापृरिसेन सगमो ॥१०१८॥ सद्देन च पेसलेन च पञ्जावता बहुस्सुतेन च सिखतं हि करेय्य पण्डितो; भद्दो सप्पुरिसेन संगमो ॥१०१९॥ पस्स चित्तकतं विम्बं—प—॥१०२०॥

बहुस्मुतो चित्तकथी बुढस्स प्ररिचारको पन्नभारो विञ्जुत्तो सेय्यं कप्पेति गोतमो ॥१०२१॥ खीणासवी विसञ्जुत्ती सङगातीती सुनिब्बुती धारेति अन्तिमं देहं जातिमरणपारगु ॥१०२२॥ यस्मि पतिद्विता धम्मा बुद्धस्सादिच्बबन्धुनो निब्बानगमने मग्गे सो'यं तिट्ठति गोतमो ॥१०२३॥ द्वासीति बुद्धतो गण्हि दे सहस्सानि भिक्खुतो चतुरासीति सहस्सानि ये'मे धम्मा पर्वात्तनो ॥१०२४॥ अप्पसुत्तो'यं पुरिसो बलिबद्दो व जीरति ', मंसानि तस्स बड्ढन्ति, पञ्जा तस्स न बड्ढिति ॥१०२५॥ बहुस्युतो अप्पसुतं यो सुतेनाति मञ्जाति, अन्घो पदीपधारो व तथेव पटिभाति मं ॥१०२६॥ बहुस्सुतं उपासेय्य सुतञ्चन विनासये; तं मूलं ब्रह्मचरियस्स; तस्मा धम्मधरो सिया गा१०२७॥ पुब्बापरञ्जू अत्थञ्जू निरूत्तिपदकोविदो सुग्गहीतञ्च गण्हाति अत्यञ्चोपपरिक्खति ॥१०२८॥ बन्त्या छन्दिकतो होति, उस्सहित्वा तुलेति त, समये सो पदहति अज्झनं सुसमाहितो ॥१०२९॥ बहुस्सुतं धम्मधरं सप्पञ्ञां बुद्धसावकं धम्मविञ्ञाणमाकङ्ख तं भजय तथाविध ॥१०३०॥ बहुस्सुतो घम्मधरो कोसारक्लो महेमिनो चक्खु सब्बस्स लोकस्स पूजनेय्यो बहुस्मृतो ॥१०३१॥ धम्मारामी धम्मरतो धम्मं अनुविचिन्तयं धम्मं अनुस्सरं भिक्तु सद्धम्मा न परिहायति ॥१०३२॥ कायमञ्छेरगरुनो हिय्यमाने अनुदुहे सरीरमुखगिद्धस्य कुतो समणकामुता ॥१०३३॥ न यक्खन्ति दिसा सब्बा, घम्मा न पटिभन्ति मं गते कल्याणीमन्तिम्ह अन्धकारं व सायति ॥१०३४॥ अब्भतीतसहायस्स अतीतगतसत्युनो नित्थ एनादिसं मित्तं यथा कायगता सित ॥१०३५॥

ये पुराणा अतीता ते, नवेहि न समेति मे, स्वज्ज एको व झायामि वस्सूपेतीव पक्खिमा ॥१०३६॥ दस्सनाय अतिककन्ते नानावेरज्जके बहु मा वारियत्य सोतारो, पस्सन्तु समयो ममं ॥१०३७॥ दस्सनाय अतिकाती नाना वेरज्जके पृथ् करोति सत्या ओकासं न निवारेति चक्खमा ॥१०३८॥ पण्णवीसति वस्सानि सेखभूतस्स मे सतो न कामसञ्ज्ञा उप्पण्जि, पस्त धम्मसूधम्मतं ॥१०३९॥ पण्णवीसति वस्सानि सेखभूतस्स से सतो न दोससञ्जा उपज्जि, पस्स धम्मसुधम्मतं ॥१०४०॥ पण्णवीसति वस्शानि भगवन्तं उपद्राह मेत्तेन कायकम्मेन-मेत्तेन विचकम्मेन-मे-त्तेन मनोकम्मेन छाया व अनुपायिनी ॥१०४१॥ बुद्धस्स चद्धकमन्तस्स पिट्टि तो अनुचद्धकमिं, १०४३॥ धम्मे देसियमानम्हि जाणं मे उदयज्जय ॥१०४४॥ अह सकरणीयो'म्हि सेखो अप्पत्तमानसो, सत्यु च परिनिब्बान यो अम्हं अनुकम्पको ॥१०४५॥ तदासियं भिसनकं, तदासि लोमहंसनं सब्बाकारवरूपेते सम्बद्धे परिनिब्ब्ते ॥१०४६॥ बहुस्सुतो धम्मधरो कोसारक्को महेसिनो चक्खु सब्बस्स लोकस्स आनन्दो परिनिब्बतो ॥१०४७॥ बहुस्सूतो धम्मधरो-प-अन्धकारे तमोनुदो, गतिमन्तो सतीमन्तो धितिमन्तो च यो इसि ॥१०४८॥ सद्धम्माधारको थेरो आनन्दो रतनाकरो ॥१०४९॥ परिचिष्णो मया सत्था--प--।।१०५०।।

श्रानन्दो थरो

उद्दानं

फुस्सो उपतिस्सो आनन्दो तयो'ति मे पिकत्तिता; गाथायो तत्थ संस्नाता सतं पञ्च च उत्तरीति. तिसनियातो निद्वितो

चत्तालीसनिपातो

न गणेन पुरक्खतो चरे, विमनो होति, समाधि दुल्लभो; नानाजनसगहो दुक्खो इति दिस्वान गणं न रोचये ॥१०५१॥ न कुलानि उपब्बजे म्नि, विमनो होति, समाधि दुल्लभो; सो उस्सुको रसानुगिद्धो अत्थं रिञ्चित यो सुखावहो ॥१०५२॥ पद्भको 'ति हि जं अवेदयुं यायं वन्दनपूजना कुलेसु, सुखुम सल्लं दुरुब्बहं, सक्कारो कापुरिसेन दुज्जहो ॥१०५३॥ सेनासनम्हा ओरुय्ह नगरं पिण्डाय पावितिं, भुज्जन्तं पुरिसं कुर्ट्ाठ सक्कच्चं तं उपट्टीह ॥१०५४॥ सो तं पक्केन हत्थेन आलोपं उपनामयि; आलोपं पक्खिपन्तस्स अङगुली पेत्य छिज्जय ॥१०५५॥ कुड्डमूलञ्च निस्साय आलोपना अभुञ्जिम, भुञ्जमाने च भत्ते वा जेगुच्छं मे न विज्जति ॥१०५६॥ उत्तिद्विपण्डो आहारो पूर्तिमत्तञ्च ओसध सेनासनं रुक्खमूलं पसकूलञ्च चीवरं : यस्सेते अभिसम्भुत्वा स वे चातुदिस्सो नरो ॥१०५७॥ यत्थ एके विहञ्जान्ति अरुहन्ती मिलुच्चयं तस्स बुद्धस्स दायादो सम्पजानो पतिस्सतो इद्धिबलेनुपत्थद्धो कस्सपो अभिरूहति ॥१०५८॥ पिण्डपातपटिक्कन्तो सेलमारुय्ह कस्सपो झायति अनपादानो पहीनभयभेरवो ॥१०५९॥ पिण्डपानपटिक्कन्तो मेलमारुयृह करसपो झायति अनपादानो डय्हमानेसु निब्बुतो ॥१०६०॥ पिण्डपातपटिक्कन्तो सेलमारुयृह कस्सपो झायति अनपादानो कतिकच्चो अनासवो ॥१०६१॥

करेरिमालावितता भूमिभागा मनोरमा कुञ्जराभिरुद्धा रम्मा ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६२॥ नीलब्भवण्णा हिचरा वारिसीता सुचिन्घरा इन्दगोपकसञ्ख्या ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६३॥ नीलब्भक्टसदिमा कुटागारवरूपमा बारणाभिरुदा रम्मा ते सेला रमयन्ति म ॥१०६४॥ अभिवृद्रा रम्मतला नगा इसिभि सेविता अब्भुन्नदिता सिखीहि ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६५॥ अलं शायितुकामस्स पहितत्तस्स मे सतो, अलं मे अत्यकामस्स पहितत्तस्स भिक्खुनी; ॥१०६६॥ अल में फासुकामस्स पहितत्तस्स भिक्खुनो; अल मे योगकामस्स पहिनत्तस्स तादिनो ॥१०६७॥ उम्मापुष्फवसमाना गगना वब्भछादिता नाना दिजगणाकिण्णा ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६८॥ अनाकिण्या गहट्ठेहि मिगसंघनिसेविता नानादिजगणाकिण्णा ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६९॥ अच्छोदिका (--११३, ६०१) ॥१०७०॥ न पञ्चङगिकेन तुरियेन रित मे होति तादिसी यथा एक गचित्तस्स सम्मा धम्म विपस्सतो ।।१०७१॥ कम्मं बहक (=४९४) ॥१०७२॥ कम्मं बहुक न कारये, परिवज्जेय्य अनत्थनेय्यमेतं किच्छति कायो किलमति, दुक्खितो सो समय न विन्दित ॥१०७३॥ ओट्रपहतमत्तेन अत्तानं पि न पस्सति, पत्थद्भगीवो चरति, अहं सेय्यो 'ति मञ्जाति ॥१०७४॥ असेय्यो सेय्यसमानं बालो मञ्जाति अत्तानं. न तं विज्ञा पसंसन्ति पत्यद्धमनसं नरं ॥१०७५॥ यो च सेय्यो 'हं अस्मीति, नाहं सेय्यो 'ति वा पुन, हीनो 'हं सदिसो वा 'ति विघास न विकम्पति ॥१०७६॥ पञ्ञावन्तं तथावादि सीलेस् सुसमाहितं चेतो समयसंयुत्तं तञ्च विञ्ञा पसंसरे ॥१०७७॥ यस्स सब्बद्धाचारीस् गारवो नुपलक्शति, बारका होति सद्धम्मा नभसो पुथवी यथा ॥१०७८॥

येसञ्च हिरिओत्तप्यं सदा सम्मा उपद्वितं, विश्वहब्रह्मचरिया, तेसं खीणा पुनव्भवा ॥१०७९॥ उद्धतो चपलो भिक्खु पंसुकुलेन पारुतो कपि व सीहचम्मेन न सो तेनुपसोभित ॥१०८०॥ अनद्भतो अचपलो निपको संवृतिन्द्रियो सोभति पंसुकुलेन सीहो व गिरिगब्भरे ॥१०८१॥ एते सम्बहुला देवा इद्धिमन्तो यसस्सिनो दस देवसहस्सानि सब्बे ते ब्रह्मकायिका ॥१०८२॥ धम्मसेनापति धीरं महाझायि समाहितं सारिपुत्तं नमस्सन्ता तिट्ठन्ती पञ्जलीकता ॥१०८३॥ नमो ते पुरिस्साजञ्जा, नमो ते पुरिसूत्तम, यस्स ते नाभिजानाम य पि निस्साय झार्यात ॥१०८४॥ अच्छेरं वत बृद्धानं गम्भीरो गोचरो सको, ये मयं नाभिजानाम वालवेधी समागता ॥१०८५॥ तं तथा देवकायेहि पूजितं पूजनारहं सारिपुत्तं तदा दिस्वा कप्पिनस्स सितं अह ॥१०८६॥ यावता बुद्धस्तेत्तम्हि ठापयित्वा महामुनि षुतगणे विसिट्ठो 'हं सदिसो मे न विज्जति ॥१०८७॥ परिचिण्णो मया सत्था--प--।।१०८८।। न बोबरे न सयने भोजने नुपलिप्पति गोतमो अनप्पमेय्यो मुळालिपूप्पं विमलं व अम्बुना निक्खम्मनिन्नो तिभवाभिनिस्सटो ।।१०८९।। सतिपद्भानगीवो सो सदाहत्थो महामनि पञ्जासीसो महाञाणी सदा चरति निब्बतो 'ति ॥१०९०॥

महाकस्सपो थेरो

उद्दानं

चतालीस निपातम्हि महाकस्सपसव्हयो एको 'व थेरो, गाथायो चत्तालीस दुवे 'पि चा 'ति **चतालीसनिपासो विदितो**

पञ्जासनिपातो

कदा नु 'हं पञ्चतकन्दरासु एकाकियो अव्दुतियो विहस्सं अनिच्चतो सब्बभवं विपस्सं, तं मे इदं तं नु कदा भविस्सति ॥१०९१॥ कदा नु 'हं भिन्नपटन्घरो मुनि कासाववत्थो अममो निरासयो रागञ्च दोसञ्च तथेव मोहं हन्त्वा सुखी पवनगतो विहस्सं ॥१०९२॥ कदा अनिच्चं वधरोगनीळं कायं इमं मच्चुजरायुपद्दुतं विपस्समानो बीतभयो विहस्सं एको बने तं नु कदा भविस्सति ॥१०९३॥ कदा नु 'हं भयजनिन दुक्खावहं तण्हालतं बहुविधानुवक्तिन पञ्ञामयं तिखिणमीस गहेत्वा छेत्वा वसे, तिम्प कदा भविस्सति ॥१०९४॥ कदा नु पञ्ञामयमुग्गतेजं सत्तं इसीनं सहसादियित्वा मारं ससेनं सहसा भिञ्जस्सं सीहासने, तं नु कदा भविस्सति ॥१०९५॥ कदा नु 'हं सब्भि समागमेसु दिट्ठो भवे घम्मगरूहि तादिहि यथा वदस्सीहि जितिन्द्रियेहि पधानियो तं नु कदा भविस्सति ॥१०९६॥ कदा न मं तन्द्रिखुदापिपासा वातातपा कीटसिरिसपा वा निबाधियस्सन्ति न तं गिरिब्बजे अत्तत्थियं, तं नु कदा भविस्सति ॥१०९७॥ कदा नु खो यं विदितं महेसिना चत्तारि सच्चानि सुदुइस्सानि समाहितत्तो सतिमा अगच्छं पञ्जाय तं, तं नु कदा भविस्सति ॥१०९८॥ कदा नृ रूपे अमिते च सद्दे गन्धे रसे फुसितब्बे च धम्मे आदित्ततो 'हं समयेहि युत्तो पञ्जाय दुक्खं, तदिदं कदा मे ॥१०९९॥ कदा नु 'हं दुब्बचनेन वुत्तो ततो निमित्तं विमनो न हेस्सं, अयो पसट्ठो पि ततो निमित्तं तुट्ठो न हेस्सं, तदिदं कदा मे ॥११००॥ कदा नु कट्ठे च तिणे लता च खन्धे इमे 'हं अभिते च धम्मे अज्झत्तिकानेव च बाहिरानि च समं तुलेय्यं तदिदं कदा में ॥११०१॥ कदा नु मं पावुसकालमेघो नवेन तोयेन सचीवरं वने इसिप्पयातम्हि पथे वजन्तं ओवस्सते, तं नु कदा भविस्सति ॥११०२॥

कदा मयूरस्स सिम्बण्डिनो वने दिजस्स सुत्वा गिरिगब्भरे रुतं पच्चुट्रहित्वा अमतस्स पट्टिया संचिन्तये, तं नु कदा भविस्सति ॥११०३॥ कदा नु गद्धगं यमुनं सरस्सति पातालखित्तं बळवामुखञ्च असज्जमानो पतरेय्यमिद्धिया विभिसनं, तं नु कदा भविस्सति ॥११०४॥ कदा नु नागो व संगामचारी पदालये कामगुणेसु छन्दं निब्बज्जयं सब्बसुभं निमित्तं झाने युतो, तं नु कदा भविस्सति ॥११०५॥ कदा इणट्टो व दळिट्को निभि आराधियत्वा धनिकेहि पीळितो नुट्ठो भविस्सं अधिगम्म सासनं महेसिनो, तं नु कदा भविस्सित ॥११०६॥ बहूनि वस्सानि तयाम्हि याचितो अगारवासेन अल नु ते इदं; तं दानि मं पब्बजितं समान कि कारणं चित्तं तुवं न युञ्जिस ।।११०७।। ननु अहं चित्त तयाम्हि याचितो गिरिब्बजे चित्रछदा विहद्भगमा महिन्दघोसत्यनिताभिगज्जिनो ते तं रिमस्सन्ति वनम्हि झायिनं ॥११०८॥ कुलिम्ह मित्ते च पिये च ञातके खिड्डारित कामगुणञ्च लोके सब्बं पहाय इदमज्झुपागतो, अयो पि त्वं चित्त न मय्ह नुस्सिस ॥११०९॥ ममेव एतं नहि तं परेसं, सन्नाहकाले परिदेवितेन कि सब्बमिदं चलं इति पेक्लमानो अभिनिक्लाम अमतं पदं जिगीसं ॥१११०॥ सुबुत्तवादी द्विपदानमुत्तमो महाभिसक्को नरदम्मसारथि चित्तं चलं मक्कटसिन्नभं इति अवीतरागेन सुदुन्निवारियं ॥११११॥ कामाहि चित्रा मधुरा मनोरमा अविद्मू यत्य सिता पृथुज्जना ते दुक्खिमच्छन्ति पुनब्भवेसिनो चित्तेन नीता निरये निरंकता ॥१११२॥ मयूरकोञ्चाभिरुदम्हि कानने दीवीहि ब्यग्बेहि पुरक्खतो वसं काये अपेक्लं जह मा विराये इतिस्सु मं चित्तपुरे नियुञ्ञासि ॥१११३॥ भावेहि झानानि च इन्द्रियानि च बालानि बोज्झङ्गसगाधिभावना तिस्सो च विज्जा फुस बुद्धसासने इतिस्सु मं चित्त पुरे नियुञ्जिस ॥१११४॥ भावेहि मग्गं अमतस्स पत्तिया निय्यानिकं सब्बद्क्खखयोगधं अत्यद्भगिकं सञ्बिकलेससोधनं इति स्यु...॥१११५॥ दुक्खन्ति खन्धे पटिपस्स योनिसो, यतो च दुक्खं समुदेति तं जह, इभेव दुक्खस्स करोहि अन्तं इति स्मु...॥१११६॥ अनिच्चं दुक्खन्ति विषस्स योनिसो सुञ्ञं अनता 'ति अधं वधन्ति च, मनोविचारे उपरुन्धि चेतसो, इति स्सु ...।।१११७।। मुण्डो विरूपो अभिसापमागतो कपालहत्थो 'व कुलेसु भिक्खसु, ं युञ्जस्सु सत्थु वचने महेसिनो, इति स्सु ...।।१११८।।

मुसंवृतत्तो विसिखन्तरं चर कुलेमु कामेमु असङगमानसो चन्दो यथा दोसिनपुण्णमासिया इति म्सु ...।।१११९॥ आरञ्जिको होति च पिण्डपातिको, मोसानिको होति च पंसुकृतिको, नेसज्जिको होति सदा धुते रतो इति स्यु ... ॥११२०॥ रोपेत्वा रक्खानि यथा फलेसी मूले तरुं छेतु तमेव इच्छसि, तथूपमं चित्त इदं करोसि यं मं अनिच्चम्हि चले नियुञ्जसि ॥११२१॥ अरूपदूरंगम एकचारि न ते करिस्सं वचनं इदानि 'ह, दुक्ला हि कामा कटुका महब्भया, निब्बानमेवाभिमनो चरिस्स ॥११२२॥ नाहं अलक्ब्या अहिराकताय वा न चित्त हेतू न च दूरकन्तना आजीवहेतू च अहं न निकर्वाम, कतो च ते चित्त पटिस्सवो मया ॥११२३॥ अप्पिच्छता सप्पृरिसेहि विश्विता मक्खप्पहान बूपसमी दुक्खस्स इति स्सुमं चित्त तदा नियुञ्जसि, इदानि त्व गच्छसि पुब्बचिष्ण ॥११२४॥ तण्हं अविज्जञ्च पियापियञ्च मुभानि रूपानि मुखा च वेदना मनापिया कामगुणा च वन्ता, वन्ते अह आगमितु न उस्सहे ॥११२५॥ सब्बत्य ते जित्त वची कर्त मया, बहुसु जातिसु न मे 'सि कोपितो अज्झत्तसम्भवो कतञ्ञुताय ते, दुक्खे चिरं सर्सारत तया करे ॥११२६॥ त्वञ्ञोव नो चित्त करोसि ब्राह्मणो त्व खत्तिया राजदिसी करोसि, वेस्सा च सुद्दा च भवाम एकदा, देवत्तनं वापि तवेव वाह्सा ॥११२७॥ तवेव हेतू असुरा भवामसे, त्वंमूलकं नेरियका भवामसे, अथो तिरच्छानगतापि एकदा, पेतत्तनं वापि तवेव वाहसा ॥११२८॥ न नून दुब्भिस्सिस म पुनप्पुनं मुहु मुहु वाराणकं व दस्सहं; उम्मत्तकेनेव मया पलोभासः; किञ्चापि ते चित्त विराधित मया ॥११२९॥ इदं पुरे..... (=७७) ॥११३०॥ सत्था च मे लोकिमम अधिद्वहि अनिच्चतो अद्भुवतो असारतो; पक्खन्द म चित्त जिनस्स सासने, तारेहि ओघा महती सुदुत्तरा ॥११३१॥ न ते इदं चित्त यथा पुराणकं, नाह अलं तुय्ह बसे निवतित्; महेसितो पब्बजितो 'म्हि सासने, न मादिसा होन्ति विनासधारिनो ॥११३२॥ नगा समुद्दा सरिता वसुन्धरा दिसा चतस्सा विदिसा अधोदिसा सब्बे अनिच्ना तिभवा उपद्दुता, कुहिं गतो चित्त सुखं रीमस्ससि ॥११३३॥ धी घी परं कि मम चित्त काहसि, न ते अल चित्त वसानुवत्तको न जातु भस्तं दुभतो मुखं छुपे, धिरत्थु पूरं नवसोतसन्दिन ॥११३४॥

वराहणेय्यविगाळ्हसेविते पब्भारक्टे पकटे 'व सुन्दरे नवम्बुना पावुससित्तकानने तर्हि गुहा गेहगतो रिमस्ससि ॥११३५॥ सुनीलगीवा सुसिखा सुपेखुणा सुचित्तपत्तच्छदना विहंगमा सुमञ्जू घोसत्य निताभिगज्जिनो ते तं रमिस्सन्ति वनम्हि झायिनं ॥११३६॥ उट्टम्हि देवे चतुरङ्गुले तिणे सम्पुष्फिते मेघनिभम्हि कानने नगन्तरे विटिपसमो सियस्सं, तं मे मुदु होहिति तूलसिन्न ॥११३७॥ तथा तु कस्सामि यथापि इस्सरो; यं लब्भती तेन पि होतु में अलं; तं त करिस्सामि यथा अतन्दितो बिळारभस्तं व यथा सुमहितं ॥११३८॥ तथा तु कस्सामि यथापि इस्सरो, यं लब्भती तेन पि होतु मे अलं विरियेन त मय्ह वसानियस्सं गजं व मत्तं कुसलंङकुसग्गहो ॥११३९॥ तया सुदन्तेन अवद्वितेन हि हयेन योग्गाचरियो व उज्जुना पहोमि मग्गं पटिपज्जित् सिव चित्तानुरक्लीहि सदानुसेवितं ॥११४०॥ आरम्मणे त बलसा निबन्धिसं नागं व थम्भिम्ह दळ्हाय रज्जुया, तं में सु गुत्त सतिया सुभावितं अनिस्मित सब्बभवेसु हेहिसि ॥११४१॥ पञ्ञाय छत्वा विषयानुसारिनं योगेन निगयुह पर्ये निवेसिय दिस्वा समुदयं विभवञ्च सम्भवं दायादको हेहिसि अगगवादिनो ॥११४२॥ चतुब्बिपल्लासवस अधिद्रितं गामण्डलं व परिनेसि चित्त म ननु सञ्जोजनबन्धनच्छिदं संसेवसे कारुणिक महाम्नि ॥११४३॥ मिगो यथा सेरि सुचित्तकानेन रम्मं गिरि पाविसि अब्भमालिन, अनाकुले तत्थ नगे रिमस्ससि, असमयं चित्तपराभविस्ससि ॥११४४॥ ये तुप्ह छन्देन बसेन बत्तिनो नरा च नारी च अन्भोन्ति यं सुखं, अविद्यु मारवसानुवत्तिनो भवाभिनन्दी तव चित्त सेवका 'ति ॥११४५॥

तालपुटो थेरो

उद्दानं

पञ्ञासम्हि निपातम्हि एको तालपुटो सुचि, गायायो तत्य पञ्ञास पुन पञ्च च उत्तरी'ति ।

पञ्जासनिपातो समत्तो

सडिकनिपाती

आरञ्जाका पिण्डपातिका उञ्छापतागतेरता दालेमु भच्चुनो सेनं अज्झत्तं मुसमाहिता ॥११४६॥ आरञ्जाका पिण्डपानिका उञ्छापसागतेरता धुनाम मच्चुनो सेनं नळागारं व कुञ्जरो ॥११४७॥ रुक्लमूलिका सातिका उज्छापनागर्व रता दालेम् मुसमाहिता ॥११४८॥ रुक्खमूलिका . .सान उञ्छ र धुनाम. कुञ्जरो ॥११४९॥ अद्विकङ्कलकृटिको मंसन्हारूपसिब्बिन धिरत्थु पूरे दुग्गन्धं परगत्ते ममायसे ॥११५०॥ गूथभस्ते तचोन द्धे उरगण्डिपसाचिनि नन सोतानि ने काये यानि सन्दित सञ्बदा ।।११५१।। तव सरीरं नवसोतं दुग्गन्धं किंग्परिबन्ध, भिस्कुर्गारवज्जयेते तं मीत्र्द्ह व यथा सुचिकामो ॥११५२॥ एवञ्चे त जनो ञञ्जा यया जानामि तं अहं, आरका परिवज्जेय्य गूथट्वानं व पावुमो ।।११५३।। एवमेतं महावीर यथा समण भासिस, एत्धचेके विसीदन्ति पद्मकिम्ह् व जरगावो ॥११५४॥ आकासम्हि हलिद्दाय यो मञ्जोध रजेतवे अञ्जोन वापि रङ्गेन, विघातुदयमेव त ॥११५५॥ तदा काससमं चित्तं अज्ञत्त सुसमाहित, मा पापचित्ते आहरि अग्गिक्खन्धं व पक्लिमा ॥११५६॥ पस्स चित्तकतं बिम्बम्--प--।।११५७।। तदासिय भिसनकं, तदासि लोमहसनं अनेकाकारसम्पन्ने सारिपुत्तम्हि निब्बुते ।।११५८॥

अनिच्चा वत संखारा—प—॥११५९॥ मुख्मं पटिविज्झन्ति वालग्गमुसुना यथा, ये पञ्च खन्धे पस्सन्ति परतो न च अत्तनो ॥११६०॥ ये च परमत्ति संखारे परतो न च अत्तनो. पञ्चब्याधिसु निपुणं वालग्गं उसुना यथा ॥११६१॥ सत्तिया विय ओमट्ठो . . . (---३९, ४०,) ॥११६२-११६३॥ चोदितो भावितलेन सरीरन्तिमधारिना मिगारमात् पासादं पादझगुट्ठेन कम्पयि ॥११६४॥ न यिदं सिथिलमारब्भ न इद अप्पेन धामसा निब्बानमधिगन्तब्ब सब्बगन्थ पमोचन ॥११६५॥ अयञ्च दहरो भिक्ल, अयमुत्तमपोरिसो । धारेति अन्तिमं देहं जेत्वा मारं सवाहनं ॥११६६॥ विवरमनुपतन्ति विज्जुता वेभारम्स च पण्डवस्स च । नग विवरगतो च झायति पुत्तो अप्पटिमस्स नादिनो ॥११६७॥ उपसन्तो उपरतो पन्तसेनासनो मनि । दायादो बुद्धसेट्रस्स ब्रह्मना अभिवन्दितो ॥११६८॥ उपसन्तं उपरतं पन्तसेनासनं मुनि । दायाद बुद्धसेद्वस्स वन्द ब्राह्मण कस्सप ॥११६९॥ यो च जातिसत गच्छे सब्बा ब्राह्मणजानियो। मोत्तियो वेदसम्पन्नो मनुस्सेसु पुनप्पुन ॥११७०॥ अज्झायको पि चे अस्स तिण्णं वेदान पारग् । एतस्स वन्दानायेकं कल नम्बति मोळीम ॥११७१॥ यो सो अट्ठ विमोक्खानि पूरे भत्त अपस्मिय । अनुलोम पटिलोमं, ततो पिण्डाय गच्छति ॥११७२॥ तादिस भिक्तु माहरि, मात्तान खणि ब्राह्मण । अभिप्पसादेहि मन अरहन्तम्हि तादिने । लिप्पं पञ्जलिको वन्द मा ते विजिट मत्थकं ॥११७३॥ न सो परसति सद्धमं मंसारेन पूरक्खतो । अचङकनं जिम्हपयं कुमग्गमनुधावति ॥११७४॥ कामी व माळुहसल्लितो संखारे अधिमच्छितो । पगाळ्हो लाभसक्कारे तुच्छो गच्छति पोड्रिलो ॥११७५॥

इमञ्च पस्स आयन्तं सारिपुत्तं सुदस्सं । विमुत्तं उभतोभागे अज्झत्तं सुसमाहित ॥११७६॥ विसल्लं खीणसंयोगं ते विज्जं मच्बुहायिनं । दक्खिणेय्यं मनुस्सानं पुञ्जाक्षेत्रमनुत्तर ॥११७७॥ एते सम्बहुला देवा इद्धिमन्तो यसस्मिनो । दस देवसहस्सानि सब्बे ब्रह्मपुरोहिता । मोग्गन्लानं नमस्सन्ता तिट्ठन्ती पञ्जलीकताः ॥११७८॥ नमो ते पुरिसाजञ्जा, नमो ते पुरिमुत्तम । यस्स ते आसवा खीाण, दक्क्विणेय्यो 'सि मारिम ॥११७९॥ पूजितो नरदेवेन उपन्नो मरणाभिभ्। पुण्डरीक व तोयेन सखारे नोपलिप्पति ॥११८०॥ यस्से महन्ते सहस्सधा लोको मंबिदितो, स ब्रह्मकणो । वसी इद्धिगुणे चुतूपपाते काले पस्सिन देवता स भिक्ख ॥११८१॥ सारिपुत्तो व पञ्जाय सीलेन उपसमेन च । यो पि पारंगतो भिक्ख एतावपरमो सिया ।।११८२।। कोटिसतसहस्सस्य अत्तभावं खणेन निम्मिने । अह विकुब्बनामु कुमलो वसीधुतो 'म्हि इद्धिया ॥११८३॥ समाधिविज्जावसि पारमीगतो मोगगल्लानगोत्तो असितस्स सासने । घीरो समुच्छिन्दि समाहितिन्द्रियो नागो । यथा पुतिलत व बन्धन ॥११८४॥ परिचिष्णो . . . (---६०४, ६०५) ।।११८५-११८६॥ कीदिसो निरयो आसि यत्थ दुम्मी अपच्चथ । विधुर सावकमासज्ज ककुसन्धञ्च ब्राह्मणं, ११८७॥ मतमासि अयोसङक् मध्वे पच्चत्तवेदना ईदिमो निरयो आसि यत्य दुस्सी अपच्चथ विधुरं सावकमामज्ज कक्सन्धञ्च ब्राह्मण ॥११८८॥ यो एतमभिजानानि भिक्क बुद्धस्य सावको, तादिमं भिक्खुमासज्ज कण्ह दुक्ख निगच्छिस ॥११८९॥ मज्झे सागरस्मि तिद्वन्ति विमाना कप्पट्रायिनो वेळुरियवण्णा रुचिरा अञ्चिमन्तो पभस्सरा अच्छरा तत्थ नच्चन्ति पुथु नानत्तविष्णयो, ॥११९०॥ यो एतमभि--प--कण्ह दुक्ख निगच्छसि ।।११९१।।

यो वे बुद्धेन चौदितो भिक्ख संघरस पेक्खतो मिगारमातु पासादं पादङगुट्ठेन कम्पयि ॥११९२॥ यो एतमभि ...।।११९३।। यो वेजयन्तपासादं पादङगुट्ठेन कम्पयि इडिवलेनुपत्थडो सवेञोसि च देवता ॥११९४॥ यो एतमभि॰ ॥११९५॥ यो वेजयन्त पासाढे सूखं सो परिपूच्छति. अपि आवुसो जानासि तण्हक्खयविमृत्तियो; ---तस्स सक्को वियाकासि पञ्ह पुट्ठो यथातथ ।।११९६।। यो एतमभि०।।११९७॥ यो ब्रह्मानं परिपुच्छति सुधम्माय अभिनोसभ अज्जापि ते आवुसी सा दिद्रि या ते दिद्रि पूरे अह, पस्ससि वीति वत्तन्त ब्रह्मलोके पभस्सर, ॥११९८॥ तस्म ब्रह्मा वियाकामि पञ्हं पुर्ठो यथातथं न मे मारिस सदिड्डिया मे दिद्वि पूरे अह, ॥११९९॥ पस्सामि वीतिवत्तन्त ब्रह्मलोके पभस्सर; सी'हमज्ज कथ वज्जं. अह निच्चो 'म्हि सामतो, --१२००॥ यो एतमभिर ।।१२०१॥ यो महानेरुनो कूट विमोक्लेन उपस्सिय, वनं पुब्बविदाहान ये च भूमिसयारना,---१२०२॥ यो एतमभि०. . ।।१२०३॥ नं वे अग्गि चेतयति अह बाल दहामीति, बालो च जलितमांग आमज्ज नं पडयुह्रीत, गा१२०४॥ एवमेव तुव मार आसज्ज नं तथागत सय दिहस्समत्तानं बालो अग्गि व सम्फर्म ॥१२०५॥ अपूञ्ज फसवी मारो आसज्ज नं तथागं; कि नुमञ्ज्ञासि पापि म न मे पापं विपच्चित ॥१२०६॥ करतो ते मिय्यते पाप चिररनाय अन्तक, मार निब्बन्द बुद्धम्हा, आस मा कासि भिक्यव्सु ॥१२०७॥ इति मारं अतज्जेसि भिक्ल भेसकळावने, ततो सो दूम्मनो यक्त्लो तथेव अन्तरधायतीति ॥१२०८॥ इत्य मूदं आयस्मा महामोग्गल्लानो थेरो गाथायो अभासित्थीति

उद्दानं भवतिः

सट्टिकम्हि निपातम्हि मोग्गलानो बहिद्धिको एको 'व थेरो, गाथायो अट्टमट्टि भवन्ति ना 'ति

महानिपातो

निक्खन्तं बत मं सन्तं अगारस्मा अनगारियं वितक्का उपधावन्ति पगब्भा कण्हली इमे: ॥१२०९॥ उग्गपुत्ता महिस्सासा सिक्खिता दङ्हधम्मिनो समन्ता परिकिरेय्युं सपस्स अपलायिनं ।।१२१०।। सचे पि एत्तका भिय्यो आगमिस्मन्ति इत्थियो, नेव म ब्याधियम्सन्ति धम्मे स्वाम्ह पतिद्वितो ॥१२११॥ स किहि मे सुतं एतं बुद्धस्मादिच्च बन्धुनो निब्बानगमन मग्ग, तत्थ मे निरतो मनो ॥१२१२॥ एवमेवं विहरन्त पापिम उपगच्छसि, तथा मच्च करिस्सामिः न मे मग्गं उदिक्काम ॥१२१३॥ अरित रित च पहाय सब्बसो गेहसितञ्च वितक्क वनथं न करेय्य कृहिञ्चि, निब्बनथा अवनथो स हि भिक्ख ॥१२१४॥ यमिध पथविञ्च विहास रूपगत जगतोगध किञ्चि, परिजिय्यति सब्बमनिच्च एवं समेच्च चरन्ति मुत्तन्ता ॥१२१५॥ उपधीसु जना गधिनासे दिट्ट मुते पटिघे च मुते च, एत्य विनोदय छन्दमनेजो, यो हेत्य न लिप्पति म्नि तमाह ।।१२१६।। अटु सद्वि सिका सवितनका पुथुज्जनताय अधम्मनिविद्वा, न च वग्गगतिस्स कुहिङ्चि, नु पन पदुम्लगाही स भिक्कु ॥१२१ ॥। दब्बो चिररत्तं समाहितो अकुहको निपको अपिहालु सन्तं पदभञ्ञाहगमा मुनि, पटिच्च परिनिब्बुनो कह्विति कालं ॥१२१८॥ मानं पजहस्यु गोतम मानपथञ्च जहस्यु असेग; मानपथं हि समुच्छितो विप्पटिसारी हुत्वा चिररतं ॥१२१९॥ मक्खेन मनिखता पजा मानहता निरयं पतन्ति, सोचन्ति जना चिररत्तं मानहता निरयं उपपन्ना ॥१२२०॥

न हि सोचित भिक्ख कदाचि मग्गजिनो सम्मा पटिपन्नो, कित्तिञ्च सुलञ्चानुभोति, भम्मदसो'ति तमाहु तथतं ।।१२२१॥ तस्मा अखिलो इधममानवा निवरणानि पहाय विसुद्धो मानञ्च पहाय असेसं विज्जायन्तकरो समितावी ॥१२२२॥ कमरागेन डय्हामि. चित्त मे परिडयहति, साधु निब्बापनं बूहि अनुकम्पाय गोतम ॥१२२३॥ सञ्जाय विपरियेसा चित्तन्ते परिडय्हति; निमित्तं परिवज्जेहि सुभं रागूप संहितं ॥१२२४॥ असुभाय चित्तं भावेहि एकरगं सुसमाहितं, सतिकायगता त्यत्यु निब्बिदा बहुली भव ॥१२२५॥ अनिमित्तञ्च भावेहि, मानानुसयमुञ्जह, ततो मानाभिसमया उपसन्तो चरिस्ससि ॥१२२६॥ तमेव वाच भासेय्य, यायत्थान न तापये परे चन विहिसेय्य, सावे वाचा सुभासिता ॥१२२७॥ पियवाचमेव भासेय्य या वाचा पटिनन्दिता यं अनादाय पापानि परेस भासते पियं ॥१२२८॥ सच्चं वे अमता वाचा एसन धम्मो सनन्तनो; सच्चे अत्ये च धम्मे च आहु सन्तो पतिद्विता ॥१२२९॥ यं बुढ़ो भासती वाच खेमं निब्बानपत्तिया दुक्ष्वस्सन्तिकिरियाय, स वे वाचानमुत्तमा ॥१२३०॥ गम्भीरपञ्जो मेधावी मग्गामग्गस्स कोविदो सारिपुत्तो महापञ्जो धम देसेति भिक्ल्नं ॥१२३१॥ संग्वितेन पि देमेति वित्थारेन पि भासति, सीलिकायेव निग्घोसो पटिभान उदीव्यति ॥१२३२॥ तस्स तं देसयन्तस्स सुणन्ता मध्रं गिर सरेन राजनीयेन सवनीयेन वग्गुना उदग्गचित्ता मृदिता सोतं ओधेन्ति भिक्खवो ॥१२३३॥ अञ्ज पन्नरसे विसुद्धिया भिक्खू पञ्चसता समागता संयोजन बन्ध निच्छदा अनीघा लीणपुनस्भवा इसी ॥१२३४॥ चक्कवसी यथा राजा अमच्च परिवारितो समन्ता अनुपरियेति सागरन्तं महिं इमं ॥१२३५॥

एवं विजितसगामं सत्थवाहं अनुत्तरं सावका पथिरुपासन्ति ते विज्जा मच्चु हायिनो ॥१२३६॥ सब्बे भगवतो पुत्तो, पलापो एत्य न विज्जति; तण्हा सल्लस्स हन्तारं वन्दे आदिच्चबन्धुनं ॥१२३७॥ परोसहस्मं भिक्खनं सुगतं पयिरुपासित देसेन्त विरजं धम्मं निब्बानं अवुतोभयं ॥१२३८॥ सुणन्ति धम्मं विपुलं सम्मासम्बुद्धदेसितं; सोभति वत सम्बुद्धो भिनखु संघपुरन्खतो ॥१२३९॥ नागनामो'सि भगवा, इसीनं इसि सत्तमो, महामेघो व हुत्वान सावके अभिवस्सिस ।।१२४०।। दिवा विहारा निक्खमा सत्युदस्सनकम्यता सावको ते महाबीर पादे बन्दति बद्धिगसो ॥१२४१॥ उम्मग्गपथं मारस्स अभिभुय्य चरति पभिज्ज खिलानि, तं पस्सथ बन्धन पमुञ्चकरं असितं व भागसो पविभज्ज ॥१२४२॥ ओघस्सिहि नित्यरणत्थं अनेक विहितं मग्गं अक्खासि, तस्मिञ्च अमते अक्बाते धम्मदसाठिता असंहीरा ॥१२४३॥ पुण्जोतकरो अतिविज्या सब्बद्दि तान मतिककममदा, ञात्वा च सच्छिकत्वा च अग्गं सो देसिय दसद्धान ॥१२४४॥ एवं सुदेसिते धम्मे को पमादो विजानतं धम्मं, तस्माहि तस्स भगवतो सासने अप्पमत्तो सदा नमस्स मनुसिक्खे ।।१२४५॥ बुढानुबुढ़ी यो थेरी कोण्डञ्जो तिब्बनिक्लमो, लाभी सुख विहारानं विवेकानं अभिण्हसो ॥१२८६॥ यं सावकेन पत्तब्वं सत्युसासनकारिना, सब्बस्स तं अनुप्पनं अप्पमत्तस्स सिक्लतो ॥१२४७॥ महानुभावो ते विज्जो चेतो परियकोविदो कोण्डञ्जो बुद्धदायादो पादे वन्दति सत्धुनो ॥१२४८॥ नागस्स पस्से आसीनं मुनि दुक्खस्स पारग्ं सावका परियुपासन्ति ते विज्जा मच्चुहायिनो ॥१२४९॥ चेतसा अनुपरियेति मोग्गलानो महिद्धिको चित्तं नेसं समन्वेमं विष्यमुत्तं निरूपिष ॥१२५०॥

एवं सन्बद्धगसम्पन्नं मृति दुक्खस्स पारगुं अनेकारसम्पन्नं पयिरूपासन्ति गोतमं ॥१२५१॥ चन्दो यथा विगतवलाहके नभे विरोचति, वीतमलो व भानुमा, एवम्पि अझगीरसत्वं महामुनि, अतिरोचिस यससा सब्बलोकं ॥१२५२॥ कावेय्यमत्ता विचरिम्ह पुब्बे गामा गामं पुरा पुरं, अथह् सामि सम्बुद्धं सब्ब धम्मान पारगु ॥१२५३॥ सो मे धम्म मदेदेसि मुनि दुक्लस्स पारगुं; धम्मं सुत्वा पसीदिम्ह, सद्धा नो उदपञ्जथ ॥१२५४॥ तस्साहं वचनं सुन्वा खन्धे आयतनानि च धारुयो च विदित्वा न पन्बींज अनगारियं ॥१२५५॥ बहूनं वत अत्थाय उप्पज्जन्ति नथागता इत्थीनं पुरिसानञ्च ये ते सासनकारका ।।१२५६॥ तेस खो वत अत्थाय बोधि अज्झगमा मुनि . भिक्खूनं भिक्खुनीनञ्च ये नियामगतंदसा ॥१२५७॥ सुदीसता चक्लुमता बुढेनिदच्चबन्धुना चत्तारि अरियसच्चानि अनुकम्पाय पाणिनं ॥१२५८॥ दुक्लं दुक्लममुप्पादं दुक्लस्स च अतिवकमं अरियट्व द्धिगकं मग्गं दुक्खूपसम गामिनं ॥१२५९॥ एवमेने तथा वृत्ता, दिट्ठा मेते यथा तथा; सदत्थो में अनुष्पत्तो, कतं बुद्धस्स सासनं ॥१२६०॥ स्वागतं वत मे आसि मम बुद्धस्स सन्तिके; सम्बिभत्तेसु धम्मेसु य सेट्टं तदुपार्गाम ॥१२६१॥ अभिज्ञापार मिष्पत्तो सोतधार विसोधितो ते विज्जो इद्धिप्यत्तो मिह चेतो परियकोविदो ॥१२६२॥ पुच्छामि सत्थारमनो मपञ्ञां दिट्ठेव भ्रम्मे यो विचिकिच्छानं छेत्वा. अगाळवे कालमकासि भिक्षु जाती यसस्सी अभिनिब्बुतत्तो ॥१२६३॥

निग्रोधअप्पो इति तस्स नामं तया कतं भगवा ब्रह्मणस्स. सोतं नमस्सं अचरि मृत्य पेक्लो आरद्धविरियो दळ्हघम्मदस्सी ॥१२६४॥ तं सावकं सक्कमयम्पि सब्बे अञ्ञातुनिच्छाम समन्त चक्खुः समबद्भिता नो सबनाय स्रोत, तुवं न सत्था त्वमनृत्तरो'सि ॥१२६५॥ खिन्देव नो विचिकिच्छ, बृहि मे तं, परिनिब्ब्त वेदय भूरिपञ्जा मज्झेव नो भास समन्तचक्खु सक्को व देवान सहस्सनुत्तो ॥१२६६॥ ये केचि गन्धा इध मोहमग्गा अञ्जाणपक्या विचिकिच्छद्राना, तथागतं पत्वा न ते भवन्ति, चक्खम्हि एतं परम नरानं ॥१२६७॥ न चेहि ञातू पूरिसो किलेसे वातो यथा अब्भघनं विहाने, तमो वस्स निब्बतो सब्बलोके, जोतिमन्तो पि न पभासेय्य ॥१२६८॥ धौरा च पञ्जोतकरा भवन्ति, तं तं अह धीर तथेव बञ्जो, विपस्सिनं जानम्पापगिमम्ह, परिसाय नो अविरोहि कप्पं ॥१२६९॥ खिप्पं किरं एरय वग्गु वग्गुं हसो व पग्गह सनिकं निकुजं

विन्दुस्सेरेन सुविकप्पितेन, सब्बेव ते
उज्जुगता सुणोम ॥१२७०॥
पहीनजातिमरणं असेसं निग्गय्ह धोनं
वदेस्सामि धम्मं,
न कामकारो हि पुथुज्जनानं, सखेय्यकारो'वव
तपागतानं ॥१२७१॥

सम्पन्न वैय्याकरणं तवेद समुञ्जापञ्जास्स समुग्गहीतं ;

अयमञ्जलि पच्छिमो सुप्पणामितो, मा मोहयि जानमनोमपञ्जा ॥१२७२॥ परोवरं अरियधम्मं विदित्वा मा मोहयि जानमनोमविरिय, वारि यथा घम्मनिघम्मतत्तो वाचाभिकझखामि, सुत पवस्स ॥१२७३॥ यदित्थयं ब्रह्मचरियं अचारि कप्पायनो किच्चि'स्स तं अमोधं; निब्बायि सो आहु सोपादिसेसो; यथा विमुत्तो अहु तं सुणोम ॥१२७४॥ अच्छोच्छि तण्हं इघ माम रूपे'ति भगवा, तण्हाय सोत दीघरनानुसयितं अतारि जाति मरणं असेसं इच्चब्रवि भगवा पञ्चसेट्टो 11१२७५॥ एस सुत्वा पमीदामि वयो ते इसिसत्तम, अमोघं किर मे पुटुंन मं वञ्चेसि ब्राह्मणो ॥१२७६॥ यथावादी तथाकारी अह बुद्धस्स सावको, अच्छेच्छि मच्चुनो जालं तथ मायाविनो-दळ्हं ।।१२७७॥ अद्दस भगवा आदि उपादानस्स किप्पयो, अच्चगा वत कप्पायनो मच्चुधेय्यं सुदुत्तरं ॥१२७८॥ तं देवदेवं वन्दामिपुत्तं ते द्विपदुत्तम अनुजात महावीर नागं नागस्स ओरसन्ति ॥१२७९॥ इत्थ सूदं आयस्मा वद्भगीसोथेरो गायायो अभासित्था'ति, महानिपातो निद्रतिो सत्तर्तिम्हं निपताम्हि वद्धगीसो पटिभाणवा एको 'वत्थेरो' नत्थञ्जो, गाथायो एकसत्तति । सहस्सं होन्ति ता गाथ। तीणि सद्दि सर्तानि च थेरा च द्वे सता सिट्ट चत्तारो च पकामिता। सीहनादं नदित्वान बुद्धपूत्ता अनासवा खेमन्त पापुणित्वान अग्गिक्खन्धा व निज्बेता'ति।

निद्विता थेरगाथायो